بسم اللہ الرحمن الرحیم

یاایھا الذین آمنوا ان تنصروا اللہ ینصرکم ویثبت اقدامکم (سورۃ محمد ۷)

मग़्रिबी राजस्थान की इल्मी,दीनी और मरकज़ी दर्सगाह

जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ का तआ़रुफ़े मअ़रूफ़ बिही

# आईन–ए–जामिआ़ सिद्दीक़िया

हस्बे इरशााद

क़ाइदे अहले सुन्नत बानिए जामिआ़ सिद्दीक़िया हज़रत अल्लामा

अल्हाज पीर सय्यद गुलाम हुसैन शाह जीलानी

दामत बरकातोहुमुल कुद्सिया

मुरत्तिब

हज़रत अल्लामा अल्हाज मुफ़्ती अ़ब्दुर्रहीम अकबरी

ख़ादिम तदरीस व इफ़्ता जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़

ज़िला बाड़मेर(राजस्थान)

नाशिर

मज्लिसे सिद्दीक़ी जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ तहसील सेड़वा

ज़िला बाड़मेर



जुमला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

सिलसिलए इशाअ़त नम्ब र3

नाम किताब :– आईन–ए–जामिआ़ सिद्दीक़िया

हस्बे इरशाादः–क़ाइदे अहले सुन्नत बानिए जामिआ़ सिद्दीक़िया हज़रत अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद गुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल कुद्सिया

मुरत्तिब :– हज़रत अल्लामा अल्हाज मुफ़्ती अ़ब्दुर्रहीम अकबरी

कम्पोज़िंग :– मौलाना मुहम्मद शफ़ीकुल हक़ रज़वी

मो0 :– 9997662550

नाशिरः–मज्लिसे सिद्दीक़ी जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ तहसील

सेड़वा

ज़िला बाड़मेर

ज़ेरे एहेतमाम :– बिस्ट ऑफ़िस्ट, गुलामाने जीलानी जोधपुर

dufssujasharif@gmail.com

## अर्ज़े हाल

हम परवरिश लौह़ व क़लम करते रहेंगे जो दिल पे गुज़रती है रक़म करते रहेंगे। इंसान के आमाल का दारोमदार नियतों पर पर है एक ही अमल अच्छी नियत से अच्छा और वही बरी नियत से बुरा बन जाता है मौला तआला की अ़ता कर्दा नेअ्मतों को बयान करना और दूसरों को बा ख़बर करना इस नियत से हो कि लोग इस नेअ्मत बहरा वर और फ़ैज़याब हो सकें,इस नियत से तहदीस नेअ्मत,बाइस ख़ैर व बरकत बनती है और उस के बर अ़क्स अगर रिया और समआ़ की नियत से हो तो वही बयान नेअ्मत ज़ह़मत और गुनाह बन जाता है फ़रमान नबवी انا سيد ولد آدم ولا فخر और सय्यदिना यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का फ़रमान, انى حفيظ عليم इसी क़बील से था और वह हमारे लिए मशअ़ले राह है। आप के दिल में किसी की मोहब्बत है तो मज़हबे इस्लाम का हुक्म है कि आप अपनी मोहब्बत का उन के आगे इज़हार करें ताकि उसे भी आप से मोहब्बत पैछा हो जाए,बल्कि अह़ादीस करीमा ने यहाँ तक रहनुमाई फ़रमाई है कि अगर किसी से मोहब्बत का रिश्ता क़ाइम करना चाहते हैं तो इस का त़रीक़ा यह है कि उसे तोह़फ़ा और हदिया पेश करें उस की दअ्वत करें,उस के यहाँ आया जाया करें,उस से मोहब्बत बढ़ती है और अगर इस मोहब्बत में रख़्ना डालने और रिश्ता मोहब्बत को ख़त्म करने की जिद्दो जिहद शुरू हो जाये तो बत़ौर तह़दीस नेअ्मत,



मौलाए करीम के इन्आ़मात व करामात को बयान भी करना चाहिए ताकि बे ख़बर अंजान ह़ज़रात क़रीब हो कर मुस्तफ़ीज़ हो सकें।

स़हाबए किराम,ताबेईन,तब्ऐ़ ताबेईन,अइम्मए मुजतहदीन और जुमला अस्लाफ़ ने हर दौर में मज़हब इस्लाम की तरवीज व इशाअ़त की ख़ातिर अह़क़ाक़े ह़क़ और इब्त़ाले बात़िल का अ़मल स़ालेह़ तर्क नहीं फ़रमाया,जहाँ गए जिस से मिले दीन पाक की और दीन दारों की भलाइयों और ख़ुबियों को सराहते और लोगों को उस के ज़रीआ़ से दीनदार और नेको कार बताने रहे हैं,स़ालेह़ीन के ज़िक्र और उन की ह़यात व ख़िदमात के तज़करा को ह़दीस पाक ने बाइ़से रह़मत क़रार दिया, मुह़द्दिसीन किराम ने फ़न्ने अस्माउर्रिजाल में सैकड़ों नहीं बल्कि लाखों दीन के ख़ुद्दाम की सीरतें जमा फ़रमाऐं उन की ज़िन्दगी के नशीब व फ़राज़, इ़ल्मी व अ़मली और इस्लाह़ी व तब्लीग़ी ख़िदमात पर किताबें तस्नीफ़ कीं फिर उन किताबों के मोअ़्तमद व मुस्तनद होने को भी बयान किया ताकि उम्मत मुस्लिमा उन किताबों और उन बुज़ुर्गों से फ़ैज़याब हो सके और उन से रिश्ता मोहब्बत क़ाइम कर के अपने लिए ज़रीअ़ए निजात ढुंड सके।

आज के दौर में मदारिस व मकातिब और दीनी इदारों का ख़िदमत दीन में बहुत बड़ा रोल है इसलिए उन से इस्तिफ़ादा के लिए उन्हें रोशनास कराना बहुत ज़रूरी है किसी भी नये फ़िर्क़ा ने जब भी जनम लिया उस ने लोगों को सवादे आ़ज़म से जुदा करने के लिए दीनी मराकज़ को

निशाना बनाया और उन्हें बद नाम कर ने की मुकम्मल कोशिश की है इस लिए अहले ह़क़ ने ऐसे में इन मराकिज़ की अ़ज़मत का लोगों के दिलों में सिक्का बठाने और नफ़रतों की गर्द व गुब्बार को दूर करने के लिए हर मुम्किन कोशिश की और लोगों को अह़क़ाके ह़क़ व अबत़ाल बाति़ल के ज़रीऐ अस़ल ह़क़ीक़त से आश्ना किया इसी बिना पर हुज़ूर बानी जामिआ़ क़ायदे अहले सुन्नत पीर त़रीक़त रहबरे शरीअ़त, मुजाहिदे दीन व मिल्लत नाबग़ए अ़स्र ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मद्दज़िल्लुहुल आ़ली की हमेशा तमन्ना रही कि इदारा आ़लिया जामिआ़ सि़द्दीक़िया की ख़ि़दमात को आशकारा किया जाये ताकि जा बजा दारुलउ़लूम की ख़ि़दमात को ज़बानी त़ौर पर बयान करने की ज़रूरत न पड़े,और अहले मोहब्बत व अ़क़ीदत को ख़ि़दमत की तफ़स़ील मालूम हो जाए बाज़ उ़लमा व मशाइख़ ने भी ह़ज़रत से बारहा तक़ाज़ा किया कि हुज़ूर आप अपने इदारा की तअ़लीमी व तअ़मीरी ख़ि़दमात ह़ीत़ा तहरीर में लायें ताकि हम लोग लोगों को जामिआ़ से मुताअ़रफ़ करा सकें,यह वह अस्बाब व अ़लल थे जिन की वजह से यह तआ़रुफ़ नामा बनाम''आईनए जामिआ़ सि़द्दीक़िया'' मुरत्तब किया गया मौला तआ़ला अपने प्यारे मह़बूब,दानाए ग़ुयूब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े और तुफ़ैल इस ख़ि़दमत को भी जामिआ़ की ख़ि़दमात के साथ अपनी बारगाह में क़बूल व मक़बूल फ़रमाए और अहले सुन्नत व जमाअ़त को अपने मराकज़ से जुड़े रहने



और उन की दिल व जान से आब्यारी करने की नेक तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। امين ثم آمين بجاه حبيبه الكريم عليه الصلوة والتسليم۔

**हदिया तशक्कुर :**

बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया,अराकीन,मिम्बरान,मुदर्रिसीन मुआ़वेनीन और शरीक कार ह़ज़रात,शुक्र गुज़ार हैं इन तमाम मशाइख़ेऐ़ज़ाम,उ़लमाए किराम,सादात ज़विलऐह़तराम, मुख़य्येरीने क़ौम व मिल्लत और सरबराहाने अहले सुन्नत व जमाअ़त के,जिन की दुआ़वों,मेहरबानियों,दामे,दरमे,क़दमे,सुख़्ने ख़ि़दमतों और हौस़ला अफ़ज़ाइयों से एक लक़ व दक़,बे आब व ग्याह और कोर्दा इ़लाक़ा में बोया गया यह दीनी,इ़ल्मी और रूह़ानी पोदा आज तनावर और बारआवर शजर बन कर हर ऐअ़्तबार से अहले सुन्नत व जमाअ़त की ज़रूरतों को दीगर मराकज़ अहले सुन्नत के दोश बदोश,पुरा कर रहा है ख़ुस़ूस़न

1.ख़ा़न्वादए आ़लिया मुलाकातयार शरीफ़ और ख़ा़न्वादए आ़लिया लूनी शरीफ़ के,जो इस पाक इदारा के रूह़ रवाँ हैं बल्कि दर अस़ल इस इदारा की जड़ें,उन्हें ख़ा़नवादों से लगीं और मज़बूत़ हुऐं।

2.ख़ा़न्दाने आ़ला ह़ज़रत और उन के मुर्शिदाने गिरामी ख़ा़न्दवादए बरकातिया के,जिन के इदारा,मज़हरे इस्लाम के परवर्दा अ़ल्लामा अल्हाज अश्शाह अ़ब्दुल ह़क़ सिंधी डेम्बाई शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ ने अपने फ़ैज़ान से हुज़ूर बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली को

अपने फ़ैज़ान इ़ल्म से आरास्ता किया।

3.ख़ान्दान अशरफ़िया किछौछा शरीफ़ के जिन की चार शख़्सियात(हुज़ूर अशरफ़ुलउ़लमा अल्लामा अल्हाज सय्यद हामिद अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी अ़लैहिर्रहमा,हुज़ूर शैख़ुलइस्लाम अ़ल्लामा अल्हाज सय्यद मदनी मियाँ मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली,क़ाइदे मिल्लत ह़ज़रत अ़ल्लामा अल्हाज सय्यद महमूद अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली और शैख़ुलउ़लमा ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज सय्यद कलीम अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली के एलावा हुज़ूज ग़ाज़ी मिल्लत व क़ादरी मियाँ व सलमान मियाँ व नूरानी मियाँ व हसन मियाँ अ़लीम मियाँ दामत बरकातुहुमुल क़ुद्सिया का ख़ुसूसी करम बानिए जामिआ़ हमेशाा रहा और है।

4.आफ़ताब कछ अ़ल्लामा अल्हाज मुफ़्ती सय्यद अहमद शाह बुख़ारी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली और माहताब बनास ह़ज़रत अल्लामा सय्यद असग़र अ़ली उ़र्फ़ भाई जान बावा अ़लैहिर्रहमा की बारगाह में नज़राना अ़क़ीदत कि अव्वलुज़्ज़िक्र की तवज्जोहात और मौक़ा ब मौक़ा दुआ़वों ने इस जामिआ़ को इस ह़द तक पहुँचाया और आख़िरुज़्ज़िक्र करने इब्तेदाई मुश्किलात में करमे ख़ास़ बर क़रार रखा और सालाना क़ज़ा किया न किसी मरह़ला पे उसे फ़रामोश किया,आज भी इन दोनों बुज़ुर्गों की करम नवाज़ियाँ तो बर क़रार मगर उन के अहले ख़ाना की भी नज़र इदारा के शामिले ह़ाल है।

5.हुज़ूर ख़्वाजा नवाज़ अ़लैहिर्रहमा के दियार से अ़ल्लामा सय्यद मेहदी मियाँ मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली,ह़ज़रत सय्यद



मस़ूर मियाँ,मरहूम मौलाना अल्हाज जान मुहम्मद नक़्शबन्दी,ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुलग़फ़ूर नक़्शबन्दी वग़ैरा और बासनी से मरहूम ह़ज़रत अल्लामा ज़हूर अहमद स़ाह़ब,मुफ़्ती वली मुहम्मद,मौलाना अबूबक्र स़ाह़ब,ह़ाफ़िज़ुल्लाह बख़्श,ह़ाफ़िज़ अकबर स़ाह़ब,ह़ाफ़िज़ सई़द अशरफ़ी,शीरानी आबाद से मौलाना मुहम्मद ह़फ़ीन,मौलाना प्यार मुहम्मद,मौलाना याकूब, गोटन से क़ारी आफ़ताब और मरहूम हाजी छोटो ख़ाँ और उन के स़ाह़बज़ागान,जोधपुर से हुज़ूर अश्फ़ाकुल उ़लमा ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज मुफ़्ती अश्फ़ाक़ हुसैन नईमी अ़लैहिर्रहमा मुफ़्ती आ़ज़म राजस्थान व जुमला मुदर्रिसीन दारुलउ़लूम इस्ह़ाक़िया,सुजान गढ़ से ह़ज़रत पीर सय्यद ज़हूर अ़ली स़ाहब व सेठ हाजी लअ़्ल मुहम्मद और भीलवाड़ा से ह़ज़रत मौलाना ह़फ़ीज़ुर्रहमान,मकराना से मौलाना अ़लीमुद्दीन,हाजी मुहम्मद ह़यात व हाजी कलामुद्दीन और पाली,ख़ैरालू,जालवर व बालूत्रा व थर व नय्यड़,कच्छ गुजरात के सादात व उ़लमा और मराकिज़े अहले सुन्नत के सरबराहाने,जिन्होंने हर मोड़ पर इदारा शरीफ़ को सहारा दिया उस को अपना इदारा समझा।

6.यूपी,बिहार,राजस्थान,गुजरात महारष्ट्र और ऐम पी के जुमला मराकिज़े अहले सुन्नत जिन से जामिआ़ का तअ़ल्लुक़ है मसलन जामिआ़ अशरफ़िया मुबारकपुर,दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊँ शरीफ़,जामिआ़ नईमिया मुरादाबाद, जामिआ़ इस्लामिया रौनाही,जमदा शाह,दारुल उ़लूम मुह़म्मदिया मुम्बई,फ़ैज़ुर्रहमान जोनागडा,फ़ैज़ाने मौला अ़ली धूराजी,कच्छ में दारुलउ़लूम फ़ैज़े अकबरी लूनी शरीफ़, गुलशने मुहम्मदिया

हर मौक़ा पे अपने ख़ज़ाने खोल रखे और ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया जिस की दबौलत पे इदारा शरीफ़ इस इलाक़ में अहले सुन्नत की एक शान और आं बन गया है। इस मिसाली इदारा के परवान चढ़ाने में बेहम्देही तआ़ला न सिर्फ़ दौलत मन्दों बल्कि क़ौमे मुस्लिम के लीडरों सर बरआर्वदा लोगों ने और उ़लमा व मशाइख़ ने अपने अपने तौर पे हिस्सा लिया बल्कि वत़न अ़ज़ीज़ हिन्दुस्तान के हर धरम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले बरादराने वत़न ने तअ़लीम के फ़रोग़ के लिए आगे बढ़ कर साथ दिया और मशवरा देने और हौसला बढ़ाने में उन्होंने कभी बुख़्ल नहीं किया जैसा कि आप ने उन के लिखे मुआ़इनों में मुला हिज़ा किया यही वजह है कि यह इदारा अ़स्री और दीनी दोनों तअ़लीम का संगम है। यानी 12 वी तक स्कूल भी साथ है,अहले इदारा सब के शुक्र गुज़ार और दुआ़ गो हैं और रहेंगे। इन्शाअल्लाह तआ़ला।

10.इस दारुलउ़लूम को सियासत से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है यह इदारा हमारे हिन्दुस्तान की तमाम सियासी पार्टियों के लिए दुआ़ गो है कि वह वत़ने अ़ज़ीज़ को अ़दल व इंसाफ़ से ऊपर लायें यही वजह है कि हर पार्टी ने अपने दौर में उस का ख़ूब साथ दिया हम उन के भी ख़ूब ख़ूब शुक्र गुज़ार हैं।

11.मौला तआ़ला का बहुत बड़ा शुक्र है कि हर क़िस्म का इख़्तेलाफ़ से ऊपर उठ कर इस इदारा शरीफ़ ने दीन और क़ौम व मिल्लत की ख़िदमत की जिस की वजह से सारे हज़रात उस के लिए ख़ैर ख़्वाह रहे और अपना इदारा समझते रहे और समझते हैं अशरफ़ी,रज़वी,क़ादरी,नक़्शबन्दी, सहरवर्दी,



सामख़ियाली,फ़ैज़ुन्नोअ़मान दियार पुर और रापर व कीरवान्ड के इदारे,सांचौर,पीर की जाल का दारूलउ़लूम फ़ैज़ सरवरी,कानोदर का जामिअ़ा ग़रीब नवाज़, क़न्नौज का जामिअ़ा अहमदिया ककराला का जामिअ़ा सक़लैनिया,बरेली शरीफ़ के चारों इदारों(मज़हरे इस्लाम व मन्ज़रे इस्लाम,जामिअ़ा नूरिया, जामिअ़तुर्रज़ा)के साथ साथ इमाम अहमद रज़ा एकेडमी के शुक्र गुज़ार हैं कि इन मराकिज़ ने इस दूर इफ़्तादा अहले सुन्नत के नक़ीब जामिअ़ा को हर्ज़ जान बनाए रखा।

7.ख़ान्क़ाह क़ादरिया बदायूँ,ख़ान्क़ाह शाह अबुलख़ैर देहली,ख़ान्क़ाह आ़ली जाह सर हिन्द पाक,ख़ान्क़ाह मअ़सूमी रामपुर,ख़ान्क़ाह उस्मानिया और ख़ान्क़ाह हज़रत सूफ़ी अ़ब्दुर्रहमान धोलकाई,ख़ान्क़ाह क़ादरिया साईं बावा धोरा जी,ख़ान्क़ाह अहमद आबाद क़ादरिया सानोर कुंन्डला,ख़ान्क़ाह क़ादरिया बेकानीर,ख़ान्क़ाह अहमदिया जाइस शरीफ़,ख़ान्क़ाह मौसौया हैदराबाद वग़ैरह के शुक्र गुज़ार हैं जिन के गद्दी नशिनों की दुआ़एं काम दे रही हैं।

8.बर्रे स़ग़ीर की इन जुमला ख़ान्क़ाहों और इन के परवर्दा उ़लमा,सुलहा और फ़ुक़रा और बुज़ुर्गों के शुक्र गुज़ार हैं जिन की मेहरबानी वाली नज़र ने जामिअ़ा को वजूद बख़्शा और इस हद तक पहुँचाया मौलाए करीम ता क़ियामत सदा सलामत और बाग़ व बहार रखे।

9.राजस्थान व गुजरात,हमारष्ट्र और मुम्बई के इन जुमला मुख़य्येरीने हमदर्दाने अहले सुन्नत का शुक्रिया जिन्होंने उस्मान ग़नी की सुन्नत को ज़िन्दा करते हुये जामिअ़ा के लिए

चिश्ती,दअ्वते इस्लामी,सभी उस नक़्शबन्दी मुजद्दिदी चश्मए स़ाफ़ी से सैराब होते रहे और हो रहे हैं। मौला तआ़ला अपने प्यारे महबूब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के चारों फ़ैज़ानी दरियावों के फ़ैज़ याफ़्तगान,अहले सुन्नत को एक जिहती नस़ीब करे और मिल कर अहले सुन्नत का काम आगे बढ़ाने की नेक तौफ़ीक़ मरहम्मत फ़रमाए। आमीन बजाहे हबीबेहिल करीम अ़लैहित्तहया वत्तस्लीम।

**बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया(सूज़ा शरीफ़) की मुख़्तस़र स्वानेहः**

नाम :(ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज पीर)सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली

**वल्दियत** : ह़ज़रत पीर सय्यद कुत्बे आ़लम शाह उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा मोलुद लूनी शरीफ़,मदफन सूजा शरीफ़

**सन्ने विलादत** : 1379 हिजरी 1960 ई दर क़रिया लूनी शरीफ़ कच्छ गुजरात इन्डिया।

**तअ्लीम** : अ़स़्री तअ्लीम पाँचवीं तक लूनी शरीफ़ की स्कूल में और दीनी तअ्लीम जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ में और अदीब कामिल इलाहाबाद बोर्ड से।

**बैअ़त व ख़िलाफ़त** :

इमामुलऔलिया,क़दवतुलअस़्फ़िया ग़ौसे ज़माँ,कुत्बे दौरा,स़ाहिब फ़ैज़ उवैसी हमा वक़्त हुज़ूरी सय्यदी व मुरशिदी अश्शाह मुहम्मद इस्हाक़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी उ़र्फ़ पागारा बादशाह मुलाकातियारी अ़लैहिर्रहमा (मः1409 हिजरी)

**हालात व ख़िदमातः**

तीन साल की उ़मर मुबारक में वालिद माजिद का



साया बज़ाहिर सर से उठ चुका था और उन की वस़ियत के मुत़ाबिक़ अ़म्मे मोहतरम ह़ज़रत पीर सय्यद स़ालेह़ मुम्मद शाह और मुरब्बी मुअ़ज़्ज़म ह़ज़रत पीर सय्यद महमूद शाह जीलानी बानिए जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ ने आप की तअ्लीम व तरबियत का बेड़ा उठाया और जद्दे करीमा सय्यदा बस़रा बी बी की तवज्जोहात और उस्ताज़ मोहतरम अल्लामा अश्शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे आ़ज़म राजस्थान (फ़ाज़िले मज़हरे इस्लाम बरेली शरीफ़,शागिर्द ह़ज़रत अल्लामा सरदार अहमद स़ाहब साबिक़ शैख़ुलहदीस जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ की शब व रोज़ की जिद्दो जिहद से 1393 में लूनी शरीफ़ के जामिआ़ अकबरिया से फ़ारिग़ुत्तह़सील हुये और 1409 हिजरी तक मुसलसल 16 साल तक मादर इ़ल्मी जामिआ़ अकबरिया में तदरीसी ख़िदमात देते रहे।

उस्ताज़ मोहतरम ने फिर उन के बाद उन के स़ाहबज़ादे हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुलबाक़ी स़ाहब अकबरी ने उन के बाद 14404 हिजरी से 1409 हिजरी तक मुसलसल छः साल तक आप ने जामिआ़ अकबरिया की ज़ुमाम स़दारत संभाली,उस के बाद अपने वालिद माजिद के मज़ार शरीफ़ से मुत्तस़िल अपने क़ायम कर्दा जामिआ़ सि़द्दीक़िया(1406 हिजरी की ख़िदमत और तहरीक सि़द्दीक़ी के मा तहत चल रही कार रवाइयों की आज तक ख़िदमत व नेग़रानी फ़रमा रहे हैं अदामुल्लाह अ़लैनल फ़ुयूज़ वलबरकात

**तअ्लीमी ख़िदमात** :

दौरे त़ालिबे इल्मी में अपने उस्ताज़ की ज़ेरे नेगरानी

बिना रखी और लूनी शरीफ़ से बाज़ वुजूह की बिना पर मुस्तअ़फ़ी हो कर यहाँ ख़िदमत शुरू की उस वक़्त आप ने निसाबे तअ़लीम,नज़्म व नस्क़ और असातिज़ा के तक़र्रुर में बे मिसाल नमूना पेश फ़रमाया,फिर उन असातिज़ा से फ़ायदा लेने के साथ ख़ुद भी एक दो सबक़, बाज़ औक़ात ज़्यादा अस्बाक़ ख़ुद रखते और पढ़ाते रहे,जिन त़लबा को आप ने लूनी शरीफ़ में या सूजा शरीफ़ में पढ़ाया उन्हें हर मैदान में काम्याब करने की मुकम्मल कोशिश फ़रमाई,चुनाँचेह ह़दीसे पाक के त़ालिब पर सीरत की किताब का मुतालअ़ करना और मुतअ़ल्लिक़ा फ़िक़्ही अबवाब के लिए एक फ़िक़्ह की किताब मुत़ालअ़ में रखवाना और नक़्ल व इम्ला और ख़ुश ख़त़ में नाग़ा न होने देना,इ़बारत व तर्जुमा और मफ़हूमे त़लबा पर छोड़ना,नह़वो स़र्फ़ का एक किताब पहले मुत़ालअ़ करवा कर उन क़वाइ़द का दोबारा इजरा कराना फिर उस के मुत़ाबिक़ सबक़ राह सुलूक के लिए उन की फ़ित़रत को उजागर करना और ज़िक्र व फ़िक्र में उन्हें मशग़ूल करना और नेक लोगों की ख़िदमात और मोहब्बत व स़ोहबत का सबक़ देना,आप ने हमेशा लाज़िम कर रखा है, अस्बाक़ असातिज़ा में अपनी नेगरानी में तक़्सीम करना,जो जिस फ़न का माहिर हो उसे इस फ़न की किताब देना ताकि त़लबा की ह़क़ तल्फ़ी न हो फिर उन्हें पढ़ाने का त़रीक़ा बताते रहना,स़ेग़े लिखवाने,स़र्फ़ पर ज़्यादा तवज्जोह देने की ताकीद करना शामिल हैं।

**तअ़मीरी ख़िदमात :**

लूनी शरीफ़ का दारुलउ़लूम पहले अकबरी मस्जिद में



मुब्तदी त़लबा को पढ़ाते रहे और फ़राग़त के बाद आप की जामिआ़ अकबरिया की तदरीसी व स़दारती ख़िदमात से ज़र्बु मिस्ल हैं। सौलह साला तदरीसी ख़िदमात आप ने अपनी मा तह़ती में काम कर रहे मदर्रिसीन के ज़रीए दारुलउ़लूम के मिआ़र तअ़लीम व तरबियत को ख़ूब बुलन्द फ़रमाया,अपनी स़दारत के दौर में तो सुबह़ तहज्जुद के वक़्त दारुलउ़लूम में तश्रीफ़ लाते और रात के एक बजे जब पूरा मदरसा सो जाता आप घर तश्रीफ़ ले जाते,उस्ताज़ व त़लबा आप के रोअ़ब व दबदबे की वजह से पाबन्दी करने पर मजबूर थे,इस दौर में दारुलउ़लूम का नज़्म व नस्क़ लाइक़े तक़लीद था, दारुलउ़लूम ही के फ़ारेग़ीन व फ़ाज़ेलीन को ठोस बना कर इदारा शरीफ़ को हर त़रह से मुस्तक़िल और ग़ैर मोहताज बनाने की अन्थक कोशिशें फ़रमायें। अपने मुरब्बी मुअ़ज़्ज़म बानिए जामिआ़ अकबरिया और उस्ताज़ मोहतरम शैख़ जामिआ़ की दरबार में मुशीर आ़ला की हैसियत के हामिल रहे,चुनाँचेह क़ारी दानिश आ़लम टोंकी को रख कर क़रअत में और कातिब सुहैल अख़्तर को रख कर किताबत में और त़लबा को मअ़क़ूलात में माहिर बनाने को जामिआ़ नईमिया मुरादाबाद ख़ुद जाकर दाख़ला दिलाकर उन्हें हर फ़न में औला बनाने में आप ही का मश्वरा दर अस़्ल कार फ़रमा था,चुनाँचेह उस दौर में बेहम्देही तआ़ला हर शोअ़बे के लिए माहिर उस्ताज़ ख़ुद दारुलउ़लूम के फ़ारिग़ तैयार हो गये।

सूजा शरीफ़ में अपने वालिद माजिद के मज़ार पाक के पास 11 जमादिलऊला 1406 हिजरी में जामिआ़ सिद्दीक़िया की

1968 ई को शुरू हुआ 1978 ई. तक दस साल मस्जिजद में चलता रहा उस दौरान 1973 ई.को आप की फ़राग़त हुई, उस के पाँच साल बाद दारुलउ़लूम की तअ़मीरे नो की बुनियाद रखी गई,यह दो मन्ज़िला बिल्डिंग चालीस कमरों पर मुश्तमल तअ़मीर हुई इस में  आप अपने मुरब्बी और उस्ताज़ के दोश बदोश रहे बल्कि ऊपर का त़बक़ा बाक़ी रह गया और ह़ज पर जाना हुआ तो उस्ताज़े मोहतरम से मश्वरा कर के रशीद बुक साथ ली,जद्दा के किसी सेठ के ज़रीए यह काम मुकम्मल कराया।

सूजा शरीफ़ का यह दारुलउ़लूम 1986 ई. में शुरू किया ह़ालात ना मसाइद थे,तअ़मीर का काम ना मुम्किन की ह़द में था,मगर बुज़ुर्गों की दुआ़वों के सहारे आप ने जिद्दो जहद बर क़रार रखी दारुलउ़लूम में पाँचवीं फिर आठवीं दस्वीं फिर बारहवीं तक स्कूल की मन्ज़ूर ली और तअ़मीरी काम का परमेशन मिला और यह सिलसिला 1429 हिजरी से शुरू हुआ और पाँच साल में दरर्सगाह,हास्टल,मस्जिद सिद्दीक़ी और मज़ार शरीफ़ आ़लीशान तअ़मीर हो गए,थर नय्यड़,बालूत्रा बड़नवा,फलोदी और गुजरात के इ़लाक़ों में बीसयों मसाजिद का काम हुआ और कई मदरसे तअ़मीर हुये, और ता हुनूज़ सुन्नियत के फ़रोग़ में क़दम बरकाब हैं।

**तब्लीग़ी ख़िदमात :**

उ़मर मुबारक 1969 ई. में नो साल की थी उस वक़्त आप के मुरब्बी आ़ज़म ह़ज़रत पीर सय्यद हाजी महमूद शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा ने आप को चाचा अ़ब्दुस्सुबहान के साथ



मुरीदीन में दौरा के लिए भेजा इस वक़्त आप ऊला अ़रबिया पढ़ा करते थे एक या दो माह के लिए सफ़र करते इस वक़्त से आज तक दौरा तब्लीग़ जा रही है साथ सफ़र करने वाले बयान करते हैं और ह़ज़रत क़िब्ला से भी सुना कि अल्हम्दुल लिल्लाह इस दौरा में दीनी तब्लीग़ और पन्द व नस़ाइह और सालेकीन को तस़व्वुफ़ का सबक़ और ज़िक्र देना उन के मक़ामात में तरक़्क़ी के लिए ह़ल्क़ा शरीफ़ कराना और अपनी तोजिहात से नवाज़ना मुसलसल जारी रहा,बाज़ सफ़र आप ने अपने ख़ान्दान के दीगर बुज़ुर्गों के  साथ फ़रमाए जिन में बुज़ुर्गों ने यह मुआ़मलात आप को सुपुर्द किए और फ़ुक़रा की तवज्जोह आप की त़रफ़ मब्ज़ूल  कराई पस इस इ़लाक़ा के तमाम ज़ाकिरीन,फ़ुक़रा आप की त़रफ़ रुजूअ़ हुये और सुलूक का सबक़ आप से ले कर कामयाब हुए। नमाज़ बा जमाअ़त सुनन मुअक्किदा वग़ैरा बल्कि तहज्जुद,अवाबीन,मुराक़िबा और औराद में कभी नाग़ा न होने दिया अकसर वक़्त शुरू के दौरों में ज़िक्र व फ़िक्र में गुज़रना,अब चन्द साल से लोगों की ज़रूरियात को पूरा करने में स़िर्फ़ होना है। इब्तिदा में एक गाँव  में आठ रोज़ क़ियाम करते उन की इस्लाह़ फ़रमाते और ह़ल्क़े शरीफ़ होते मगर दारुल की बेरूनी ख़िदमात जलसे जुलूस और मकातिब व मदारिस का सिलसिला जैसा जैसा वसीअ़ होना गया वैसे वैसे मस़रूफ़ियात बढ़ती गऐं,आज साल में तक़रीबन हज़ार ऐसे बड़े जलसे और मवाक़ेअ़ होते जिन में आप बनफ़्से नफ़ीस शिरकत फ़रमाते और अकसर में स़दारत व सर परस्ती फ़रमाते हैं और मकातिब की तअ़लीम व

तरबियत और उन की तरक़्क़ी के लिए जिद्दो जिहद करने में साल महीना की त़रह़ गुज़रना है,इस बिना पर कई गाँव हैं जहाँ एक आध मर्तबा नाग़ा भी हो जाता है अलबत्ता वहाँ जलसा जलसा क़ायम हो जाए तो ज़रूर ज़रूर शिकरत फ़रमाते हैं ताकि उस जाने में महदूद व ख़िदमत न हो बल्कि वसीअ़ और देरपा काम हो सके।

राजस्थान के मग़्रिबी इज़्लाअ़ में मदारिस खोलने उन्हें चलाने और मजालिस व मह़ाफ़िल क़ायम करने और क़ायम रखने के लिए नीज़ मसाजिद की तअ़मीर नो और आबाद कारी के लिए आप ने कई कमेटियाँ क़ायम फ़रमायें जिन के तह़त अहले सुन्नत का अ़ज़ीम काम मुनज़्ज़म त़ौर पर हो रहा है,और सैकड़ो क़रिया जात से बद अ़क़ीदगी की बाद मुख़ालिफ़ का रुख़ आप की तहरीक ने आज बदल दिया है यह सारी बेरूनी ख़िदमात एक मरक़ज़ी तहरीक के तह़त हो रही हैं जिस का नाम तहरीक स़िद्दीक़ी है बक़िया सारी तन्ज़ीमात उस के तहत़ काम करती हैं,उन तन्ज़ीमात और मकातिब व मदारिस की सालाना मीटिंगगज़ और जलसे मुतअ़य्यन हैं जिन में तशरीफ़ ले जाकर वहाँ की तअ़मीरी, तअ़लीमी और तब्लीग़ी ख़िदमात को मुलाह़िज़ा फ़रमाते इस्लाह़ फ़रमा कर तरक़्क़ी की राह इस्तूवार फ़रमाते, अल्मुख़्तस़र इस मअ़रूफ़ तरीन ज़ात को एक अंजुमन कहना बजा होगा जिस के शब व रोज़ तब्लीग़ दीन से इ़बारत हैं,सफ़र की स़ऊबतें इस ज़ई़फ़ुल उ़मरी में बरदाश्त करना और अपनी राह़त व आराम को उम्मत मुस्लिमा के लिए कुरबान करना आप का



हमेशा शीवा रहा है कभी रात के दो चार बचे वापस क़ियाम गाह पर पहुँचे हैं,मगर दूसरे रोज़ के मअ़मूलात में ज़र्रा बराबर कमी नहीं आती,जामिआ़ में अगर्चे एक दिन के लिए या एक घन्टा वास्ते़ आ जायें मगर तमाम कार कुनान और उन की कार कुर्दगियों को एक नज़र से भांप लेते हैं और ख़ामी की फ़ौरन इस्लाह़ फ़रमा देते हैं, मुदर्रिसीन,मास्टर ह़ज़रात,बावर्ची और दीगर मुलाज़िमीन और तअ़मीरात के निगराँ,मेहमानों की ख़िदमत करने वाले और बेरूनी ख़िदमात करने वालों में से एक को बुलाकर मुकम्मल पूछ ताछ और उन की इस्लाह़ और आगे का फ़ारमोला बताने में कभी सुस्ती नहीं होती बल्कि दीगर ख़ुद्दाम को भी यही ताकीद फ़रमाते हैं कि अपने कामों का एक फ़ारमोला बना लें ताकि हर काम अपने वक़्त पर हो जाए,और कभी क़ज़ा न हो।

जामिआ़ में ख़ान्क़ाही निज़ाम भी क़ाइम है लोग अपनी ह़ाजतें और मुरादें ले के ह़ाज़िर होते हैं और उन की हाजत रवाई,मेहमान नवाज़ी,ख़ुर्द व नोश और रिहाइश ख़ातिर तवाज़ेअ़,दिलजूई में ला जवाब नमूना पेश फ़रमाते हैं कि आने वाला इंसान ज़िन्दगी भर उसे याद रखता है और ईमानी लुत्फ़ उठाना है,अ़दमे मौजूदगी में भी फ़ोन से आने वाले की मेहमान नवाज़ी की तमाम चीज़ों को तैयार कर के रखते हैं,ख़्वाह मेहमान सूजा शरीफ़ जाए या लूनी शरीफ़ आए दोनों जगह की ख़बर रखना और उसे हर क़िस्म की आसाइश पहुँचाना अपना फ़रीज़ा समझते हैं।

दरगाह शरीफ़ और इदारा पाक में होते हैं तो सुबह

दस बजे से दो बजे तक और अ़स्र से रात को ग्यारह बजे तक का वक़्त मेहमानों से मुलाक़ात और उन की हाजात सुनने और पूरी करने में स़र्फ़ हो जाता है,वक़्त में ख़ुदा ने वह बरकत रखी है कि कितने ही मेहमान क्यों न आ जाऐं इस मुतअ़य्यना वक़्त में उन सब के काम हो जाते हैं और हर एक बा मुराद होकर अपनी राह लेता है,कभी दोपहर की दअ़्वत कहीं होती है और मेहमान ज़्यादा आ गए तो उन के काम करने और उन्हें खाना खिलाने में कभी एक या दो बज जाती है और दअ़्वत के लिए फिर रवाना होते हैं इसलिए कभी तो दिन का खाना पाँच बजे नस़ीब होता है और रात का खाना अकसर औक़ात दस या ग्यारह बजे मयस्सर होता है लेकिन अगर नये लोगों में दअ़्वत होती है जो आप के मिज़ाज और मस़रूफ़ियात से ना बुलद होते हैं वहाँ जल्द पहुँच जाते हैं और मेहमानों में से वाक़िफ़ और बा ख़बर होते हैं तो उन्हें एक दिन मज़ीद रुक्ने का हुक्म फ़रमाते हैं अलग़र्ज़ इस क़द्र मस़रूफ़ ज़िन्दगी शरीफ़ है कि इंसान हैरत में पड़ जाए।

**शोअ़्बए नश्र व इशाअ़त का क़ियाम :**

मज्लिस स़िद्दीक़ी के तिह़त तहरीरी ख़िदमात की इसी साल से इब्तेदा है यह ज़हिन शरीफ़ में प्रोग्राम शुरू से था बार हा सब को फ़रमाया करते थे कि फ़लाँ मौज़ूअ़् पे क़लम उठाओ,लिखो! किसी जगह से शख़्स़ियात पे या दीनी ख़िदमात के तआ़रुफ़ के तअ़ल्लुक़ से लिखा हुआ किताब या रिसाला या नम्बर आता फ़रमाते यह काम लाइक़ तक़्लीद है, आप ह़ज़रात को ज़रूर इस में क़दम रखना चाहिए उस कुर्दा



इलाक़ा में जहाँ किसी क़िस्म की सहूलियत मुहिय्या नहीं थी यक़ीनन यह काम बज़ाहिर मुह़ाल नज़र आता था मगर आप की निगाहें होने वाले काम को देख रही थीं,उन्हें तमन्नाओं ओर दुआ़वों और तवज्जोहात का स़दक़ा है कि आज नाज़िरीन इस मजमा बनाम मक़ालात स़िद्दीक़िया का मुतालअ़् कर रहे हैं।

मौला तआ़ला उन का साया ता देर अहले सुन्नत पे क़ाइम और दाइम रखे और स़ेहत कामिला आ़जिला से सर फ़राज़ फ़रमाए ताकि सुन्नियत का यह काम और ज़्यादा निखरा हुआ नज़र आए।

**सूजा शरीफ़ और ख़ान्दाने लूनीं शरीफ़ :**

1.जब ख़ान्दान नगर(गड़ामालानी) में फ़रोकश था इस दौर में सूजा शरीफ़ वालों से तअ़ल्लुक़ और आमद रफ़्त शुरू हो चुकी थी।

2.तलाशे मुरशिद के लिए ह़ज़रत पीर सय्यद हाजी अ़ली अकबर शाह उ़र्फ़ स़ाहिबे रौज़ा ने सफ़र किया तो उस गाँव के दो ह़ज़रात आप के साथ हम सफ़र रहे : हाजी स़ालेह़ मुहम्मद,अ़ब्दुलमुबीन आख़िरुज़्ज़िक्र वहीं हरमैन तय्येबैन में वफ़ात कर गए।

3. ह़ज़रत मख़्दूम मुहम्मद आ़रिफ़ शाह क़ुरैशी अ़लैहिर्रहमा से ह़ज़रत पीर सय्यद हाजी अ़ली अकबर शाह जीलानी की सब से पहली मुलाक़ात सूजा शरीफ़ ही में हुई और मख़दूम स़ाहिब ने अपने चन्द मुरीदीन को मह़फ़िल आ़म में खड़ा कर के आप से बैअ़त कराया और उन की तरबियत आप के सुपुर्द की।

**4.**बड़े पीर स़ाहब सय्यद हाजी महमूद शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा ने थर के लोगों में शौक़ ज़िक्र की कमी महसूस की इस वक़्त फ़रमाया अब तो दो जगह हल्क़ा ज़िक्र होता है एक सूजा शरीफ़ की मस्जिद में और दूसरा आलूकातला में मअ़रूफ़ फ़क़ीर के यहाँ।

**5 .** हज़रत पीर सय्यद शाह मुहम्मद शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा जब थर का सफ़र शुरू करते और यहाँ की बीमारियों को महसूस कर के फ़रमाते अब तो ख़ुदा ही ख़ैर फ़रमाए यहाँ बीमार हो गए तो डॉक्टर तक नहीं पहुँच सकते मगर सूजा शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते यहाँ ह़ाफ़िज़ क़ाइम मौजूद हैं जो अच्छे डॉक्टर हैं।

**6.**हज़रत पीर सय्यद कुत्बे आ़लम शाह उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा को सूजा शरीफ़ से ऐसी मोहब्बत थी कि बवक़्त विस़ाल शरीफ़ अपने ख़्वास़ को वसि़यत फ़रमा दी कि मुझे सूजा शरीफ़ में रखना।

**7 .** हज़रत मुरशिदे करीम हुज़ूर बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया क़ाइदे अहले सुन्नत पीर त़रीक़त रहबरे शरीअ़त, मुजाहिदे दीन व मिल्लत नाबग़ए अ़स्र हज़रत अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली ने एक मर्तबा फ़रमाया : ऐ सूजा शरीफ़ वालो! ख़ुदा तआ़ला की मेहरबानी का शुक्र करो कि तुम रहमते ख़ुदा में नहा रहे हो और रहमती सैलाब तुम्हारे खेतियों को सैराब कर रहा है,एक बारर फिर फ़रमाया सुब्ह़ानल्लाह यह रेत के तूदे सूजा शरीफ़ के और उन में क़ालल्लाहु व क़ाला् रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु



तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की स़दाऐं बुलन्द हो रही हैं इस से बढ़ कर कौन सी नेअ़्मत हो सकती है।

**8.**हज़रत मुरशिदे करीम की हमशीरा मोहतरमा हज़रत बानिए स़ाहि़बा ने विस़ाल से चन्द दिन क़ब्ल यहाँ की ख़्वातीन से फ़रमाया था यह गाँव तो मुझे बहुत महबूब है क्योंकि यह मेरे वालिद मोहतरम का पसन्दीदा और मुन्तख़ब कर्दा गाँव है,मुझे यहाँ की रेत से मोब्बत की ख़ुश्बू आती है।

**9.**हज़रत पीर सय्यद महबूब हसन शाह फ़रमाया करते थे कि जब सूजा शरीफ़ गाँव में अपने मामूं जान पीर सय्यद दादा मिया अ़लैहिर्रहमा और उन के फ़रज़न्द बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया के पास आ जाते हैं फिर तो दूसरी जगह जाने का दिल ही नहीं चाहता।

**10 .** ख़ान्दान के तमाम बुज़ुर्ग इस एलाक़े के मीलाद ख़्वाह हज़रात को अपने दौरे में साथ रखते,रात की दअ़्वत में मीलाद पढ़ाते मगर सूजा शरीफ़ की पार्टी को सराहते और तरजीह देते और उन के बा वुज़ू ,बा अदब मीलाद पढ़ने और मह़फ़िल व मौक़ा की मुनासिबत से कलाम(मीलाद शरीफ़) पढ़ने की वजह से उन्हें दूसरों पर हमेशा तरजीह देते रहे,लूनी शरीफ़ के उ़र्स पाक में चादर शरीफ़ वग़ैरा के जुलूस में उन्हें नाम ले कर बुलाया जाता और सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा में चादर पोशी के वक़्त और मीलादुन्नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के जुलूस पाक में यह लोग हमेशा के लिए नाम ज़द किए हुए हैं।

**सूजा शरीफ़ वालों की ख़ुस़ूसि़यात :**

★ शायद पूरे इलाक़ा में यह गाँ ऐसा है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ दो ही क़ौम आबाद हैं और अस़ल बाशिन्दे हैं, मुसलमानों में दर्स क़ौम और ग़ैर मुस्लिम में भील क़ौम।

★ पूरे इलाक़ा में दीनी ऐअ़तबार से इ़ज़्ज़त की निगाह से देखे जाने वाले यही लोग हमेशा रहे,हज़ारों में उन ह़ज़रात को ही लोग इ़ज़्ज़त देते और तरजीह दिया करते हैं।

★ सूजा शरीफ़ के बाशिन्दे इदारा और अहले इदारा की ख़िदमत और दीन पाक की और दीनदारों की तअ़ज़ीम व तकरीम में बेहम्देही तआ़ला इस इलाक़ा में गोए सब्क़त ले गए हैं, हर हर क़दम पर उन की ख़िदमात लाइक़े तहसीन और लाज़िम तक़्लीद हैं।

★ बुज़ुर्गों के हर इशारे पर निसार होना और अपनी हर क़िस्म की कुरबानी पेश करना, इदारे के ख़ुद्दाम के बोझ को बर्दाश्त करना और हर मौक़े पर उन की हमदर्दी करना बहुत मुश्किल होता है, उन्होंने यह सब कुछ अल्हमदु लिल्लाह कर के असार की सुन्नत को ज़िन्दा किया है।

★दीनी ख़िदमत की वजह से उठने वाली नफ़रतों और मुख़ालिफ़तों का उन्होंने हमेशा ख़न्दा पेशानी से इस्तिक़बाल किया और हर मौक़ा पर यह ह़ज़रात इदारे के शाना बशाना रहे।

★ मदरसा जब कच्चे छप्परों के नीचे चिल्ला करता था और त़लबा व असातिज़ा घास के अ़रीश बना कर क़ियाम करते थे उन दिनों छप्परों बनाने में जिस चीज़ की ज़रूरत पड़ती अहले क़रिया के खेतियों से काट कर लाते मगर उन



ह़ज़रात की जबीन पर कभी शिकन न आया बल्कि उसे नेअ़मत समझते।

★ कभी शुक्र रंजी भी हो गई और ख़िफ़ा होकर तर्श रूई किसी ने दिखाई तो अहले क़रिया ने हमेशा हंस कर उसे टाल दिया मगर बुरा फ़रोख़्ता कभी नहीं हुये।

★ कभी के इस पुर फतन दौर में भी यह गाँव अल्हम्दुल लिल्लाह मशरबी इख़्तिलाफ़ से दूर है और हर सुन्नी बुज़ुर्ग़ की ख़िदमत को यह लोग ए़न सआ़दत समझते हैं।

★ बुज़ुर्गों के बा हमी इख़्तिलाफ़ का उन्होंने कभी असर नहीं क़बूल किया और न ही बुज़ुर्गों ने उन्हें अपने मुआ़मलात में डाला यह अल्लाह तआ़ला का उन पर बहुत बड़ा करम रहा और आज भी मौला तआ़ला हमेशा सलामत रखे।

★ उन के बड़ों ने एक नस़ीह़त की थी कि कई त़ूफ़ान आयेंगे बहुत सी बातें सूनोगे मगर तुम कभी भी अपने बड़ों की रविश को न छोड़ना और अहले सुन्नत में से जुमला सादात,उ़लमा सुलह़ा और मशाइख़ का ऐह़तराम करना और मोहब्बत से पेश आना,यह लोग उसी नस़ीह़त पर क़ाइम हैं।

यह भी सुना कि उन के बड़े,अहले दिल,ज़ाकिरुलक़ल्ब फ़ुक़राने वस़ियत की थी कि कोई कितना ही थीं सताए उस से बदला न लेना,ख़ुदावन्दे करीम और उस के रसूले पाक स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सुपुर्द कर देना इन शाअल्लाह तआ़ला तुम्हारी ग़ैब से मदद हो गई और हमेशा बा इ़ज़्ज़त रहोगे,यह लोग हुज़ूर बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया की तरबियत के तुफ़ैल आज भी उसी पर साबित हैं। मौला तआ़ला

तमाम अहले सुन्नत को उन ख़सा़इल पर और उन हज़रात को अपने उन मुहामिद पर इस्तिक़ामत और दवामी अ़मल नसी़ब फ़रमाए,आमीन बजाहे नबीहिलकरीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम।

**मुआ़सि़रीन सादात के तास्सुरात :**

हज़रत बानिए जामिआ़ सि़द्दीकि़या अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली को अहले सुन्नत व जमाअ़त के उ़लमाए किराम व मशाइख़े ए़ज़ाम से बे ह़दी मोहब्बत है। उन की ख़िदमत व तअ़ज़ीम और अदब व ऐहतराम में कोई दक़ीक़ा फ़रो गुज़ाश्त नहीं करते,यही वजह है कि यह दोनों त़बक़े अपनी शान व अ़ज़मत की वजह से मक़बूल इनाम होकर भी,आप की तअ़रीफ़ में रत्बुललिसान नज़र आते हैं,मुम्बई अहमदाबाद राजस्थान,गुजरात,बल्कि देहली,यूपी महाराष्ट्र दकन तक के बुज़ुर्गों को देखा कि आप से शर्फ़ मुलाक़ात या ग़ायबाना तआ़रुफ़ की बिना पर आप की कार कुर्दगियों और कारहाए नुमाया से मुतअस्सिर होकर खिले बन्दों,बरमला तअ़रीफ़ करते नज़र आते हैं,अकसर ह़ज़रात तक सि़र्फ़ आप की ख़िदमत दीनिया का शोहरा पहुँचा,मगर ग़ायबाना त़ौर पर उन की आप से गरवीदगी मुलाहि़ज़ा कर के इंसान रह जाता है कि किया क़ुदरत ने उन के दिलों में आप की शान व अ़ज़मत रख कर मक़बूल व महबूब बनाया है,और किया फ़रमाने नबवी : من كان الله كان الله له और وضع له القبول فى الارض के सुबूत आश्कारा किए हैं,आइये इन बुज़ुर्गों के ताअस्सुरात की सैर करते हैं,जिन्होंने ने जामिआ़ सि़द्दीकि़या



सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा दस्तारे फ़ज़ीलत या दीगर मवाक़ेअ़ पर आ कर बचश्मे सर इस रूहानी व इ़रफ़ानी मरकज़ी ख़ान्क़ाह नक़्श बन्दिया मुजद्दिदिया मज़हरिया को देखा और अ़वाम व ख़्वास़ को उस ईमानी बारिश में नहाते पाया और अपने मुआ़इनों में लिखा कि किसी मर्दे क़लन्दर की निगाह का फ़ैज़ है वरना इस सुनसान बयाबान और लक़ व दक़ स़ेहरा में गुलशने मुहम्मदी चेह मअ़ना दारद।

**शैख़े त़रीक़त ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज सय्यद महमूद अशरफ़ शाह जीलानी अशरफ़ी**

(सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाहे आ़लिया अशरफ़िया किछौछा यू पी) लिखते हैं :

19 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1432 हिजरी 22 जूलाई 2011 ई को और दोबारा 19 शअ़बान 1435 हिजरी 21 जून 2014 ई को ह़ज़रत पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी की दअ़वत पर दारुलउलूम जामिआ़ सि़द्दीकि़या सूजा शरीफ़ में ह़ाज़िरी का शर्फ़ मिला। जामिआ़ की अ़ज़ीम इ़मारत देख कर क़ल्बी मुसर्रत हुई। इस स़ेहरा में इतनी अ़ज़ीमुश्शान दीनी दर्सगाह का होना यह ह़ज़रत पीर स़ाह़ब क़िब्ला की पुर ख़ुलूस़ काविशों और दीनी जज़्बा पर ग़म्माज़ी कर रहा है। दूसरी ह़ाज़िरी में दो साल के अन्दर जो मज़ीद तअ़मीरात हुयें उन्हें देख कर हैरान हुआ और ख़ुश भी हुआ। सच है कि अगर क़ल्ब में सि़दक़ हो तो अल्लाह ज़रूर मन्ज़िलों को आसान करता है। यह फ़क़ीर गदाए अशरफ़ जीलानी रब्बे क़दीर जल्ल शानोहु की बारगाह में हबीबे पाक स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े दुआ़ करता है कि इस इदारे को ख़ूब

तरक़्क़ी अ़ता करे और दीन मुस्तफ़वी को इशाअ़त का अ़ज़ीम मरकज़ बनाए और हुज़ूर पीर स़ाहब क़िब्ला के ह़ौस़लों में बुलन्दी और स़ेह़त ज़िन्दगी और सलामती अ़ता फ़रमाए आमीन और तक़रीर में फ़रमाया : मशाइख़े ज़माना जो सर परस्ती को अ़ज़ीम ख़िदमत समझते हैं उन को यहा आकर देखना चाहिए और उन की सई जमील को मशअ़ले राह बनाना चाहिए।

सय्यद महमूद अशरफ़ शाह जीलानी अशरफ़ी
सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह आ़लिया अशरफ़िया
किछौछा मुक़द्दसा यू पी

**शैख़ुलइस्लाम हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद मदनी मियाँ मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली**

सज्जादा नशीन ह़ज़रत मुह़द्दिसे आ़ज़म हिन्द किछौछा शरीफ़ आप से ह़ज़रत मुरशिदे करीम बानिए जामिअ़ा के पुराने तअ़ल्लुक़ात हैं,बाला सनूर के जल्सों में अकसर दोनों बुज़ुर्ग़ साथ होते हैं,सूजा शरीफ़ की बारबार दअ़्वत पेश फ़रमाई, मगर अभी तक क़दम रंजा नहीं हुये मगर पीर स़ाह़ब क़िब्ला की ख़ूब तअ़्ज़ीम व तौक़ीर फ़रमाते हैं।

**ग़ाज़ी मिल्लत पीर त़रीक़त ह़ज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद हाशमी मियाँ मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली जीलानी अशरफ़ी किछौछा शरीफ़:**

आप जब सूजा शरीफ़ तशरीफ़ लाए अ़ज़ीमुलमुरत्तब, आ़लमी शोहरत के मालिक,शहज़ादा मुह़द्दिसे आ़ज़म,ख़ानक़ाहे आ़लिया अशरफ़िया व ख़ान्वादा के चश्म व चिराग़ अहले सुन्नत व जमाअ़त के लिए सरमाया फ़ख़्रे होते हुये और इस क़द्र बुलन्द मक़ाम व मर्तबा की ह़ामिल शख़्स़ियत होकर भी जब ह़ज़रत मुरशिद करीम उन से मिलने गए,तो बढ़ कर



इस्तिक़बाल किया और ख़ूब राज़ व नयाज़ की बातें फ़रमाऐं और ख़िदमात से इस क़द्र मुतास्सिर हुए कि तक़रीर में फ़रमाया : सूजा शरीफ़ तो मेरा घर है,यहाँ के लिए दअ़्वत ? अपने घर आने में दअ़्वत की किया ज़रूरत होती है,फिर फ़रमाया कि सूजा शरीफ़ तो छोटा बग़दाद है,जब तक हुज़ूर ग़ाज़ी मिल्लत सूजा शरीफ़ नहीं पहुँचे थे,रास्ता में टेलों को देख कर बोले कहाँ लिए जा रहे हो?मगर जब देखा कि यहाँ लोगों की भीड़ से पूरा मैदान बल्कि टीला,जबल इरफ़ात का नमूना पेश कर रहा है,यह देख कर ख़ूश हुए और बोले यह टुड्डियाँ कहाँ से आ गऐं,राक़िमुलहुरूफ़ को डीसा,दोबारा दअ़्वत पेश करने के लिए ह़ज़रत मुरशिद करीम बानिए जामिअ़ा ने उन के पास भेजा तो ख़ूब मोहब्बत से शर्फ़ मुलाक़ात अ़ता फ़रमाया। भचाओ और गांधी धाम में ह़ज़रत मुरशिद करीम जलसों में आप के साथ थे तो अपनी गाड़ी या ह़ज़रत मुरशिद करीम की गाड़ी में साथ बैठ कर जलसा गाह जाते रहे।

**पीर त़रीक़त ह़ज़रत अल्लामा सय्यद कलीम अशरफ़ स़ाहब जीलानी अशरफ़ी :**

सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह अहमदिया अशरफ़िया जाइस शरीफ़ यूपी,लिखते हैं : مبسملا و حامدا و مسلما अ़ज़ीज़ गिरामी क़द्र मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन जीलानी की दअ़्वत पर दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया और आस्ताना आ़लिया ह़ज़रत क़ुत्बे आ़लम शाह नक़्शबन्दी जीलानी रहमतुल्लाह अ़लैहि कि ज़यारत से मुशर्रफ़ हुआ आस्ताना आ़लिया भी गुंजनिया फ़ैज़ है और उस के ज़ेरे साया दारुलउ़लूम फ़ैज़

सिद्दीक़िया भी सर चश्म इल्म व इरफ़ान और मुंबअ़ फ़ैज़ान बना हुआ है,हज़रत पीर साहब की तवज्जोह और मेहनत और अ़लाक़ा के नयाज़ मन्दों की इआ़नत से यह दारुलउ़लूम रोज़ अफ़्ज़ू फ़रोग़ पर है इल्मे दीन की मुकम्मल तअ़लीम के साथ अख़लाक़ व किरदार की आ़ला तरबियत पर भी ख़ास़ तवज्जोह है,मौला तआ़ला इस इदारा को जो जंगल में मंगल बना हुआ है रोज़ ब रोज़ इरतेक़ाई मराहि़ल तेज़ी से तै़य कराता जाए,तमाम मुख़्लिसी़न अहले सुन्नत,अहले ख़ैर ह़ज़रात से इस दारुलउ़लूम का तआ़वुन कर के फ़ैज़याब होने की इस्तिदआ़ है।

दोबारा शअ़बान 1432 हिजरी को बरादरे गिरामी क़द्र ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यद ग़ुलाम शाह जीलानी की दअ़वत पर जामिआ़ सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ में ह़ाज़िरी का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ,इदारा की पुर शौकत,अ़ज़ीमुश्शान इमारत से़हरा में निकहत ज़ोहरा बिखैर रही है,रेगिस्तान में इल्म व दानिश का चमनिस्तान देख कर बे ह़द मुसर्रत हुई,तअ़लीमी मेअ़्यार और तरबियती अन्दाज़ से मुतास्सिर हुआ।

तीसरी मर्तबा 22 शअ़बान 1435 हिजरी की ह़ाज़िरी पर लिखते हैं : जंगल में मंगल,से़हरा में गुलशन,दुनिया में जन्नत है,यह दारुलउलूम मौसू़फ़ की जिद्दो जिहद मुसलसल और मुतवातिर काविशात का समरा है कि हर साल में आता हूँ तो इज़ाफ़ा ही देखता हूँ,मक़बरा भी बहुत आ़ली शान है। ज़हे मस्जिद व मदरसा व ख़ान्क़ाह है कि दरवे बूद क़ील व क़ाल मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम महबूब यज़दाँ



ग़ौसुलआ़लिम मख़दूम सुलत़ान अशरफ़ जहाँगीर सम्नानी व सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह जीलानी के स़दक़े इदारा को रोज़ अफ़ज़ू फ़रोग़ अ़त़ा फ़रमाए और उ़रूज सुरय्या के लिए बाइसे रश्क बनाए। आमीन

सय्यद मुहम्मद अशरफ़ कलीम अशरफ़ी जीलानी
वलिए अहद आस्तानए अशरफ़िया अहमदिया
जाइस राए बरेली 1191154
क़न्दहारी बाज़ार लाल बाग़ लखनऊ

**ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यद ज़फ़र मसऊ़द स़ाहब अशरफ़ी जीलानी किछौछा मुक़द्दसा**

लिखते हैं : 19 शअ़बान 1432 हिजरी 22 जूलाइ 2011 ई बरोज़ जुमा जलसा बन्दी में मदरसा हज़ा में ह़ाज़िरी का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ। जंगल में मंगल देख कर बे पनाह मुसर्रत हुई,दुआ़ है कि मौला तआ़ला जामिआ़ सि़द्दीक़िया को दिन दूनी रात चो गुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और मुदर्रिसीन व त़लबा के इल्म में उ़मर में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

सय्यद ज़फ़र मसऊ़द अशरफ़ी जीलानी
किछौछा मुक़द्दसा

**ह़ज़रत अ़ल्लामा पीर सय्यद महदी मियाँ स़ाहब चिश्ती**

(गद्दी नशीन सुलत़ानुलहिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़(बैतुन्नूर) अजमेर शरीफ़ लिखते हैं :

फ़क़ीर 19 शअ़बान 1433 हिजरी 10 जूलाई 2012 ई बरोज़ शुम्बा क़ब्ल ज़ोहर अरबाब त़रीक़त के साथ ह़ाज़िर आया मस्जिद सि़द्दीक़ी के इफ़्तेताह में शिरकत और पीर

तरीक़त व सरबराहे जामिआ़ सिद्दीक़िया अल्लामा सय्यद पीर ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी की दुआ़वों पर आमीन का शर्फ़ हासिल हुआ,इदारा के असातिज़ा व तलामिज़ा से मुलाक़ात हुई उन हज़रात की मेहमान नवाज़ी देख कर बे पनाह मुसर्रत हुई मुझे ऐसा लगता है कि रब्बे क़दीर ने प्यारे हबीब पाक अ़लैहित्तहया वस्सना के स़दक़े व बतुफैल सरकारे ग़ौसे आज़म व आक़ाए नेअ़्मत सुलतानुल हिन्द हुज़ूर ग़रीब नवाज़ अ़लैहिमर्रहमा हज़रत सय्यद साहब को सरवरे दो आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दीन हनीफ़ की तरवीज व इशाअ़त के लिए मुन्तख़ब फ़रमा लिया है। जिस का सुबूत अ़वाम अहले सुन्नत जो पीर साहब से वाबस्ता हैं उन में जागती हुई उन की दीनदारी है।

**सय्यद मेहदी मियाँ चिश्ती**

गद्दी नशीन सुलतानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

(बैतुन्नूर) अजमेर शरीफ़

**हज़रत पीर सय्यद ज़हूर अ़ली साहब अशरफ़ी अलक़ादरी**

मोहतमिम दारुलउ़लूम हाशमिया सुजान गढ़ राजस्थान, लिखते हैं :

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم اما بعد

فاعوذ باللہ من الشیطان الرجیم، بسم اللہ الرحمن الرحیم

आज मुअर्रख़ा 21/22 जमादिल आख़िरा 1416 हिजरी मुताबिक़ 15/16 नोम्बर 1995 ई बरोज़ चहार शुम्बा व पंच शुम्बा बराए उ़र्स हज़रत सय्यद कुत्बे आ़लम अ़लैहिर्रहमा व जश्ने दस्तार क़रअत दारुलउलूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया सुन्निया



हन्फ़िया के सिलसिले में हाज़िरी रही दारुलउ़लूम और ख़ान्क़ाह को शरीअ़त व तरीक़त का संगम पाया,दारुलउ़लूम के तलबा की स़लाहियत,तिलावते कुरआन मजीद व तक़रीर व मकालमा जात व नेअ़्मते रसूले,मनाक़िबे औलियाए किराम के सरीले गीत के तौर पर सुनकर,देखकर रूहानी मुसर्रत व शादमानी हुई,यहाँ दारुलउ़लूम की अगर्चे फ़लक बोस इमारत तो न पाई,मगर सुन्नते रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुताबिक़ फ़र्शे ज़मीन व चटाई पर बैठ कर इल्मे दीन से मुस्तफ़ीज़ होने वाले तलबा की जमाअ़त को किसी भी अ़ज़ीम दारुलउ़लूम से कम नहीं पाया,शरीक इज्लास उ़लमा व मशाइख़ और सादाते किराम जंगल में ज़ाहिरी बातिनी मंगल देख कर हज़रत सय्यदी ग़ुलाम हुसैन शाह साहब दामत बरकातोहुमुल आ़लिया की मुजाहिदाना काविशों और असातिज़ा दारुलउ़लूम हज़ा और दरगाह हज़ा के तीन तलबा को अस्नाद व दस्तारहाए क़रअत से नवाज़े जाने का हुसैन मन्ज़र देख कर हर चेहरा पर उम्मीदों को फूल महकते और मुसकुराते नज़र आए,दुआ़ है कि आइन्दा साल इन्शाअल्ला तआ़ला व ब फ़ैज़ रसूलोहुल आ़ला जल्ल जलालोहु व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ तक मअ़्कूल व मन्कूल मुकम्मल तअ़्लीम दीन मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इन्तेज़ाम हो जाए और यह इदारा शब व रोज़ मनाज़िल तरक़्क़ियात तै करता रहे,ख़ान्क़ाह आ़लिया का फ़ैज़ जारी रहेगा,इन्शाअल्लाह तआ़ला आ़म्मतुलमुस्लिमीन सुन्नी हन्फ़ी भाइयों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि अगर वाक़ेई आप

अपने माल को राहे ख़ुदा और त़रीक़े मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर स़र्फ़ कर के सवाब ह़ासि़ल करना चाहते हैं तो ज़रूर बिज़्ज़ुरूर अपना माली तआ़वुन पेश कर के सवाब दारैन ह़ासि़ल करें,आप का एक रुपया इन्शाअल्लाह तआ़ला इ़ल्म बन कर क़ौम के नोनिहालों के सीनों को रौशन करेगा।

फिदाए ख़ान्क़ाह कुत्बे आ़लम सय्यद
ज़ोहूर अ़ली अशरफ़ी अल क़ादरी
सुजान गढ़ 16 नवम्बर 1995

**ख़त़ीब अहले सुन्नत ह़ज़रत अल्लामा सय्यद काज़िम पाशा क़ादरी**
सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह मौसविया हैदराबाद दकन लिखते हैं

आज 18 शअ़बान 1434 हिजरी,28जून 2013 ई को ह़ज़रत अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी क़िब्ला की दअ़वत पर सूजा शरीफ़ ह़ज़रत के वालिद माजिद के आस्ताना आ़लिया पर ह़ाज़िरी का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ। यहाँ आले रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मेह़नत और ह़ज़रत वाला की बरकतों को देखा,ह़ज़रत मुफ़्ती शाह सय्यद ग़ुलाम हुसैन क़िब्ला ने बेशक जो कारनामे अंजाम दिए हैं उसकी दूर तक मिसाल मिलना दुश्वार है। मैं ह़ज़रत वाला की दराज़ी उ़मर और से़हत कामिला के लिए दुआ़ गो हूँ मौला तआ़ला अपने हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े व महबूब पाक ग़ौसे आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के तुफ़ैल उन के साया आ़तफ़त को उन के मुरीदीन व मोअ़तक़दीन व अहले ख़ान्दान के सरों पर ता देर क़ाइम रखे और इस इदारा



को तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। आमीन

**मुस़्लेह़ क़ौम व मिल्लत,चिराग़ काठियावाड़ ह़ज़रत पीर सय्यद मुहम्मद ग़ुलाम अ़ली स़ाह़ब क़ादरी उ़र्फ़ दादा बापो सावर कुन्डला गुजरात**

अल्हम्दु लिल्लाह दारुलउ़लूम फ़ैज़ सि़द्दीक़िया में आज आने का मौक़ा मिला राजस्थान के वीराने में यह दीन का लहलहाना गुलशन देखा,अल्लाह का शुक्र है कि यहाँ आने की सआ़दत मिल्ली ह़ज़रत अ़ल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह स़ाहब को अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन के लिए पसन्द फ़रमाया है,यही दिल कर रहा है वरना यहाँ दीन के काम का कोई तस़व्वुर नहीं कर सकता,यहाँ आ के इतना ही सोचा कि तूफ़ान में चिराग़ रौशन हुआ है,अल्लाह तआ़ला यह रौशनी हमेशा के लिए बढ़ाए। आमीन

सय्यद मुहम्मद ग़ुलाम अ़ली क़ादरी
उ़र्फ़ दादाबापो सावर कुन्डला गुजरात 3.82006

मुफ़्ती आ़ज़म कच्छ ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज सय्यद अहमद शाह बुख़ारी क़िब्ला विन्ज़ान कच्छ

ह़ज़रत महबूब मुरशिदे करीम मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली को मौला तआ़ला ने अदब व अख़लाक़ में बहुत आ़ला मक़ाम अ़ता फ़रमाया है,अदना व आ़ला आप से मोहब्बत करने लगता है,मुफ़्ती स़ाहब की मेहरबानियाँ शुरू से क़ाइम हैं,मौलाना मुहम्मद क़ाज़ी स़ाहब से फ़रमाया : पीर स़ाहब बापो को अल्लाह तआ़ला ने अच्छे अख़लाक़ दिए हैं,बरोज़ क़ियामत वह आ़माल से वज़नी होंगे। एक मर्तबा ई़द के दूसरे रोज़ मअ़मूल के मुत़ाबिक़ आप मिलने गए,मगर देर हो गई,फ़ौन से अ़र्ज़

किया,अगर देर हो गई है तो कुल आयें, फ़रमाया : नहीं आ जाओ!मैं आप के आने तक घर न जाऊँगा,चुनाँचेह दोपहर साड़े बारह बजे पहुँचने,निस्फ़ घन्टा ख़िलाफ़ मअ्मूल मुन्तज़िर रहे,लोगों को निकाल कर दरवाज़ा बन्द कर दिया था,आप के लिए दरवाज़ा खोला,लोग जो बाहर खड़े थे वह भी,साथ अन्दर आ गए बग़लगीर हुये और फ़रमाया : पीर स़ाहब!मेरी ईद दर ह़क़ीक़त आज हुई है इस साल 1436 हिजरी को जब मिलने गए और हालात सुनाए फ़रमाया : आप को या आप के मुरीद व मुह़िब को कोई टच कर दे उस का मैं ज़िम्मा दार हूँ जवाबन हुज़ूर बानिए जामिआ़ ने फ़रमाया यह मेरे मुरशिद का कलाम है जो इस ज़बान से सुनाया जा रहा है। एक मर्तबा मुबारक ज़बान से ख़ुद हुज़ूर बानिए जामिआ़ ने बयान किया कि अंजार का दौरा कर के मुफ़्ती स़ाहब को सुनाया,ख़ुश हुए, रियाज़ुस्सालेह़ीन तोहफ़े में दी और फ़रमाया पीर स़ाहब!इस जगह कोई कहता कि आप सात हज कर के आए,मैं ख़ुश न होता जितना इन इ़लाक़ों के दौरा से मैं आप से ख़ुश हुआ हूँ।

**ह़ज़रत मौलाना सय्यद जहाँगीर शाह स़ाहब बुख़ारी**

बरादरे ख़ुर्द ह़ज़रत मुफ़्ती आ़ज़म कच्छ विन्ज़ान। रक़म त़राज़ हैं :

24 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1419 हिजरी/14दिसम्बर 1998 ई को अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि इस अह़क़र को मदरसा फ़ैज़ स़िद्दीक़िया के मुआ़इना का शर्फ़ ह़ासिल हुआ, ह़ज़रत क़िब्ला की दिन रात की अ़र्क़ रेज़ी और मेहनत व मुशक़्क़त का समरा है कि 125 त़लबा क़ियाम व तआ़म के इन्तेज़ाम के



साथ तअ़्लीम ह़ासिल कर रहे हैं और तअ़्लीम का मेअ़्यार बहुत ही आ़ला है,रब बे नयाज़ मदरसा हज़ा को अबदालुलआबाद तक जारी व सारी रखे और तमाम मुश्किलात को आसान फ़रमाए,आमीन,अल्हदु लिल्लाह 22 शअ़्बान 1423 हिजरी में मदरसा फ़ैज़ स़िद्दीक़िया के सालाना इम्तेह़ान और जलसा दस्तार फ़ज़ीलत में शिरकत का मौक़ा मिला त़लबा की क़ाबिलयत और इ़ल्मी स़लाह़ियत का मुशाहिदा हुआ बेहतरीन क़िस्म की सहूलियात उन के लिए फ़राहम की गई हैं और आ़ला मेअ़्यार पर तअ़्लीम दी जाती है ह़ज़रत पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह स़ाहब की ज़ाती जिद्दो जिहद और अ़र्क़ रेज़ी का यह समरा है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मज़ीद तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और दोनों जहाँ की सआ़दतों से नवाज़े। आमीन

सय्यद जहाँगीर शाह बुख़ारी कच्छ विन्ज़ान

ह़ज़रत सय्यद हसन शाह इस्माईल शाह बुख़ारी लिखते हैं :

अल्हदु लिल्लाह बेहम्देही तआ़ला अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से आज बतारीख़ 26 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1419 हिजरी 14 दिस्मबर 1998 ई बरोज़ पीर को सूजा शरीफ़ के दारुलउ़लूम फ़ैज़ स़िद्दीक़िया के सालाना इज्लास की ह़ाज़िरी का शर्फ़ नस़ीब हुआ,इदारा हज़ा के त़लबा की तिलावत,नअ़्त शरीफ़,सवालात और तक़रीर वग़ैरा सुन कर बे ह़द मुसर्रत हुई बारी तआ़ला रसूले मुअ़ज़्ज़म के तुफ़ैल और ग़ौसे आ़ज़म के स़दक़े ता सुबह क़ियामत दिन दो गुनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और नूरानी,रूहानी फुयूज़ व बरकात को ता क़ियामत बाग़ व बहार रखे,यह सुन्नी इदारा सूजा शरीफ़ की

बंजर ज़मीन में थोड़े अ़र्से में उ़रुज पा गया यह ह़ज़रत पीर स़ाहब अल्हाज सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह बावा की मेहनत तो है,नुस़रत ख़ुदावन्दी रहमत ख़ुदावन्दी तो है ही लेकिन मेरा दिल यक़ीन के साथ इक़रार करता है कि पीर स़ाहब ख़िदमत कर रहे हैं ह़क़ीक़त में ख़ुदा दाद त़ाक़त है वरना इस अ़ज़ीमुश्शान इदारा को उ़रुज पर लाना यह हर एक आदमी का काम नहीं ख़ुदा अ़ज़्ज़ व जल्ल ह़ज़रत पीर स़ाह़ब को मज़ीद अख़लास़ व अ़मल अ़त़ा फ़रमाए और ग़ैबी मदद फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन

ह़क़ीर फ़क़ीरुलअ़ब्दुलमज़नब

सय्यद हसन शाह इस्माईल शाह बुख़ारी ह़न्फ़ी उ़फ़िया अ़न्हु

24 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1419 हिजरी 14 दिसम्बर 1998 ई

**शहज़ादए हुज़ूर शोएबुलऔलिया हज़रत अल्लामा अश्शाह गुलाम अ़ब्दुलक़ादिर स़ाहिब अ़लवी**

सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह यार अ़लविया बराऊँ शरीफ़ लिखते हैं :

फ़क़ीर यार अ़लवी स़ाहब आस्ताना ह़ज़रत पीर सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह जीलानी उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा सूजा शरीफ़ की बा फ़ैज़ शख़्सियत के फ़ैज़ से उन के स़ाहबज़ादा गिरामी वक़ार पीरे त़रीक़त पैकरे ख़ुलूस़ व मोह़ब्बत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अश्शाह पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह स़ाह़ब क़िब्ला जीलानी क़ादरी की पुर ख़ुलूस़ दअ़्वत पर दो मर्तबा 17 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1426 हिजरी और 18 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1434 हिजरी 28 जून 2013 ई में ह़ाज़िर हुआ,फ़क़ीर अ़लवी ने क़ादरी शहज़ादे की दअ़्वत को हुक्म का



दर्जा दिया। फ़क़ीर ने जो कुछ सुना था उस से सिवाया पाया,मुझे पहली मर्तबा रात के जलसा मह़फ़िल व दुआ़ व सलाम नीज़ ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ की मुक़द्दस तक़रीब में क़रीब से न सिर्फ़ शिकरत बल्कि निहायत ही क़रीब से पीर स़ाह़ब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली के फ़ुयूज़ देखने का मौक़ा मिला,हिन्दुस्तान की आख़िरी सर ह़द दौर इफ़्तादा और कोर्दा इलाक़ा में एक शान्दार दारुलउ़लूम, मुअक़्क़र असातिज़ा,मुहज़्ज़ब त़लबा को देख कर अपने महसूसात को रात की तक़रीर में इस शेअ़्र के ज़रीए पेश करते हुये फ़ख़्र महसूस हुआ :

मस्त जो ज़र्फ़ उठाले वही पैमाना है<br>
जिस जगह झूम कर पी ले वही मीख़ाना है

दूसरी मर्तबा की ह़ाज़िरी में लिखते हैं : ह़ज़रत मौसूफ़ की अन्थक मसाई के नतीजे में चन्द बरसों में दारुल उ़लूम ने जो हैरत अंगेज़ तरक़्क़ियाँ ह़ासिल कीं वह सब का सब फ़ैज़ान सरकार व महबूबाने बारगाह औलिया किराम की निगाह का करिश्मा है जंगल में मंगल की कहावत को ह़क़ीक़त के रुप में यहाँ देखा जा सकता है दारुल उ़लूम का पुर शुकूह ऐवान,ख़ुबस़ूरत आ़ली शान नो तअ़्मीर मस्जिद सि़द्दीक़ी सब कुछ इस बात का ए़लान है कि :

चमन में फूल का खिलना तो कोई बात नहीं<br>
ज़हे वह फूल जो गुलशन बना दे से़हरा को

परवरदिगार इस इदारे की ख़िदमात अपनी बारगाह में बतुफ़ैल सरकारे आ़ज़म क़बूल फ़रमाए और उस के फ़ुयूज़ व

बरकात का आ़म फ़रमाए। इस कोर्दा अ़लाक़ा में और बे इ़ल्मी व बद अ़म्ली की शब दीजूर में दारुलउ़लूम को न सिर्फ़ कोकिब दरख़्शाँ बल्कि नय्यरे ताबाँ बनाए और उस के रूहे रवाँ ह़ज़रत पीर स़ाह़ब क़िब्ला और उन के रुफ़क़ा व असातिज़ा व त़लबा व मुआ़वेनीन को अज्रे दारैन की सआ़दत व करामत नस़ीब करे। अमीन।

वफ़्द सि़द्दीक़ी मुफ़्ती कुदरतुल्लाह स़ाह़ब के चहल्लुम में शिरकत के बाद बराऊँ शरीफ़ ह़ाज़िर हुआ। पूरे स्टाफ़ ने मअ़ सरबराहे आ़ला हुज़ूर अ़लवी स़ाह़ब क़िब्ला पर तपाक इस्तिक़बाल किया शान्दार ख़िदमत अंजाम दी और पीर स़ाह़ब क़िब्ला के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि हमारी त़रफ़ से अ़र्ज़ करना कि यूपी का दौरा फ़रमाए,रिहाइश बराऊँ शरीफ़ रखेंगे,दौरा के लिए गाड़ी का इन्तेज़ाम हम करेंगे। वफ़्द को ह़ाज़िरी वहाँ कमी और त़लबा का अदब व ऐहतराम ला जवाब नज़र आया,मुफ़्ती निज़ामुद्दीन स़ाह़ब बे ह़द महफ़ूज़ हुये जो सूजा शरीफ़ दो मर्तबा तश्रीफ़ ला चुके हैं। पूना के समीनार में मुफ़्ती शहाबुद्दीन स़ाह़ब जो बराऊँ शरीफ़ के मुफ़्ती व मुदर्रिस हैं मिले,सूजा शरीफ़ का ज़िक्र करते रिक़्क़त तारी हो गई और बोले कि दिल बहुत चाहता है कि इस ख़ित्ता़ को देखूँ। चुनाँचेह उन को एक मर्तबा बुलाया भी मगर किसी वजह से न पहुँच सके।

**मुआ़सि़रीन मशाइख़े एज़ाम व उ़लमाए किराम का इज़हार ख़्याल**

ह़ज़रत शैख़ त़रीक़त अबून्नस्र अनस मियाँ फ़ारूक़ी मुजद्दिदी नक़्श बन्दी गद्दी नशीन दरगाह शाह अबुलख़ैर चिंली



क़ब्र देहली लिखते हैं :

अल्हमदु लिल्लाह 21 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हिजरी 9 जूलाई 2015 ई जामिआ़ सि़द्दीक़िया में बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया ह़ज़रत शैख़ सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल आ़लिया की दअ़्वत पर ह़क़ीर की ह़ाज़िरी हुई,इस बयाबान इलाक़ा में दीनी इदारा क़ाइम करना और बन्दगाने ख़ुदा को इश्क़ रिसालत व मोहब्बते औलिया की मुबारक पुर कैफ़ बरकात से बहरायाब करना क़ाबिल स़द तअ़रीफ़ व सताइश है,अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त ह़ज़रत शैख़ की इन मसाई़ में बरकत अ़त़ा फ़रमाए और आप के साया आ़त़फ़त को ता देर क़ाइम व दाइम रखे। बहुत उ़म्दा पीर ऐ एमारत तअ़्मीर हुई है ह़क़ तआ़ला इस इदारा दीनी को अख़लास़ व शौक़ अ़मल के साथ त़लबा दीन बर ह़क़ के ज़रीए आबाद रखे,यहाँ के मुआ़विनीन,मुन्तज़िमीन और मुदर्रिसीन को अल्लाह सुब्हाना अपने हबीब करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तुफ़ैल अज्रे जज़ील व अज्रे कसीर इ़नायत फ़रमाए। आमीन बजाहे सय्यदुल मुरसलीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम।

**मज़हर मुफ़्तिए आज़म हिन्द ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद तहसीन रज़ा रज़वी बरकाती**

(म :1428 हिजरी शैख़ुलह़दीस जामिआ़ नूरिया रज़विया बरेली शरीफ़ लिखते हैं :

आज बतारीख़ 19 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1425 हिजरी 15 अक्तूबर 2004 को दारुलउ़लूम फ़ैज़ सि़द्दीक़िया के सालाना जलसा दस्तार फ़ज़ीलत में ह़ाज़िरी का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ,जैसा सुना था वैसा ही पाया यह दारुलउ़लूम जाए वक़ूअ़ के लिहाज़

से जंगल में मंगल का स़ही मिस्दाक़ है, त़लबा मुहज़्ज़ब,तरबैत याफ़्ता मअ़लूम हुए,यह सब ह़ज़रत बा बरकत अ़ल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह स़ाह़ब जीलानी के फ़ैज़ और उन की तवज्जोह ख़ास़ का समरा है,मौला करीम इस दारुलउ़लूम को दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और उस के मुदर्रिसीन व मुआ़वेनीन को जज़ाए ख़ैर और अज्रे जज़ील मरहम्मत फ़रमाए आमीन

**बहरुलइरफ़ान हज़रत अल्लामा अल्हाज मुफ़्ती मुहम्मद आफ़ाक़ अहमद नक़्श बन्दी**

बानी व रसबराहे आ़ला जामिआ़ अह़मदिया कन्नौज यू पी लिखते हैं :

19शअ़बान 1432 हिजरी,22जूलाई 2011 ई.को ह़ज़रत सय्यद पीर ग़ुलाम स़ाहब नक़्श बन्दी मुजद्दिदी दाम ज़िल्लुहुल आ़ली की ख़्वाहिश का ऐहतराम करते हुये दारुल उ़लूम फ़ैज़ सि़द्दीक़िया के सालाना जलसा के मौक़ा पर हा़ज़िरी का शर्फ़ हा़सि़ल हुआ। पुर शुकूह इमारत,त़लबा की कसरत,शुरकाए इज्लास की कसरत और अ़क़ीदत व मोहब्बत और प्रोग्राम की तरबियत,मेहमाने ख़ुसू़सी व उ़लमा व मशाइख़ की कसरत आमद और ख़ुद ह़ज़रत क़िब्ला पीर स़ाह़ब के हसन इन्तेज़ाम वग़ैरहा को देख कर अज़ ह़द ख़ूशी हुई। इस्लाम व सुन्नियत की तरवीज व इशाअ़त के तअ़ल्लुक़ से जो आप की मेह़नतें और ख़िदमतें हैं वह निहायत लाइक़े सताइश हैं। फिर बैअ़त व इरादत के ज़रीए इस्लाह़ व इरशाद की जो कोशिशें देखने में आईं वह आ़म तौ़र पर बहुत कम नज़र आती हैं। आने वालों का हुजूम और उन की कसरत और वालिहाना अ़क़ीदत ह़ज़रत



क़िब्ला सय्यद स़ाह़ब मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली के अख़लाक़ व किरदार की रौशन दलील है। बारगाहे रब्बुलआ़लमीन में अ़र्ज़ है कि इस पुर फ़तन दौर में ऐसे लाइक़ अफ़राद हमें कसरत से अ़त़ा फ़रमाए और सय्यद स़ाह़ब क़िब्ला का साया दराज़ फ़रमाए ताकि इस्लाम व सुन्नियत और तस़व्वुफ़ व त़रीक़त का काम होता रहे और लोग फ़ैज़याब होते रहें। यह क़ल्बी तास्सुरात हैं जो सब कुछ देख कर स़फ़ा क़िरत़ास पर सबत हुये वरना आ़म त़ौर पर फ़क़ीर मुजद्दिदी मुआ़इना वग़ैरह बहुत कम लिखता है।

नीज़ 3 ज़ीक़ादा 1437 हिजरी में तशरीफ़ लाए लिखते हैं :

दारुलउ़लूम की तरक़्क़ी मिसाली हैसियत की हा़मिल है,उम्मीद है कि ह़ज़रत क़िब्ला और उन के मशाइख़ की तो जिहालत की बदौलत आने वाले वक़्त में दीन का अनोखा और निराला मदरर्सा होगा। और रुश्द व हिदायत। उ़लमा व सुलह़ा और इस्लाम व सुन्नियत के दाइयों का एक अ़ज़ीम मरकज़ होगा,यहाँ के असातिज़ा व त़लबा की नेकी और अख़लाक़ हसना से मैं बे ह़द व बे पनाह मुतास्सिर हुआ। मौलाए करीम की बारगाह में क़ल्ब की गहराइयों के साथ अ़र्ज़ है कि ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला को उ़मरे त़वील नसी़ब हो और उन के बच्चों को उन का सच्चा जा नशीन बनाए और हर शर व फ़ितना से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन

**बहरुलउ़लूम ह़ज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान क़िब्ला आज़मी अलैहिर्रहमा**
मुतवफ़्फ़ी 14 मुह़र्रमुल ह़राम 1434 हिजरी दारुलउ़लूम शम्सुलउ़लूम घौसी) लिखते हैं :

19 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1422 हिजरी 4 नवम्बर 2001 ई को सूजा शरीफ़ के पीर त़रीक़त ह़ज़रत मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाहब जीलानी ज़ैद मजदोहुम के इस़रार पर दारुलउ़लूम फ़ैज़ सि़द्दीक़िया के साथ लाना जलसा दस्तार बन्दी में शरीक हुआ। इसी मौक़ा से ह़ज़रत सय्यद पीर कुत्बे आ़लम शाह नक़्श बन्दी अ़लैहिर्रहमा के उ़र्स मुबारक की तक़रीब थी,दोनों ही तक़रीबों में शिरकत हुई। यहाँ की ह़ाज़िरी में तअ़्लीमी सिलसिला के कई तजर्बात हुये यह इदारा इस इलाक़ा में वाक़ेअ़् है जहाँ आने जाने की राहें दुश्वार गुज़ार हैं,उ़मरानी और शहरी आबादी से दूर यह गाँव आबाद है यहाँ दुनियावी आसाइश तो नहीं लेकिन तअ़्लीम व तअ़ल्लुम और इस़्लाह़ नफ़्स व तरबियत का मुकम्मल निज़ाम नाफ़िज़ और रूबा अ़मल है। यह स़ही है कि उस तअ़्लीमी व तरबियती निज़ाम की इतनी शान्दार तकमील में पीर त़रीक़त ह़ज़रत मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह स़ाहब की रूह़ानियत को काफ़ी अ़मल दख़्ल है फिर भी मह़ल वक़ूअ़् का भी कुछ न करिश्मा ज़रूर है। दूसरा तजर्बा यह हुआ कि दर्से निज़ामी में अख़लाक़ और तसव्वुफ़ की कुछ इल्मी और अ़मली शिरकत ज़रूरी है। तब ही उम्मत की इस़्लाह़ हो सकती है,अलग़र्ज़ में



यहाँ से कुछ सीख कर लौट रहा हूँ मैंने रस्मी मुआ़इना के बजाए अपना तास्सुर  लिखना काफ़ी समझा।

22 शअ़्बान 1423 हिजरी 29 सितम्बर 2002 ई. को दूसरी मर्तबा की ह़ाज़िरी में लिखते हैं : गुज़श्ता साल की ह़ाज़िरी में यहाँ की हर चीज़ से बेह़द मुतास्सिर हुआ,इदारा के मुदीर आ़ला ह़ज़रत मौलाना अश्शाह सय्यद ग़ुलाम हुसैन क़िब्ला क़ादरी मुजद्दिदी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली के इ़ल्म व फ़ज़्ल,त़हारत व तक़वा,हुसने अख़्लाक़ और अख़्लास़ फ़िल अ़मल से मैं बग़ायत मुतास्सिर हुआ। साथ साथ आप के हुस्ने इन्तेज़ाम के लिए बे साख़्ता दिल से दुआ़ निकली,اللھم احفظہ من کل بلاء الدنیا و عذاب الآخرۃ واعنہ فی خدمۃ الاسلام والمسلمین برحمتک یا ارحم الراحمین उस के असातिज़ा से मेरी कोई ख़ास़ मुलाक़ात नहीं हुई मगर उन की फ़ज़ीलत और हुस्न कार कुर्दगी का बेहतरीन नमूना उन की किश्तज़ार अ़मल यानी त़लबा है,فجزاھم اللہ خیر الجزا فی الدین والدنیا والآخرۃ، और यहाँ के त़लबा अल्हम्दु लिल्लाह सब्ग़तुल्लाह के महबूब रंग में रंगे हुए हैं,स़ौम व स़लात के पाबन्द,,अ़मल तसव्वुफ़ पर कारबन्द,ख़लीक़, मुतवाज़ेअ़् मिलनसार व ख़िदमत गुज़ार और सब से बढ़ कर तअ़्लीम व तरबियत में हमा वक़्त मस़रूफ़ कार,मौला तआ़ला उन्हें तौफ़ीक़े ख़ैर बख़्शे और इ़ल्मे दीन से नवाज़े और अख़्लास़ फ़िलअ़मल की दौलत से माला माल फ़रमाए,गुश्ता साल इदारा की इ़मारतें सादा और काम चलाओ थीं,इस साल ह़ज़रत पीर स़ाहब ने सब की हालिंग फ़रमा दी है और इ़मारात नई,और नये रंग व रौग़न के साथ

आरास्ता व पैरास्ता हैं,मौला नज़रे बद से बचाए उन सब को क़बूल फ़रमाए और यहाँ के छोटे बड़े सब को मक़बूल बनाए। ईं दुआ़ अज़ मन व जुमला जहाँ आमीन बाद

19 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1425 हिजरी,5अक्तूबर 2004 ई को तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत मौलाना तहसीन रज़ा ख़ाँ स़ाह़ब क़िब्ला के तह़रीर कर्दा मुआ़यना के तहत इन अल्फ़ाज़ में तस्दीक़ सबत फ़रमाई :

ह़ज़रत अल्लामा मौलाना तह़सीन रज़ा ख़ाँ स़ाहब शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ नूरिया बरेली शरीफ़ की तहरीर की ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ तस्दीक़ करता हूँ।

20 शअ़बानमुअ़ज़्ज़म 1428 हिजरी में तशरीफ़ लाए तो तहरीर फ़रमाया : अल्हम्दु लिल्लाह रब्बुल आ़लमीन में 1422 हिजरी से मुसलसल सूजा शरीफ़ के मुबारक ख़ित्ता और ख़ान्क़ाह जीलानिया के मुक़द्दस दाइरा में सालाना हाज़िरी देता रहता हूँ,हर साल नया हौस़ला,नई उमंग ले कर वापस होता हूँ,इम्साल तअ़मीरी शोअ़बा में मुतअ़द्दिद शान्दार इ़मारतों का इज़ाफ़ा हुआ है,क़दीम त़हारत ख़ाना नई शान और नई ख़ुश्नुमाइयों के साथ मुकम्मल हुआ,लाइब्रेरी की शान्दार इ़मारत बिल्कुल नई तअ़मीर हुई,और त़लबा के डाइनिंग हाल की पुर शुकूह इ़मारत की दीवारें मुकम्मल हैं और उन पर छत डालने का काम बाक़ी है,तअ़लीमी ख़ूबी और ख़ुश उस्लूबी भी हसबे साबिक़ रोज़ अफ़ज़ू है,त़लबा में तस़व्वुफ़ और ज़िक्र व फ़िक्र का शौक़ पूरे हिन्दुस्तान में शायद यहाँ के लिए मख़्सूस़ है,हमा जिहत तरक़्क़ी और इशाअ़त दीन व सुन्नियत की पूरे इ़लाक़ा



रम्क़,यह सब मख़्दूमी ह़ज़रत सूफ़ी सय्यद अश्शाह ग़ुलाम हुसैन मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की ज़ात बा बरकात का फ़ैज़ और उन की करामत है।

राक़िम ने कहा : किसी ने पहली मर्तबा आते राह में तअ़ज्जुबब करते कहा कि अमरीका व अ़फरीका आँखें फ़र्श राह करें मगर आपप न जायें यहाँ सूजा शरीफ़ की दुश्वार गुज़ार राह का अ़ज़्म किस बिना पर है,फ़रमाया कौन सी किशश लिए जाती है वह मुझे ख़ुद को मअ़लूम नहीं। ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ करवाते फ़रमाया मैंने ता ज़िन्दगी यहाँ आने का अ़ोहद कर लिया है। वजह वही जो ह़ज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बयान की जब किसी ने उन से पूछा कि खाना ह़ज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के यहाँ और नमाज़ ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के यहाँ किस वजह से तो फ़रमाया कि खाने में मज़ा वहाँ और नमाज़ में मज़ा यहाँ आता है। यही कुछ मेरा भी ह़ाल है पीर स़ाहब क़िब्ला से फ़रमाया : यूपी के उ़लमा के लिए दुआ़ करो और वहाँ का दौरा करो कि वहाँ इ़ल्म ख़ूब है,मगर रूह़ानियत व अदब व तवाज़ेअ़ नहीं साथ वालों को ताकीद की कि देखो अ़ज़ीमुलमुरत्तब शैख़ और आ़लम होकर किया तवाज़ेअ़ और सादगी है कुछ सीखो,स़िद्दीक़ी लाइब्रेरी देख कर ख़ूश हुए और चन्द कुतुब का नाम तहरीर करवाया कि ह़वाला के लिए यहाँ रुजूअ़ करना होगा।

अफ़सोस हमारे बीच से यह इ़ल्म व हिकमत का सूरज 14 मुहर्रमुल ह़राम 1434 हिजरी/29 नवम्बर 2012 ई बरोज़

हफ़्ता 3 बजे रहमत ऐज़दी की बदलियों में रुपोश हो गया।

हश्र तक शाने करीमी नाज़बरादरी की अबरे रहमत उन के मरक़द पर गोहरेबारी करे।

**मुफ़्तिए आज़म राजिस्थान हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अश्फ़ाक़ हुसैन नईमी**

(शैख़ुलहदीस व मुफ़्ती दारुलउ़लूम इस्हाक़िया जोधपुर) लिखते हैं :

हामिदन व मुस्लियन व मुस्लिमन : अम्मा बाद आज बतारीख़ 24,शअ़बान 1419 हिजरी 14 दिसम्बर 1998 ई. बरोज़ शुम्बा मुबारका दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया मौज़ा सूजा शरीफ़ ज़िला बाड़मेर राजस्थान में ह़ाज़िरी हुई यह सर ह़द से सिर्फ़ पाँच किलोमीटर के फ़ास़ले पर रेत के टिलों के दरमियान वाक़ेअ़ है,रास्ता दुश्वार गुज़ार था मगर अब पीर स़ाह़ब की कोशिश से पुख़्ता सड़क तअ़मीर हो रही है,सिर्फ़ सात किलोमीटर टकड़ाबाक़ी है,यह हिस्सा भी जल्द मुकम्मल होगा, इस दाारुलउ़लूम के बानी ह़ज़रत पीरे त़रीक़त मौलाना ग़ुलाम हुसैन स़ाह़ब जीलानी हैं,ह़ज़रत के अन्दर दीनी ख़िदमात का जज़बा बे पनाह है,अपने अस्लाफ़ की याद ताज़ा कर रहे हैं,इस वक़्त दारुलउ़लूम के अन्दर 125 बेरूनी हैं जिन के तआ़म व क़ियाम का इन्तेज़ाम सब दारुलउ़लूम की त़रफ़ से होता है,और लड़कियों के लिए एक मदरसा गाँव में क़ाइम कर दिया है,इस में चन्द लड़कियाँ बेरूनी हैं बक़िया मक़ामी हैं।

दारुलउ़लूम का यह जल्सा जश्ने दस्तार फ़ज़ीलत ह़ज़रत पीर सय्यद क़ुत्बे आ़लम उ़र्फ़ दादा मियाँ स़ाह़ब क़ुद्दिसा सिर्रुहु के मज़ार शरीफ़ के क़रीब और ह़ज़रत बानी दारुलउ़लूम के वालिद स़ाह़ब के उ़र्स के मौक़े पर होता



है,जल्सा का समाँ बड़ा रूहानी और पुर कैफ़ था बस यह मअ़लूम होता है कि मौसमे बहार की आमद है,मजमअ़ कसीर तअ़दाद में है जिधर निगाह जाती है आदमी ही आदमी नज़र आते हैं,मैं अहले ख़ैर ह़ज़रात से अपील करता हूँ कि ज़्यादा से ज़्यादा अपने इस इदारा की मदद करते रहें मैं दुआ़ करता हूँ कि मौला तआ़ला दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया को सदा बाग़ व बहार रखे और इस में ऐसे फूल खिलते रहें कि आ़लम को महकाते रहे,यह गुलिस्तान मुहम्मदी दिन दूनी रात चोगुनी तरक़्क़ी करता रहे और मिस्ल बद्रे कामिल के चमकता रहे,ईं दुआ़ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

बेइस्मेही तआ़ला,आज मुअर्रख़ाा 21 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1420 हिजरी 30 नवम्बर 1999 ई को दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया ह़ाज़िर हुआ,मेरे साथ शहज़ादगान मख़दूम अशरफ़ सम्नान ह़ज़रत अ़ल्लामा अल फ़ाज़िलुलजलील हसन मियाँ स़ाह़ब क़िब्ला अशरफ़ी अल जीलानी जाइस और ह़ज़रत मख़दूम गिरामी क़द्र ह़ज़रत डॉक्टर सय्यद मसऊ़द अशरफ़ स़ाह़ब क़िब्ला फ़रज़न्द अरजमन्द ह़ज़रत मुजाहिद दौराँ अ़ल्लामा सय्यद मुज़फ़्फ़र हुसैन स़ाह़ब क़िब्ला अ़लैहिर्रहमा जलवा गर इज्लास हुए,दारुलउ़लूम की वसीअ़ ज़मीन व तक़रीबात का रूह़ परवर मन्ज़र व तअ़लीम व तअ़ल्लुम का पुख़्ता देख कर सभी के दिल बाग़ बाग़ हो गए,इस दौर इफ़्तादा ख़ित्ता अर्ज़ में ऐसा शान्दार,अ़ज़ीमुश्शान इदारा चलाना जूए शेर लाने से कम मुश्किल अम्र नहीं,यह सब कुछ ह़ज़रत मख़दूम ज़ादा ह़ज़रत अल्लामा सय्यद अश्शाह ग़ुलाम

रेगिस्तान को नख़्लिस्तान में तब्दील कर दिया है। हर तरफ़ ससे अल्लाहु अकबर की सदा बुलन्द हो रही है। यह ख़ित्ता भी अपनी तक़दीर पर फ़ख़्र करता हुआ नज़र आ रहा है। अहले ख़ैर हज़रात इस इदारे की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते रहें हज़रत पीर साहब क़िब्ला ने मुस्तक़बिल के लिए एक मन्सूबा का ज़िक्र किया यानी दारुलउ़लूम की जदीद एमारत और सीकन्डरी स्कूल का नक़्श सफ़ा क़िरतास पे आ चुका है अब इस को इमारत की शक्ल में लाना ज़रूरी है,इन्शाअल्लाहुलअज़ीज़ मुस्तक़बिल म बहुत जल्द इस नुक़्शा के मुताबिक़ इमारत बन जाएगी। मौला तआ़ला ग़ैब से मदद फ़रमाए मेरी दुआ़ है कि यह इदारा सदा बाग़ व बहार रहे और हज़रत पीर साहब और उन के जुमला रुफ़क़ा,असातिज़ा व तलबा को दोनों जहाँ की नेअ़मतों से माला माल फ़रमाए और हज़रत पीर साहब को उ़म्रे ख़िज़री अ़ता फ़रमाए। आमीन ई दुआ़ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद आमीन।

19 दारुलउ़लूम शअ़बान 1432 हिजरी मुताबिक़ 22 जूलाई 2011ई की हाज़िरी में लिखते हैं :

फ़ैज़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ ज़िला बाड़मेर के सालाना इज्लास व दस्तार बन्दी के मौक़े पर हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हुआ मा शाअल्लाह इस रेगिस्तान में हज़रत अल्लामा मौलाना सय्यद बापो ग़ुलाम हुसैन जीलानी ने अ़ज़ीम इदारा क़ायम कर के अहले सुन्नत पर ऐहसाने अ़ज़ीम किया है। मौला तआ़ला इस इदारा को सदा बाग़ व बहार गुल व गुलज़ार रखे और उस में ऐसे फूल खिलें जो आ़लमे इस्लाम को महकाते रहें।



हुसैन साहब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की पुर ख़ुलूस जिद्दो जिहद व पाकीज़ा काविशों का समरा है,रब्बुल इ़ज़्ज़त हज़रत बापो साहब को सदा सलामत बा करामत रखे,और मौसूफ़ की इन पाकीज़ा ख़िदमात को क़बूल फ़रमाए, और इदारा के मुआ़वेनीन व बही ख़्वाहों को रोज़ अफ़ज़ों सर फ़राज़ियाँ बख़्शे और इदारा को उ़रुजे सुरैया व रफ़अ़त निहायतुन्निहायात बख़्शे आमीन सुम्मा आमीन,कारवाने अहले सुन्नत से पुर ख़ुलूस इल्तेमास है कि इस दीनी क़िल्अ़े की इआ़नत फ़रमा कर दारैन में सुर्ख़ रू हूँ,ख़ुदावन्द तआ़ला इस के मुआ़वेनीन को सर बुलन्दियाँ बख़्शे आमीन। ई दुआ़ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

मुहम्मद अश्फ़ाक़ हुसैन नईमी,सय्यद हसन जीलानी,शेर मुहम्मद ख़ाँ रज़वी

सय्यद मसऊ़द अश्रफ़ किछौछवी अल फ़क़ीर वली मुहम्मद नईमी 30,11,1999

17 शअ़बान 1429 हिजरी मुताबिक़ 120 आगस्त 2008 ई की हाज़री में लिखते हैं कि मुतअ़द्दिद बार हाज़िर हुआ मा शाअल्लाह जंगल में मंगल का समाँ बना हुआ रात के वक़्त हाज़िर हुआ,पूरा इ़लाक़ा जगमगा रहा था,ऐसा महसूस होता था कि अन्वारे इलाही का नुज़ूल हो रहा है। इस वक़्त दारुलउ़लूम में तक़रीबन तीन सौ त़ल्बा हैं जिन के ख़ुर्द व नौश का इन्तेज़ाम इदारा की तरफ़ से होता है,मज़ीद बर आँ इदारे की मज़ाफ़ात में पच्चीस शाख़ें हैं। हज़रत पीरे त़रीक़त मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब जीलानी नक़्श बन्दी ने इस

अल्लाह पाक उस के बानी व रुफ़क़ा व असातिज़ा व त़लबा को दोनों जहाँ की सआ़दतों से मालामाल फ़रमाए।

19 शअ़बान 1433 हिजरी मुत़ाबिक़ 10 जूलाई 2012 ई के मुआ़यना में तहरीर फ़रमाया : एक साल के बाद दारुल उ़लूम में ह़ाज़िर हुआ मा शाअल्लाह एक साल में तअ़मीरात काफ़ी हो चुकी हैं और हो रही हैं,मौला इस इदारा को सदा बाग़ व बहार और गुले गुलज़ार रखे। इस में ऐसे फूल खिलें जो आ़लम सुन्नियत को मुअ़त्त़र करें।

मुहम्मद अश्फ़ाक़ हुसैन नईमी

ह़ज़रत मुफ़्ती स़ाहब बारहा जलसों में फ़रमाया :

जिसे ज़िन्दा वली देखना हो वह सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी को देख ले कोई माने या न माने ख़ुदा की क़िस्म में तो उन्हें ज़िन्दा वली मानता हूँ दारुलउ़लूम इस्हाक़िया के सालाना जलसा में ह़ज़रत क़िब्ला सय्यद मअ़सूम शाह जीलानी को मअ़ व फ़द ह़ज़रत मुरशिदे करीम ने भेजा मुफ़्ती स़ाह़ब बहुत ख़ुश हुए और स्टाफ़ को हुक्म फ़रमाया उन्होंने ऊपर खड़े होकरर ख़िदमत अंजाम दी सूजा शरीफ़ की जब जब दअ़वत पेश की जाती क़बूल फ़रमाते कभी मुस्तरद न की यही कहते कि सय्यद स़ाहब की दअ़वत है कैसे मुस्तरद कर सकता हूँ?एक मर्तबा आप हॉस्पिटल में थे,मगर दअ़वत क़बूल फ़रमाई कि सय्यद स़ाह़ब की दअ़वत को ज़रूर क़बूल करना पड़ेगा,अफ़सोस आप 9 ज़िलहिज्जा 1434 हिजरी 15 अक्तूबर 2013 ई बरोज़ मंगल को दारुलबक़ा की त़रफ़ कौच कर गए,انا للہ و انا الیہ راجعون



**शारेह मुअत्ता इमाम मुहम्द,हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शम्सुल हुदा मिस़्बाही उस्ताज़ जामिअ़ा अशरफ़िया मुबारकपुर यूपी**

نشکر اللہ عز وجل ونحمده على ان اتاح لنا هذه الفرصة السعيدة بمناسبة عرس الشيخ الشاه قطب العالم الجيلانى علیہ الرحمۃحتى قدمنا هناو تشرفنا بالمساهمة فيه ١٩ شعبان ١٤٢٥ھ وزرنا ،، الجامعة الصديقية،، وسعدنا بلقاء اساتذتها وطلابها ولاسيما رئيسها فضيلة الشيخ الصوفى السيد محمد غلام حسين الجيلى المؤقر طول الله جل جلاله بقائه وعمم فيوضه وهذه الجامعة قداعجبتنى حيث هى فى ثغور الهند ورغم ذلك تنجب الفضلاء والقراء وحفاظ القرآن الكريم ولاامتراء فى انه يرجع الفضل كله فى هذاالصدد الى العون الروحانى لصاحب الضريح المبارل والى سعى رئيسها الجميل فجعل الله مساعيه الجبارة مشكورة وقيض لها قبولاً حسناً وجعل مستقبلها مستقبلاً زاهراً وماهو على الله تعالى بعزيز۔

**ह़ज़रत अल्लामा मुफ़्ती कुदरतुल्लाह स़ाह़ब रिज़वी**

शैख़ुल ह़दीस दारुलउ़लूम अहले सुन्नत अ़लीमिया जम्दा शाही ज़िला बस्ती लिखते हैं :

19 शअ़बान 1421 हिजरी,10 नवम्बर 2000 ई. बरोज़ चहार शुम्बा ह़ज़रत पीरे त़रीक़त अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी नक़्श बन्दी के हुक्म पर सूजा शरीफ़ की अ़ज़ीम दर्सगाह जामिआ़ सि़द्दीक़िया के जश्न दस्तार फ़ज़ीलत में ह़ाज़िर आया। इस ख़ित्ता को देख कर स़ेहराए अ़रब याद आ गया। बिल्कुल वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ़ का नमूना नज़र आया ऐसे ख़ित्ता में एक अच्छा ख़ास़ा दारुल उ़लूम देख कर शैख़े

तरीक़त सय्यद शाह कुत्बे आलम जीलानी क़ादरी नक़्श बन्दी उर्फ़ दादा मियाँ अलैहिर्रहमा की वाज़ेह करामत नज़र आई। यहाँ आने जाने और दीगर ज़रूरियात ज़िन्दगी हासिल करने में बड़ी दुश्वारियाँ थीं लेकिन पीर साहब की पुर ख़ुलूस जिद्दो जिहद और निगाहे करम का नतीजा है कि एक मुख़्तसर सी मुद्दत में दारुलउ़लूम ने काफ़ी तरक़्क़ी की है। यह मअ़लूम कर के तबीअ़त बाग़ बाग़ हो गई। यहाँ तलबा को तअ़लीम के साथ ही उन की तरबियत पर भी ख़ास तवज्जोह दी जाती है,तलबा की लम्बी जमाअ़त को अ़मामा और इस्लामी लिबास में मलबूस और उ़म्दा आदात व अतवार से आरस्ता देख कर मअ़लूम हुआ कि यहाँ के तलबा रियाज़त व मुजाहिदा भी करते हैं मौला तआ़ला आशूब रोज़गार से महफ़ूज़ रख कर रोज़े अफ़ज़ों तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और मुख़ीर व मुख़्लिस मुसलमानाने अहले सुन्नत के क़ुलूब को इस इदारा की मदद व इआ़नत की जानिब माइले फ़रमाए।

दूसरी मर्तबा 18 शअ़बान 1424 हिजरी को लिखा कि मख़्दूम इब्ने मख़्दूम ने रेगिस्तानी सेहराओं में एक ऐसा चमन लगाया है जो मशहूर मकूला जंगल में मंगल का नमूना है। बारबार ज़ुबान पे यह शेअ़र ख़ुशा मस्जिद अल आख़िर आता है। उ़म्दा तअ़लीम व अहसन तरबियत के सबब तलबा इ़ल्म व अ़मल के संगम बन जाते हैं,सदा अफ़सोस मुफ़्ती कुदरतुल्लाह साहब भी,मुहर्रम 1434 हिजरी 13 अक्तूबर 2021 ई बरोज़ पीर ग़रीक़ रहमत हो गए।



## मुहद्दिसे कबीर हज़रत अ़ल्ल मा ज़ियाउलमुस्तफ़ा क़ादरी

बानिए जामिआ़ अम्जदिया रज़विया घोसी लिखते हैं :

आज 21 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म 1431 हिजरी को फिर सूजा शरीफ़ बाड़मेर जामिआ़ सिद्दीक़िया के सालाना इज्लास ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ व जश्ने दस्तारे फ़ज़ीलत व हिफ़्ज़ व तजवीद में शिरकत के लिए हाज़िर हुआ,ज़िम्नन जामिआ़ की क़दीम व जदीद इमारतों व दारुलकुतुब(लाइब्रेरी)और क़ियाम व रिहाइश तलबा व मुदर्रिसीन की इमारतें देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया। अल्हम्दु लिल्लाह हज़रत मौलाना सय्यद सूफ़ी ग़ुलाम हुसैन साहब ज़ैद मजदोहु ने एक बे आब व गया सर ज़मीन के तवील व अ़रीज़ ख़ित्ता पर शान्दार शहर इ़ल्म व फ़न आबाद कर दिया है। हिन्दुस्तान का आख़िरी किनारा होने की वजह से यहाँ दूर दूर तकक कोई मअ़कूल आबादी भी नहीं है। और यहाँ भी इस शहर इ़ल्म के सिवा कोई मकान नहीं है मगर सय्यद साहब की जिद्दो पैहम और तासिर अ़मल का समरा है कि एक हुसैन बुस्ताने तअ़लीम व तरबियत उन रेगिस्तानी तवद्दों और रेगज़ारों में महक रहा है। उ़लूम दीनिया की दर्सगाह हों के साथ फुनून अ़स्रिया के एक स्कूल का बाक़ायदा इन्तेज़ाम है। तलबा व मुदर्रिसीन व ज़ूयूफ़ की रिहाइश व तआ़म व असाइश से ले कर एक यूनानी दारुश्शिफ़ा की सारी सहूलियतें मुहिय्या कर दी हैं। यानी मदारिस इस्लामिया के लिए एक शान्दार नमूना तैयार है। रब्बे

क़दीर इन ख़िदमात को क़बूल फ़रमाए और रोज़ अफ़ज़ों तरक़्क़ी व इस्तेह़काम से नवाज़े। आमीन

**ख़ैरुलअज़कार,उस्ताज़ुलउ़लमा हज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही**

नाज़िमे तअ़लीमात अलजामिआ़तुलअशरफ़िया मुबारक पुर यूपी लिखते हैं :

22 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1435 हिजरी,21 जून 2014 ई. शुम्बा की शाम को दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़ी सूजा शरीफ़ में हाज़िरी का शर्फ़ ह़ासिल हुआ। बाड़मेर से यहाँ तक रेगिस्तानों और लक़ व दक़ सेहराओं का मन्ज़र देखता हुआ पहुँचा। इन रेगिस्तानों में आमद व रफ़्त भी मुश्किल मअ़लूम होती है। मगर कहीं कहीं कुछ ख़ाम,कुछ पुख़्ता मकानात भी नज़र आए। सब से ज़्यादा हैरत अंगेज़ चीज़ इस सेहरा में दारुलउ़लूम इस से मुतअ़ल्लिक़ा शान्दार इमारतें हैं। जहाँ आने जाने के तसव्वुर से आदमी को वहशत होती है। वहाँ क़ियाम का इरादा और इदारे का क़ियाम यक़ीनन हैरत अंगेज़ है। मगर बन्दे के अन्दर जज़्बा अख़्लास़ और इस्तिक़ामत कार फ़रमा हो तो रब्बे करीम की इ़नायत शामिल हाल होती है। और मुश्किलात की ज़ंजीरें कट जाती हैं। मज़ीद बरआँ अ़ज़ीम कार नामा यह है कि इस इदारे में इब्तिदा से फ़ज़ीलत तक और अ़स्री तअ़लीम में इन्टर मीडय्ट तक के त़लबा ज़ेरे तअ़लीम हैं जो ज़्यादा तर क़ुर्ब व जवार और बेरूनी मक़ामात के रहने वाले हैं। इस इदारे के ज़रीए दीन व मिल्लत और इ़ल्म व हिकमत का वह ज़बर दस्त फ़ैज़ान जारी है जो किसी सेहरा में तो दर किनार अच्छे अच्छे शोहरों में भी नज़र न आएगा।


रब्ब तआ़ला बानिए इदारा ह़ज़रत मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन जीलानी दामजुल्लुहु और इदारे के जुमला अरकान व मुदर्रिसीन और मुआ़विनीन को अपनी बे पनाह रहमतों और बरकतों से नवाज़े और इदारे को मज़ीद फ़रोग़ व इस्तेह़काम नस़ीब फ़रमाए। इस की तमाम शाख़ों को भी ज़्यादा से ज़्यादा मुतहर्रिक व फ़अ़ाल बनाए। मुझे उम्मीद है कि अगले चन्द बरसों में इस इदारे में मुतअद्दिद शोअ़बों और मज़ीद इ़मारतों का इज़ाफ़ा होगा। और बेऊनेही तआ़ला व बकरम ह़बीबेहिलआ़ला रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ियों से हम किनार होगा। والحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على حبيبه سيدالمرسلين وعلى آله وصحبه اجمعين۔

हुज़ूर मिस्बाही स़ाहब के हमराह इस साल ह़ज़रत मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन रज़वी स़ाहब दोबारा तशरीफ़ लाए। अ़ज़ीज़ मिल्लत ह़ज़रत पीर त़रीक़त अल्लामा मौलाना अ़ब्दुलह़फ़ीज़ स़ाहब सरबराहे आ़ला जामिआ़ अश्रफ़िया मुबारक पहली मर्तबा तशरीफ़ लाए जिन के हाथों जा मअ़ उम्मेहातुल मोमिनीन लिलबनात का संगग बुनियाद रखवाया गया और इदारा देख कर फ़रमाया कि तअ़मीरी काम में हम भी कुछ सीख कर जा रहे हैं।

सरबराहे आ़ला स़ाहिब को पूना में हुए"मज्लिसे शरई के 21वीं सीमनार"में बिलमुशाफ़ा मुलाक़ात के बाद सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा की दअ़वत पेश की चुनाँचेह आप और मिस्बाही स़ाहब व मुफ़्ती स़ाह़ब तीनों ह़ज़रात तशरीफ़ लाए,बहुत ख़ुश हुए,यहाँ की ख़िदमात को ख़ूब सराहा,और जामिआ़

अशरफ़िया के 22वीं सीमनार में शिरकत पर देख कर वह ख़ुशी का इज़हार फ़रमायाः इम्साल दअ़्वत पेश की इसी वक़्त ह़ज़रत मुरशिद करीम का फ़ोन भी आ गया फ़रमाया कि सरबराहे आ़ला स़ाहिब से अ़र्ज़ करें इस्माल भी आप को तशरीफ़ लाना है पस दअ़्वत कबूल फ़रमाई और इदारा के तमाम हालात से वाक़िफ़यत ह़ासिल फ़रमाई।

**सिराजुलफुक़्हा,मुहक़्क़िक़े मसाइल जदीदा ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन रज़वी**

(स़दरुलमुदर्रिसीन,जामिआ़ अशरफ़िया मुबारकपुर यूपी) लिखते हैं :

जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ ह़ज़रत शाह सिद्दीक़ुल्लाह अ़लैहिर्रहमा की त़रफ़ मन्सूब है जो जामिआ़ के मोहतमिम व रूह़ रवाँ और ख़ान्क़ाह सय्यद कुत्बे आ़लम शाह अ़लैहिर्रहमा के मौजूदा सज्जादा नशीन के ऊपर के मशाइख़ त़रीक़त से हैं। इस दर्सगाह का पहला नाम, दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़ी''है जो तरक़्क़ी कर के अब जामिआ़ सिद्दीक़िया के नाम से मौसम व मअ़्रूफ़ हो रहा है। राक़िमुलहुरूफ़ को इस दारुलउ़लूम के सालाना जलसा और उ़र्स में शिरकत के लिए मुसलसल कई साल से दअ़्वत मिलती रही है लेकिन अपनी गोना गों मस़रूफ़ियत के बाइ़स इस साल यहाँ ह़ाज़िरी का मौक़ा मिल सका यानी 19 शअ़्बान 1433 हिजरी मुत़ाबिक़ 10 जूलाई 2012 ई बरोज़ मंगल,यह दारुलउ़लूम अपने मरकज़ी शहर बाड़मेर से 125 किलोमिटर दूर रेगिस्तानी इ़लाक़ा में वाक़ेअ़् है। इस का मह़ल वक़ूअ़् एक छोटा सा गाँव सूजा



शरीफ़ है,जहाँ ग़रीब मुसलमान के 60 से 70 घर छप्पर के हैं,जो ज़्यादा तर ख़ीमा नुमा हैं और नज़र उठा कर देखते तो हर चहार जानिब रेगिस्तान ही रेगिस्तान नज़र आता है। यहाँ बच्चों की दीनी तअ़्लीम के लिए छोटा सा मकतब था। ह़ज़रत मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली दारुलउ़लूम फ़ैज़े अकबरी लूनी शरीफ़ कच्छ गुजरात से फ़ारिग़ुत्तह़स़ील होने के बाद(कई साल तक फ़ैज़े अकबरी में तदरीसी ख़िदमात और स़दारत के फ़राइज़ अंजाम देकर मुस्तअ़्फ़ी होकर)यहाँ तशरीफ़ लाए इस मकतब की ज़िम्मा दारी संभाली,तो इस में तरक़्क़ी की रूह़ फूंक दी,11 जमादिलउख़रा 1406 हिजरी 21 फ़रवरी 1986 ई को मकतब से दारुलउ़लूम की शकल दी और उसे उजे सुरय्या तक पहुँचाने की पूरी कोशिश की कसीर कमरों पर मुश्तमिल तीन मन्ज़िला इ़मारत सुरय्या की बुलन्दियों तक न पहुँच सकी, लेकिन इस की तअ़्लीम इस से कहीं ऊपर तक पहुँच गई, इस वक़्त दारुलउ़लूम के शोअ़्बा दर्स निज़ामी में 225 त़लबा हैं दर्जा ऐअ़्दादिया से दर्जा फ़ज़ीलत तक तमाम दरजात की तअ़्लीम तसलसुल के साथ जारी है। निस़ाब सात साल का है। उस के सिवा इत़फ़ाल के लिए दर्जए अव्वल से बारहवीं क्लास तक स्कूल की तअ़्लीम का भी इन्तेज़ाम है,अब तक 97 उ़लमा 128 कुर्रा और 31 हुफ़्फ़ाज़ फ़ारिग़ हो चुके हैं, जब कि इस साल 15 उ़लमा और 13 कुर्रा मज़ीद फ़ारिग़ हो रहे हैं, एक लक़ व दक़ रेगिस्तानी इ़लाक़ा में दारुलउ़लूम क वसीअ़ व अ़रीज़ और पुर शुकूह इ़मारत की तअ़्मीर और अ़स्री व दीनी तअ़्लीम का

बन्दो बस्त बिलाशुबह हज़रत सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन साहब दाम ज़ुल्लुहुलआली के हसन नज़्म व नस्क़। बे पनाह जिद्दो व जिहद और अख़लास़ व लिल्लाहियत का मज़हर है। एक बार हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत रहमतुल्लाह अ़लैहि ने अपने एक शागिर्दे रशीद को हिदायत फ़रमाई थी :

**यह किया इरतेक़ा की दलील जो चमन को तूने चमन बनाया**

**वहाँ करो चल के बाग़बानी जहाँ कोई शाख़ तर नहीं है**

हज़रत सय्यद साहब ने उसे बिल्कुल सच कर दिखाया मैंने दारुलउ़लूम का एक जाइज़ा लिया तो बेसाख़्ता यह शेअ़र ज़बान पर जारी हो गया:

कुदरत की ज़रा देखिए सनअ़त कारी इस रेगिस्तान में हुआ इ़ल्म का चश्मा जारी कश्मीर जन्नत नज़ीर के तब्लीग़ी दौरे से वापस होकर दो रोज़ हज़रत सय्यदी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के जवारे अक़दस में गुज़ारे,फिर वहाँ से उ़लमा के एक नूरानी क़ाफ़ले के हमराह बाड़मेर होता हुआ 19 शअ़बान 1433 हिजरी 10 जूलाई 2012 ई बरोज़ मंगल साढ़े बाराह बजे इहाता दारुलउ़लूम में दाख़िल हुआ तो एक तरफ़ एक अ़ज़ीमुश्शान मस्जिद सिद्दीक़ी और दूसरी तरफ़ दारुलउ़लूम की पुर शुकूह इमारत देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया,ज़हर की नमाज़ मस्जिद सिद्दीक़ी में बाजमाअ़त अदा की,फिर ज़हराना तनावुल कर के क़ैलूला किया यहाँ के असातिज़ा व त़लबा और इन्तेज़ाम कारों में जज़बा इताअ़त का जो मन्ज़र देखा वह कम देखने को मिलता है,जलसे में कसीर उ़लमा व मशाइख़ ने शिरकत फ़रमाई जो



सय्यद साहब के हुस्ने अख़्लाक़ की वाज़ेह दलील है :

**हुजूम क्यों है ज़्यादा शराब ख़ाने में**

**फ़क़त यह बात है कि पीर मग़ाँ है ख़लीक़**

दुआ़ है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस जामिआ़ को सदा बहार रखे। इस का चश्मा इ़ल्म हमेशा जारी रहे और दूर दूर तक ख़ल्क़े ख़ुदा इस से फ़ैज़याब होती रहे और हज़रत सय्यद साहब की सर परस्ती में यह ख़ूब ख़ूब फलता फूलता रहे और अ़वाम अहले सुन्नत से गुज़ारिश है कि दिल खोल कर इस का तआ़वुन फ़रमाए। अल्लाह पाक आप को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए। आमीन

## हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अय्यूब रिज़्वी

सदरुलमुदर्रिससीन जामिआ़ इस्लामिया रोनाही फ़ैज़ाबाद यूपी फ़रमाते हैं :

20 शअ़बान 1436 हिजरी बरोज़ मंगल दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़ी हज़रत अ़ल्लामा सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन साहब क़िब्ला मद्दे फ़ैज़ा की दअ़वत पर हाज़िरी हुई,सालो से इदारा के तअ़ल्लुक़ से सुनता रहा कि छप्परों में एक ख़ुबसूरत इदारा दीन व सुन्नियत का सिर्फ़ काम नहीं कर रहा है बल्कि उ़लमा व फ़ुज़्ला व हुफ़्फ़ाज़ व कुर्रा की बेहतरीन तअ़लीम दी जा रही है। आज देखा तो मेरी आँखें खुली की खुली रह गईं और दिल ने कहा कि कुछ नहीं यह सिर्फ़ बानी इदारा की काविश व करामत है यक़ीनन यह उन की दीनदारी और अख़लास़ का नतीजा है।

दुआ़ है कि मौला तआ़ला उस इदारा को दिन दूनी रात

चौगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और बानी इदारा को से़हत व सलामती के साथ क़ाइम रखे ताकि दीन का यह क़िलआ़ हमेशा इस्लाम व सुन्नियत का काम करता रहे। आमीन

**ह़ज़रत अल्लामा मुफ़्ती मसऊ़द अहमद बरकाती**

मुदर्रिस जामिआ़ अशरफ़िया मुबारक पुर यूपी लिखते हैं :

रब तआ़ला का बे पनाह करम व ऐहसान है कि आज वहाँ आने का इत्तेफ़ाक़ हुआ जिस का ज़िक्रे ख़ैर उ़लमाए किराम की ज़ुबानी अकसर सुनते रहते थे। एक लक़ व दक़ से़हरा में दारुलउ़लूम फ़ैज़ सि़द्दीक़ी सूजा शरीफ़ का क़ियाम देख कर दिल बहुत ख़ुश हुआ। ऐसे रेगिस्तान में इतने शान्दार दारुलउ़लूम का क़ियाम जिस में तअ़लीम के साथ त़लबा की तरबियत का मअ़कूल इन्तेज़ाम हो किसी बुज़ुर्ग और मर्दे ख़ुदा की करामत ही कही जा सकती है। इस त़रह़ का नज़्म व नस्क़ और तरबियत बहुत कम इदारों में नज़र आती है। मेरे अपने ख़्याल के मुता़बिक़ मदारिस के मुन्तज़ीमन को इस त़रह़ के मदारिस देख कर अपने अपने मदारिस में तब्दीलियाँ लाने की ज़रूरत है इस इदारा के बानी सा़हिबुल फ़ज़ीला ह़ज़रतुश्शैख़ सय्यद ग़ुलाम हुसैन सा़हब मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली जो शरीअ़त व त़रीक़त के जामेअ़ हैं उन के अख़्लास़ व लिल्लाहियत और फ़िक्र व तदब्बुर और अन्थक कोशिशों का नतीजा है कि इतनी क़लील मुद्दत में यहाँ एक इ़ल्म व अ़मल का शहर आबाद हो गया है और इस नाचीज़ को जो चीज़ सब से ज़्यादा मुतास्सिर कर रही है वह उन की दीनी ह़मीयत व ग़ैरत है,यह



अपने मुरीदीन व मुतवस्सेलीन को अपने लिए नहीं बल्कि दीनी ख़िदमात के लिए इस्तेअ़माल करते हैं। इस ज़माने में आप की मिसाल किब्रीत अहमर जैसी है। मुझे रब तआ़ला के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि इस इदारे के तमाम मन्सूबों को पाया तक्मील तक पहुँचाएगा और इन्शाअल्लाह तआ़ला मुस्तक़बिल में भी अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ता रहेगा।

मेरी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इस इदारे के बानी ह़ज़रत पीरे त़रीक़त अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन सा़हब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली और उन के तमाम असातिज़ए किराम व त़लबा व मुआ़वेनीन व मुख़्लिस़ीन की जिद्दो जिहद को क़बूल फ़रमा कर उसे सआ़दते दारैन का ज़रीआ़ बनाए और मज़ीद तौफ़िक़ात ख़ैर से नवाज़े।

**रईसुलक़लम ह़ज़रत अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही**

बानी रारुलक़लम देहली लिखते हैं।

18/शअ़बान 1427 हिजरी 12 सितम्बर 2006 ई. को जामिआ़ सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ ज़िला बाड़मेर सौ़बा राजस्थान की ह़ाज़िरी व ज़ियारत हुई असातिज़ा व त़लबा से मुलाक़ात व गुफ़्तगू हुई एक बा फ़ैज़ बुज़ुर्ग ह़ज़रत सय्यद शाह क़ुत्बे आ़लम उ़र्फ़ दादा मियाँ रहमतुल्लाह अ़लैहि यहाँ आराम फ़रमा हैं,दारुलउ़लूम का जलसा दस्तार बन्दी और उ़र्स मुबारक की तक़रीबात मुश्तरिक त़ौर पर हुऐं।

शैख़े त़रीक़त ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम हुसैन क़ादरी, नक़्श बन्दी,चिश्ती की ज़ात सतूदा सि़फ़ात के अख़्लास़ व सर गरमी से ख़ान्क़ाह व दारुलउ़लूम पूरे इ़लाक़ा में दीनी व

तब्लीग़ी ख़िदमात का एक वसीअ़ व अ़रीज़ दाइरा है,त़लबा को दर्सी तअ़लीम के साथ उन की तरबियत की त़रफ़ भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है। तस़व्वुफ़ का रंग यहाँ के पूरे माह़ौल पर ग़ालिब और ह़ावी है और ऐसा होना भी चाहिए कि यह जीलानी व नक़्श बन्दी सिलसिला वाले इत्तेबाअ़ सुन्नत व शरीअ़त के इम्तेयाज़ी वस़्फ़ के ह़ामिल हैं,ख़ान्क़ाहों और मदारिस के अन्दर यह वस़्फ़ ज़्यादा से ज़्यादा नुमाया होना चाहिए ताकि त़लबा और अ़म्मतुल मुस्लिमीन इस्लाम व सुन्नत अ़मली पैरवी कर के उन की बरकतों से ज़्यादा से ज़्यादा आरास्ता हो सकें।

लूनी शरीफ़ ज़िला कच्छ से अपने ह़ल्क़ा मुरीदीन का दौरा करते वक़्त ह़ज़रत दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा का जब विस़ाल हुआ और शुजाअ़ शरीफ़ में तदफ़ीन हुई तो उस के अन्दर भी लूनी शरीफ़ के अस्रात व बरकात का ज़ोहूर हुआ और अब अल्हम्दु लिल्लाह यहाँ मस्जिद व मदरसा व ख़ान्क़ाह तीनों चीज़ें मौजूद हैं।

**ख़ुशा मस्जिद व मदरसा ख़ान्क़ाह है**
**कि दरवे बूद क़ील क़ाल मुहम्मद**
**स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम है**

हैरत है कि सुन्नी अस़्हाब सरवत की इस दारुलउ़लूम की त़रफ़ अब तक ख़ात़िर ख़्वाह तवज्जोह न हो सकी जहाँ ऐसे तीन सौ त़लबा मुक़ीम और ज़ेरे तअ़लीम हैं। जिन की मुकम्मल किफ़ालत दारुलउ़लूम के ज़िम्मा है यही वजह है कि काफ़ी मुश्किलात से दो चार होने के बाद दारुलउलूम अब



जाकर किसी ह़द तक अपने पाँव पर खड़ा हो सका है। अगर अस़्हाब ख़ैर दस्त तआ़वुन दराज़ करें ते यहाँ से तअ़लीम व तरबियत का काम बड़े पैमाना पर हो सकता है और इस्लाम व सुन्नियत की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत हो सकती है। रब्बे काइनात अपने ह़बीबे पाक स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े व तुफ़ैल में दारुलउ़लूम को शबब व रोज़ तरक़्क़ियों से नवाज़े और उस के सभी सर परस्तों और असातिज़ा व त़लबा व मुआ़वेनीन को अपने ह़िफ़्ज़ व अमान में रखे। आमीन

**ह़ज़रतत अल्लामा इन्तेज़ार अहमद स़ाहब क़ादरी**

सिक्रेट्री ऑल इन्डिया मुस्लिम परसनल्ला बोर्ड व स़दर उ़लमा कोंसिल बरेली शरीफ़ लिखते हैं :

12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1432 हिजरी 16 फ़रवरी 2011 ई.चहार शुम्बा को पीरे त़रीक़त,रहबरे शरीअ़त,पास्दारे मअ़रफ़त ह़ज़रत अल्लामा शाह सय्यद ग़ुलाम हुसैन जीलानी ज़ादाहुल्लाहु शरफ़न व मजदन के हुक्म पर मुहिब्बे गिरामी ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद सि़द्दीक़ स़ाहब के ज़रीए जामिआ़ सि़द्दीक़ियाा ह़ाज़िर हुआ,रूहानी मन्ज़र देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया,वाक़ेई हुज़ूर जीलानी स़ाह़ब की सई पैहम और जहद मुसलसल ने स़ेहरा को गुलशन बना दिया है, आ़लीशान इ़मरात,दिलकश मुनाज़िर,दीदाा ज़ैब ख़ान्क़ाह,उ़म्दा लाइक़ व फ़ाइक़ असातिज़ा,तअ़लीम व तरबियत से आरास्ता त़लबा, स़ाहब सज्जादा की करामत और उन के ख़ुलूस़ की मुंह बोलती तस़व्वुर हैं,तमाम तर अ़मला निहायत ही बा अख़्लाक़ मुहज़्ज़ब और अपने फ़राइज़ मन्स़बी की सबकदोशी में हमा

तन मस़रूफ़ है। बारगाहे रब्बे क़दीर में दस्त बदुआ हूँ कि मौला तआला हुज़ूर स़ाहिबे सज्जादा और उन के रुफ़क़ाए कार मुआ़वेनीन उ़लमा व त़लबा के फ़लक पैमा ह़ोस़लों को तांबनाक अरजमन्दी अ़त़ा करे। आमीन

**फ़ख़्रे स़हाफ़त ह़ज़रत अल्लामा मौलाना मुबारक ह़ुसैन मिस़्बाह़ी**

एडीटर माहनामा अशरफ़िया मुबारकपुर लिखते हैं :

18 शअ़बान 1427 हिजरी मुत़ाबिक़ 12 दिसम्बर 2006 ई. को मुरशिदे त़रीक़त सय्यद क़ुत़्बे आ़लम शाह जीलानी उ़र्फ़ दादा मियाँ नूरुल्लाह मरक़दहू के उ़र्से मुबारक और दारुल उ़लूम फ़ैज़े सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा दस्तारबन्दी में शिरकत का मौक़ा मिला। यह आबादी सूजा शरीफ़ के नाम से मुतआ़रफ़ है रेगिस्तान के वसीअ़् स़ेहरा में इस ख़ान्क़ाह में जंगल में मंगल का मन्ज़र देखने को मिला। एक आ़रिफ़ रब्बानी के क़ुदूम मैमनत लुज़ूम से रेगिस्तान से इ़ल्म व रूह़ानियत का चश्मा उबल पड़ा है और एक आ़लिम अपनी इल्म की तिश्निगी बुझा रहा है,यह सब ह़ज़रत सय्यद क़ुत़्बे आ़लम शाह जीलानी़ी के रूहानी फ़ैज़ और पीरे त़रीक़त ह़ज़रत अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह दामत बरकातोहुमुल आ़लिया की मुसलसल मुख़्लिस़ाना जिद्दो जिहद का नतीजा है।

आज आ़म त़ौर पर मदारिस में तअ़्लीम तो है मगर तरबियत का फ़ुक़्दान है। लेकिन यह दारुलउ़लूम चुंकि एक ख़ान्क़ाह के दामन में है और शैख़े त़रीक़त इ़ल्म दोस्त और पैकरे अख़्लाक़ हैं इस लिए उनका इल्मी व रूहानी असर पूरे दारुलउ़लूम पर अबरे रहमत की त़रह़ छाया हुआ है।



असातिज़ा और त़लबा इन्तेहाई मुअद्दब,बुलन्द अख़्लाक़,इ़ल्म परवर और त़रीक़त की ख़ुशबूओं से सरशार हैं और दअ़्वत व तब्लीग़ का जज़्बा जिन्नों ख़ैज़,उन के दिल व दिमाग़ में समाया हुआ है। इस का असर है कि इन्तेहाई बे सरो सामानी के आ़लम में उन्होंने बदअ़क़ीदगी के ख़िलाफ़ इ़ल्म बुलन्द कर रखा है। अगर इस इदारा व ख़ान्क़ाह ने अपना तअ़्लीमी व तब्लीग़ी सफ़र जारी न किया होता तो यह इ़लाक़ा बदअ़क़ीदगी के सैलाब की ज़िद में आकर अहले सुन्नत के हाथों से छूट चुका होता। जलसा व उ़र्स के नज़्म व नस्क़ ने भी दिल पर गहरा असर डाला,त़लबा व असातिज़ा में ज़ौक़ मुतालअ़् व तह़क़ीक़ पूरी त़रह़ बेदार है। लाइब्रेरी का निज़ाम और तहरीर व तक़रीर का ज़ौक़ त़लब भी अपने शबाब पर है। अगर यह इ़ल्मी व तब्लीग़ी कारवाँ पीरे त़रीक़त की क़यादत में इस त़रह़ रवाँ दवाँ रहा तो इन्शाअल्लाह बहुत जल्द राजस्थान से गुजरात तक उस के गिरां क़द्र असरात महसूस करेंगे।

10 जूलाई 2012 ई. की ह़ाज़िरी में लिखाः ख़ादिम मुतअ़द्दिदद बार ह़ाज़िर हो चुका है,बानीए इदारा पीरे त़रीक़त ह़ज़रत अल्लामा सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन शाह दामत बरकातोहुमुलआ़लिया ने जिस अख़्लास़ व तदब्बुर से इस इदारा को तरक़्क़ियों के मराह़िल से गुज़रा है।। हर बार नई नई इ़मारतें देख कर दिल ठंडा और आँखें पर नूर हो जाती हैं। ख़ास़ बात यह कि रेगिस्तान में मराह़िल त़ै करते इस क़िला के इर्द गिर्द दूर दूर तक वसाइल नज़र नहीं आते हम

इस को इस मर्दे दरवैश की करामत ही कह सकते हैं। मअ्लूम हुआ कि इदारे ने दूर दराज़ इलाक़ों को अपने तब्लीग़ी दाइरे में दाख़िल कर लिया है और अब हर तरफ़ सुन्नियत की बहारें नज़र आ रही हैं। अब ज़रूरत है क़ौम के बे लौस और मुख़्लिसाना तआवुन की। और बेपनाह मुबारकबादियों के मुस्तहक़ हैं। वह अहले ख़ैर जिन्होंने अब तक अपना तआवुन जारी रखा,आइए हम सब मिल कर उस कारवाँ की हौसला मन्दियों और कामरानियों के लिए दुआ करें और हम मैं से जो जिस लाइक़ है उस तआवुन के लिए आगे आए और एक बा फ़ैज़ पीरे तरीक़त के घिने साया में दारैन की सआदतों से सर फ़राज़ हों। अल्लाह तआला सब को उस की तौफ़ीक़े ख़ैर अरज़ाँ फ़रमाए। आमीन

**मुनाज़िरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद मतीउ़र्रहमान मुज़तर रिज़वी**

किशनगंज बिहार व अल्लामा डॉक्टर हसन रज़ा पटना बिहार लिखते हैं :

20 शअ्बान 1436 हिजरी बरोज़ मंगल दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़ी हाज़िर हुई दारुलउ़लूम को देख कर हैरत भी हुई और मुसर्रत भी। हैरत इसलिए हुई कि रेगिस्तान और बंजर कोर्दा इलाक़ा में ऐसा शान्दार इदारा जो देखने के बाद किसी भी तअ्लीम याफ़्ता को गरवीदा बनाले,मुसर्रत इस लिए हुई कि जमाअ़ते अहले सुन्नत को जिस क़िसम के मरकज़ी इदारा की ज़रूरत थी हज़रत पीर तरीक़त अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब मुद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने क़ाइम कर के सुन्नियों का मेअ्यार बुलन्द कर दिया है। अल्लाह तबारक व



तआ़ला हज़रत का फ़ैज़ जारी व सारी फ़रमाए। आमीन

**ख़तीबे हिन्द हज़रत अल्लामा उ़बैदुल्लाह ख़ान साहब आज़मी**

साबिक़ मिम्बर पार्लेमेन्ट देहली लिखते हैं :

19 शअ्बान 1429 हिजरी मुताबिक़ 122 अगस्त 2008 ई को सूजा शरीफ़ जामिआ़ सिद्दीक़िया बाड़मेर में हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हुआ। इस जंगल में मंगल का समाँ क़ाबिले दीद है,हज़रत पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब क़िब्ला के ईसार व कुरबानी का जज़्बा दीदनी है,तअ्लीमे इस्लामी के फ़रोग़ की ख़ातिर जिस तरह उन्होंने शब व रोज़ वक़्फ़ कर के उस के नताइज का इज़हार फ़रमाया है, उस के पेशे नज़र हर साहिबे नज़र को यह कहना पड़ता है :

**चमन में फूल खिलना तो कोई बात नहीं**
**ज़हे वह फूल जो गुलश्न बनाए सेहरा को**

मुसलमानो से अपील करता हूँ कि इस इदारा को हर मुम्किन ख़िदमत कर के इल्मे दीन को आगे बढ़ायें।

**हज़रत अल्लामा जामेअ् मअ्कूल व मन्कूल मुहम्मद हाशिम नईमी**

व शैख़ुलहदीस हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अय्यूब नईमी जामिआ़ नईमिया मुरादाबादी यूपी लिखते हैं :

आज 22 शअ्बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हिजरी 13 अगस्त 2009 ई बरोज़ पीर आ़लमे इस्लाम की अ़ज़ीमुलमुरत्तब शख़्सियत पीर तरीक़त शैख़ मअ़रफ़त सूफ़ी बा सफ़ा हुज़ूर मौलाना सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब जीलानी की दअ्वत पर

दारुलउ़लूम फ़ैज़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा दस्तार फ़ज़ीलत में शिरकत की सआ़दतें ह़ासिल हुई, बेफ़ज़्लेही तआ़ला इज्लास अपनी पूरी शान इम्तेयाज़ी के साथ तारीख़ी और मिसाली काम्याबियों से हम किनार हुआ उसी मुबारक व मसऊ़द मौक़े पर दारुलउ़लूम के त़लबा का तअ़्लीमी व तरबियती जाइज़ा लेने का भी इत्तेफ़ाक़ हुआ, बेहम्देही तआ़ला त़लबा के अन्दर ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला और असातिज़ा किराम के मुख़्लिस़ाना ईसार क भरपूर जलवा दिखाई दिया,ज़ौक़े तअ़्लीम की फ़रावानी,अहकामे शरइ़य्या की पाबन्दी का जज़्बा बेकराँ,अपने बुज़ुर्गों का ऐहतराम,अ़क़ीदा व मसलक की पास्दारी,त़लबा के अन्दर यह तमाम ख़ूबियाँ ह़ज़रत पीरे त़रीक़त के फ़ैज़ान की आइना दार हैं। दूसरी ह़ाज़री 19 शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1433 हिजरी मुत़ाबिक़ 10 जूलाई 2012 ई.बरोज़ मंगल हुई इस में लिखते हैं : इदारा का तअ़्लीमी व तरबियती उ़रूज व इर्तेक़ा,पुर शुकूह और वसीअ़ व अ़रीज़ इ़मारत और हर त़रह़ का मेअ़्यारी नज़्म व नस्क़ देख कर यह अन्दाज़ा हुआ कि ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला का चश्मा फुयूज़ व बरकात जंगल में मंगल पैदा करने का मिस्दाक़ बना हुआ है। ह़ज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अय्यूब  स़ाह़ब नईमी लिखते हैं :

मज़कूरा ह़क़ीक़त की तस्दीक़ के साथ इस ह़क़ीक़त को ज़ाहिर कर देना चाहता हूँ कि जिस इदारा की उसास में अख़्लास़ की दौलत शामिल हो उस को मन्ज़िले इर्तेक़ा पर आना यक़ीनी है,ह़ज़रत बानिए जामिआ़ सिद्दीक़िया मज़हरे शान



सियादत अ़ल्लामा अल्हाज सय्यद शाह ग़ुलाम हसैन मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली का अख़लास़ इदारा की तअ़्मीर व तरक़्क़ी से ज़ाहिर है।

**नबिरए अल्लामा आ़ज़मी ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज मौलाना फ़ैज़ुलहक़ आ़ज़मी** स़दरुलमुदर्रिसीन फ़ैज़ुलउ़लूम मुहम्मद आबाद गोहना लिखते हैं :

मैं मुसलसल तीन साल से देख रहा हूँ कि इस स़ेहरा में ह़ज़रतत पीर सय्यद कुत्बे आ़मल शाह उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा के मज़ार पुर अन्वार पर दूर दराज़ से इ़शाक़ कुशाँ कुशाँ परवाना वार चले आते हैं,यह मन्ज़र देख कर शेअ़्र याद आता है :

**स़बा ने दी मेरे वहशी की क़ब्र पर जारूब**
**पिंये त़वाफ़ बगोले को हज़ार बार आए**

किताबों में अस्लाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ जो पढ़ा,यहा आकर देखा,ऐसा महसूस होता है कि हम कई स़दियाँ पहले ज़र्री में पहुँच गये हैं। त़लबा व मुदर्रिसीन को तवाज़ेह का पैकर और निहायत मुन्कसरुल मिज़ाज पाया। बेहम्देही तआ़ला सूजा शरीफ़ की यह तरबियत गाह इ़ल्मी सीना, इ़ल्म सफ़ीना और दारुलअ़मल तीनों का मजमा है किसी ने उस की मदह़ सराई करते हुये कहा है :

**ज़हे मस्जिद व मदरसा व ख़ान्क़ाह है**
**कि दरवे बूद क़ील व क़ाल मुहम्मद**

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम

सिलसिला आ़लिया नक़्श बन्दिया से मेरा रूहानी राब्ता

होने की वजह से एक ख़ास़ लज़्ज़तत से लुत्फ़ अन्दोज़ हुआ। मदारिस के तअ़ल्लुक़ से मेरा मिज़ाज यह था कि मदारिस को मुआ़शिरा से अलग थलक क़ाइम किया जाए और तस़व्वुफ़ की तअ़लीम व तरबियत का भी ज़रूर ख़्याल किया जाए। मुझे अपनने इस मिज़ाज का इम्तेयाज़ सूजा शरीफ़ में नज़र आया,बेपनाह मुसर्रत हुई क्योंकि त़लबा व मुदर्रिसीन के अख़्लाक़ व आदाब में तरबियत का पूरा पूरा असर नज़र आया।

19 शअ़बान 1433 हिजरी की ह़ाज़िरी में लिखा : एक साल के वक़्फ़ा में पूरे दारुलउ़लूम का नक़्शा ही कुछ और हो गया इस स़ेहरा व बयानात में इ़ल्म व इ़रफ़ान का यह चम्निस्तान बिला शुबह ह़ज़रत पीर त़रीक़त अल्लामा अल्हाज अश्शाह सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाहब क़िब्ला के फ़ैज़ान इश्क़ व अख़लास़ और ख़ुसूसी तरबियत का जलवा है।

**मन्स़ूरे मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना मन्स़ूर अ़ली रज़वी**

(ख़त़ीब बड़ी मस्जिद मदनपुरा मुम्बई)लिखते हैं।

18 शअ़बा 1421 हिजरी,15 नवम्बर 2000 ई. बरोज़ बुध मुफ़्ती कुदरतुल्लाह स़ाह़ब जम्दाशाही की मुईत में ह़ाज़िर हुआ। ह़ज़रत आ़लीजा व आ़ली मन्ज़िलत शैख़े त़रीक़त पीर सय्यद हुसैन स़ाहब क़िब्ला नक़्श बन्दी ने उन रेगिस्तानी इलाक़ा में इ़ल्मे दीन का ऐसा गुलशन खिलाया है कि हर देखने वाला मा शाअल्लाह,सुब्हानल्लाह कहता है। त़लबा में तअ़लीमी ज़ौक़,इस्लामी आदाब व तहज़ीब,असातिज़ा की मेहनत तो है ही ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला की सुबह व शाम की मेह़नत और



जिहद मुसलसल व सई पैहम का यह दर अस़ल समरा है कि दारुलउ़लूम सि़द्दीक़िया का फ़ैज़ रवाँ दवाँ है। पीर सय्यद कुत्बे आ़लम शाह स़ाहब के मज़ार की ज़ाहिरी करामत कि दारुलउ़लूम दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहा है। तदरीस व तअ़लीम,तरबियत व तअ़मीर, सारे उमूर नुमायाँ हैं। इस स़ेहरा में इ़ल्म का गुलशन महक रहा है और आने वाली नस्लों को महकाता रहेगा। मौला तआ़ला कुलूबे अहले सुन्नत में इस इदारा की मोहब्बत और तआ़वुन का जज़्बा पैदा फ़रमाए। मुख़ीरे फ़य्याज़ इल्मे दोस्त ह़ज़रात से पुर ज़ोर गुज़ारिश करूँगा कि दारुलउ़लूम फैज़ सि़द्दीक़िया का दिल खोल कर तआ़वुन फ़रमाएं और दारैन की बरकात व हसनात ह़ासि़ल फ़रमाए।

बड़े अफ़सोस की बात है कि मन्सूरे मिल्लत इस दारे फ़ानी से 22 ज़िलहिज्जा 1436 हिजरी 7 अक्तूबर 2051 ई. को बरूद ज़ुब्दा मुम्बई में कौच कर गए। اناللہوانااليہراجعون۔

**हज़रत अल्लामा मुफ़्ती क़ारी ज़हीरुद्दीन ख़ाँ रिज़वी**

ख़तीब व इमाम इस्माईल हबीब मस्जिद व सदरुल मुदर्रिसीन दारुलउ़लूम मुहम्मदिया मुम्बई लिखते हैं :

19 शअ़बान 1433 हिजरी 10 जूलाई 2012 ई.सेह शुम्बा को जामिआ़ सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ ह़ाज़री का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ। इदारा की बुलन्द व बाला फ़लक बौस इ़मारत, उ़लमा व त़लबा की कार कुर्दगी,अमरा व अ़क़ीदत मन्दों की ग़ैर मअ़मूली वाबस्तगी देख कर बे पनाह मुसर्रत हुई। आज ही एक अ़ज़ीमुश्शान मस्जिद का इफ़्तेताह भी होने जा रहा है,स़ेहरा में

गुलिस्तान की बहार यह किसी मर्दे दरवैश की नज़र कीम्या असर का नतीजा है,सरमाया दारी तो मुझे दूर दूर तक नज़र नहीं आई। दुआ़ है कि यह चमन हमेशा हरा भरा रहे। आमीन वापस जा कर अहले मुम्बई के सामने तआ़रुफ़ फ़रमाया,सफ़रा की हाज़री में लोगों से कहा कि सूजा शरीफ़ वाले पीर स़ाहब जो बड़े पीर स़ाहब के दामाद हैं जिन को देख कर बड़े पीर स़ाहब क़िब्ला की याद ताज़ा हो जाती है। ख़ुदा के बन्दे का अख़लास़ इस क़द्र देखा कि रवांगी में यह भी न कहा कि मेरे इदारे का ख़्याल रखना, जमिअ़तुलविदा में इशाअ़ती इ़लान और तआ़रुफ़ पेश फ़रमाया। बे ह़द ख़ुशी जताई और बारबार ह़ज़रत क़िब्ला को सलाम कहा।

**अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद शाकिर अ़ली नूरी रज़वी**
(अमीरे सुन्नी दअ़्वते इस्लामी मुम्बई) लिखते हैं :

अल्हम्दुलिल्लाह यह मुबारक मौक़ा हाथ आया कि सुन्नी दअ़्वते इस्लामी के ख़ादिम की हैसियत से दारुल उ़लूम फ़ैज़े स़िद्दीक़िया के सालाना जश्ने दस्तार फ़ज़ीलत और बुख़ारी शरीफ़ के रूह़ानी माह़ौल में शिरकत करने की सआ़दत हास़िल हुई।

**फूल खिलते हैं पढ़ पढ़ के स़ल्ले आ़ला**
**झूम कर कह रहीं है बादे स़बा**
**ऐसी ख़ुश्बू चमन के गुलों में कहाँ**
**जो नबी के पसीने में मौजूद है**

के मिस्दाक़ इस वीरान और ग़ैर आबाद इ़लाक़े में इ़ल्मे दीन की बहारें देख कर क़ल्बी इत़्मीनान हुआ और बे पनाह



मुसर्रत ह़ासिल हुई कि नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की वरासत तक़्सीम करते हैं,पीर त़रीक़त सय्यद ग़ुलाम हुसैन जीलानी ने बे ह़द फ़य्याज़ी से काम लेते हुए दारुलउ़लूम फ़ैज़ स़िद्दीक़िया के तवस्सुत़ से अ़वामुन्नास तक इ़ल्मे दीन की तरवीज व इशाअ़त का जो अ़ज़्म किया है अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े उन्हें इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए फ़क़त वस्सलाम।

19शअ़्बानुलमुअ़ज़्ज़म 1433 हिजरी की हाज़री में लिखते हैं : अल्हम्दु लिल्लाह सरकारे रहमत आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े व तुफ़ैल फ़ैज़ान स़िद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बशकल जामिआ़ स़िद्दीक़िया देखने का मौक़ा मिला,अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ख़ूब तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

मुहम्मद शाकिर आ़ली नूरी
ख़ादिम सुन्नी दअ़्वत इस्लामी

**हज़रत मौलाना मुहम्मद मुख़्तारुलहसन क़ादरी बग़दादी**

अलहदीस दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रा मुहम्मद पूर फ़ैज़ाबाद

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نحمدہ و نصلی و نسلم علی رسولہ الکریم و علی آلہ و اصحابہ اجمعین

कि स 73 आज मुअर्रख़ा 18 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म 1427 हिजरी मुताबिक़ 12 सितम्बर 2006 ई. बरोज़ सेह शुम्बा दारुलउ़लूम फ़ैज़े सि़द्दीक़िया के सालाना जलसा दस्तार बन्दी व उ़र्स कुत्बे आ़लम अ़लैहिर्रहमा के मौक़े पर शुजाअ़ शरीफ़ हाज़िर हुआ,असातिज़ा व त़लबा दारुलउ़लूम से मिलाक़ात का शर्फ़ हासि़ल हुआ जिन के अख़लाक़,तवाज़ेअ़ और शरई उमूर की पास्दारी देख कर यह ऐहसास हुआ कि यक़ीनन यह हज़रात अपने मुरशिदे आ़ला और मुरब्बीए ख़ास़ पीरे त़रीक़त हज़रत अल्लामा पीर ग़ुलाम हुसैन स़ाहब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की ज़ेरे क़ियादत इस ख़ित्ते अर्ज़ में एक अ़ज़ीम इस्लामी इन्क़ेलाब पैदा करने वाले हैं। यह पूरा इ़लाक़ा जिन के बाशिन्दे बज़ाहिर निहायत सादा लौह़ मअ़्लूम होते हैं और उन में दीनी व मिल्ली,शऊ़र व बेदारी का भी ऐह़सास होता है। जहाँ तअ़्लीम व तरबियत इस्लाम की ज़रूरत का भरपूर ऐहसास होता है शायद यही वजह है कि कुत्बे आ़लम ने अपनी आख़िरी आराम गाह के लिए यह जगह पसन्द फ़रमाई बेहम्देही तआ़ला यह इदारा व ख़ान्वादा इस ज़रूरत की तक्मील और कुत्बे आ़लम अ़लैहिर्रहमा के ख़्वाब की तअ़्बीर में



तन मन व धन लगे हुए हैं,अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाए आमीन बिला शुबह पीरे त़रीक़त हज़रत अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाहब क़िब्ला अपने पेदरे बुज़ुर्गवार के स़ही वारिस व जानशीन हैं और الولد سر لابیہ का मिस्दाक़ भी जिन्होंने अपनी जिद्दो जिहद और मुख़्लिस़ाना कोशिशों से इस बे आब व ग्याह रेगिस्तान को इस्लामी इ़ल्म व अमल का लाला ज़ार बना दिया हर सिम्त रूहानियत ही रूहानियत नज़र आती है,अल्लाह तबारक व तआ़ला इस ख़ान्क़ाह व दारुलउ़लूम व बरकात को आ़म से आ़म तर फ़रमाए और ह़ज़रत पीर स़ाहब का साया हम सब पर ता देर क़ाइम रखे। आमीन بجاہ حبیبہ الکریم علیہ افضل الصلوۃ و التسلیم۔

मुहम्मद मुख़्तारुलहसनक़ादरी बग़दादी फ़ैज़ाबाद

ह़ज़रत अल्लामा मौलाना रिज़वान अहमद नूरी शरीफ़ी

शैख़ुलअदब दारुलउ़लूम अहले सुन्नत शम्सुलउ़लूम व बानिए जामिआ़ बरकातिया घोसी लिखते हैं :

18 शअ़बान 1434 हिजरी को पहली मर्तबा हाज़िर नहीं हुआ बक्लि इस से पहले बारहा हाज़री हो चुकी है और जब जब हाज़िर हुआ यहाँ की तअ़्लीम व तरबियत से ज़रूर मुतास्सिर हुआ जंगल में मंगल की मिस्ल सुनते थे मगर यहाँ आकर इस को अपनी आँखों से देखा। दारुलउ़लूम हज़ा के मुअ़ल्लेमीन व मुदर्रिसीन बा स़लाहियत और इन्तेहाई मेहनती और मुख़्लिस़ हैं,इन की मेहनत व अख़्लास़ का जलवा यहाँ के त़लबा के आ़दात व अत़वार में नज़र आ रहा है,दर्सगाहों में

हाज़िरी और रातों में मुतालअ् व नमाज़े पंजगाना की पाबन्दी जो यहाँ नज़र आती है आ़म तौ़र से हमारे मदारिस में नज़र नहीं आती है इस सेहरा में दीन का शान्दार क़िला जो दीन मतीन और इस्लाम व सुन्नियत के फ़रोग़ में रात दिन मसरूफ़ है। यह नतीजा है हमारे मुह़सिन व करम फ़रमा पीरे त़रीक़त रहबरे शरीअ़त ह़ज़रत अल्लामा अश्शाह अस्सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाह़ब क़िब्ला افاض الله علينا من بركاته की सई बलीग़ और अख़्लास व लिल्लाहियत का जिन के क़दमे मुबारक की बरकतें सिर्फ़ सूजा शरीफ़ में नहीं बल्कि राजस्थान के गोशे गोशे में नज़र आ रही हैं अल्लाह तआ़ला अपने हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े व तुफ़ैल में इस चमनिस्ताने इल्म व अदब को रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और इस के बानी व सरबराहे आ़ला हुज़ूर पीरे त़रीक़त मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की उ़मर में बरकत अ़ता फ़रमाए और उन का फ़ैज़ आ़म व ताम करे। आमीन

**उस्ताज़ुलअसातिज़ा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ ख़ाँ रज़वी**

सदरुल मुदर्रिसीन जामिआ़ नूरिया रज़विया व बानी इमाम अहमद रज़ा एकेडमी बरेली शरीफ़ लिखते हैं :

आज मुअर्रख़ा 18 शअ़बान 1434 हिजरी,28 जून 2013 ई.बरोज़ जुमा मुबारका सूजा शरीफ़ ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई। मुद्दते दराज़ से सुना था कि इस मुख़्तसर सी आबादी वाली बस्ती में आले रसूल के ख़ान्दान के अ़ज़ीम फ़रज़न्द ने इल्म व इरफ़ान की एक शमआ़ रौशन की है जिस



की रौशनी से एक आ़लिम मुनव्वर हो चुका है,यहाँ की ह़ाज़िरी के बाद महसूस हुआ कि जो कुछ सुना था इस से बद्रेजहाँ फ़ज़ों यहाँ का फ़ैज़ आ़म व ताम है। रेत के पहाड़ों के दामन में जहाँ एक दरवैश और मर्दे क़लन्दर ह़क़ आगाह फ़रज़न्द ग़ौसे आ़ज़म ह़ज़रत सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान का मुबारक आस्ताना है वहीं इल्म व दानिश का एक शहर बनाम जामिआ़ सिद्दीक़िया क़ाइम व आबाद है जिस की पुर शुकूह एमारतें आने वालों को दअ़वत नज़ारा देती हैं। उस के साथ ही ख़ुसूसियत की ह़ामिल जो चीज़ देखी वह त़लबा की आ़ला तअ़लीम के साथ अच्छी तरबियत है। जो आज कल आ़म तौ़र पर हमारी दानिश गाहों में बहुत कम है। यह तमाम चीज़ें यूँही नहीं बल्कि एक मुद्दत मुदीरा तक जिद्दो जिहद और पुर ख़ुलूस मसाई के ज़रीए मन्सबा शहूद पर जलवा गर होने वाला इदारा फ़रज़न्द ग़ौसुलवरा स़ाह़ब सिद्दक़ व स़फ़ा ह़ज़रत बा बरकत मौलाना सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन स़ाहब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली का अ़ज़ीम कारनामा है जो आप ने अपने मुहिब्बीन व रुफ़क़ा कार के ज़रीए अंजाम दिया है। यहाँ तीन सौ त़लबा के क़ियाम व तआ़म का मअ़कूल इन्तेज़ाम है और दो दरजन के क़रीब असातिज़ा तअ़लीमी उमूर अंजाम देने में मसरूफ़ अ़मल हैं। मौला तबारक तआ़ला इस गुलशन इल्म व इरफ़ान को सदा बहार फ़रमाए और यौमन फ़यौमन से तरक़्क़ियात से नवाज़े।

**हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुलमन्नान कलीमी**

मुफ़्तिए शहर मुरादाबाद यूपी व स़दरे मज्लिस उ़लमाए हिन्द व बानिए जामिआ़ इस्लामिया कलीमिया लिखते हैं।

मैं ज़माना त़ालिबे इ़ल्मी में और बादोहु अपने उस्ताज़ अल्लामा बहरुलउ़लूम मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान स़ाह़ब से लूनी शरीफ़ व सूजा शरीफ़ का ज़िक्रे जमील सुना करता था। ख़ुस़ूस़न सय्यदुस्सआ़दात शहज़ादए सय्यदिना ग़ौसे आ़ज़म आ़लिमे रब्बानी आ़रिफ़ यज़दानी पीरे त़रीक़त रहबरे शरीअ़त ह़ज़रत अल्लामा मौलाना क़िब्ला सय्यद शाह ग़ुलाम हुसैन स़ाह़ब क़ादरी जीलानी नक़्श बन्दी इत़ालल्लाहु उ़मरा का शहर ज़हिन में सबत था 1990 ई. में डीसा में मुलाक़ात पर यह ज़िक्रे जमील मुशाहिदा में तब्दील हुआ फिर जब 10 रबीउ़लग़ौस 1435 हिजरी 11 फ़रवरी 2014 ई ता 14 रबीउ़लग़ौस मुसलसल पाँच रोज़ सूजा शरीफ़ में ख़ित़ाब के सिलसिला में क़ियाम रहा। तो यह मुशाहिदा ह़क़्क़ुलयक़ीन बन गया। ह़ज़रत क़िब्ला की इन्क़ेलाब आफ़रीं इल्मी व अ़मली और रूहानी ज़ाते गिरामी में मैंने किया देखा और उन की अन्मिट यादगार जामिआ़ स़िद्दीक़िया और तहरीक स़िद्दीक़ी में किया पाया। उस को कमा ह़क़्क़ोहु स़फ़ा क़िरत़ास पर लाना स़िर्फ़ मुश्किल ही नहीं बल्कि मुश्किल तरीन है। एक वसीअ़ व अ़रीज़ ज़मीने मुक़द्दस पर जामेअ़ मस्जिद स़िद्दीक़ी,जामिआ़ स़िद्दीक़िया की तीन मन्ज़िला दर्सगाह की बिल्डिंग और फ़लक



बोस दूसरी इमारत तीन मन्ज़िला हॉस्टल और आ़लीशान मक़बरा शरीफ़ और उन के मुतअ़ल्लेक़ात इमारात का तारीख़ी तसलसुल एक चम्निस्ताने इल्म व अदब और हमा गीर ख़ित्ता फ़िक्र व तस़व्वुफ़ का हसीन मन्ज़र पेश करता है। राक़िमुस्सुतूर हिन्दुस्तान के हर स़ौबा में ह़ाज़िर हुआ और तक़रीबन हर बड़ी इ़ल्मी व अ़मली शख़्स़ियत से नयाज़े अ़क़ीदत की सआ़दत से बहरा वर हुआ और हर बड़ी दर्सगाह इल्म व फ़न का निहायत क़रीब से जाइज़ा लिया लेकिन इल्म व फ़ज़्ल,रुश्द व हिदायत, तब्लीग़ दीन मतीन,शरीअ़त व त़रीक़त का इम्तेज़ाज,इ़ल्मे ज़ाहिर व बात़िन की हम आहंगी,फ़िक्र व तसव्वुफ़,अ़मल व किरदार,मरदुम साज़ी,और अ़मली तरबियत के हसीन जलवे जो मैंने यहाँ देखे वह अपनी मिसाल आप हैं। मैं यहाँ पाँच यौम के क़ियाम में ह़ज़रत क़िब्ला सय्यदुस्सआ़दत की मस़रूफ़ तरीन ज़िन्दगी को देख कर नतीजा क़ाइम किए बग़ैर न रह सका कि वह न स़िर्फ़ फ़र्द हैं बल्कि पूरी अंजुमन हैं और मुकम्मल त़ौर पर अ़ज़ीम तरीन तहरीक और अपने इस्लाफ़ किराम की अ़दीमुलमिसाल यादगार हैं,सूजा शरीफ़ का पूरा इलाक़ा निहायत रतीला और उस क़द्र संगलाख़ कि दूर दूर तक आबादी का नाम व निशान नहीं और इस पे मज़ीद ऐसे अ़वारिज़ व मवानेअ़ कि खुली फ़ज़ा में इस्लाम व सुन्नियत और इ़ल्म व फ़न का काम करना लौहा चिबाने से ज़्यादा मुश्किल है,लेकिन सय्यदिना ग़ौसे आ़ज़म और सय्यदिना ख़्वाजा नक़्शबन्द व दीगर मशाइख़े एज़ाम और औलियाए किराम ख़ुस़ूस़न आप के वालिद माजिद फ़रज़न्दे

ग़ौसे आज़म सय्यदिना क़ुत्बे आलम शाह उ़र्फ दादा मियाँ और उन के मुरशिद व मुरब्बी शाह मुहम्मद इस्हाक़ पागारा बादशाह अ़लैहिमुर्रहमा के फ़ुयूज़ात व बरकात ने आप के हर अ़ज़्म को हौस़ला अ़ता किया और अपनी हिकमत बालिग़ा व नाफ़िआ़ से इस सुनसान व अजनबी जंगल को ऐसा मंगल बनाया जो हमेशा के लिए शहरिस्ताने इल्म व अदब बन गया। आप ने अपनी तहरीक सि़द्दीक़ी के प्लेटफ़ार्म से ऐसी तरबियत उ़ज़्मा फ़रमाई कि लोग औलियाए किराम के दीवाने अपना सब कुछ उन के नाम पे लुटाने वाले बन गए। जामिआ़ के असातिज़ा व अ़मला व तहरीक के अरकान व मुआ़वेनीन की आ़जिज़ी व इन्केसारी और फ़रोतनी और यहाँ के त़लबा की तअ़लीमी व तरबियती सरगरमियों ने फ़क़ीर को बेह़द मुतास्सिर किया। यहाँ के फ़ारेग़ीन फ़ुज़्ला व क़ुर्रा व हुफ़्फ़ाज़ में नीज़ ह़ज़रत क़िब्ला के मुरीदीन व मोअ़तक़दीन में मैंने दीन की जो वारफ़्तगी पाई वह दूर दूर तक कहीं नहीं मिली,वाक़ेई ह़ज़रत क़िब्ला वक़्त के जुनैद व शिब्ली हैं और इमाम रब्बानी व ग़ौसे आ़ज़म के सच्चे जानशीन हैं और उन की ज़िन्दा यादगार हैं।

**ह़ज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अश्रफ़ क़ादरी**

शैख़ुलहदीस जामिआ़ अकरमुलउ़लूम मुरादाबाद यूपी लिखते हैं :

ज़हे नस़ीब कि आज बतारीख़ 12 अक्तूबर 2002 ई बरोज़ पीर, पीरे त़रीक़त,गुले गुलज़ार सियादत,ह़ज़रत अल्लामा



अश्शाह सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाहब मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली,बानी दारुल उ़लूम फ़ैज़े सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ के इदारा के सालाना जलसा में ह़ाज़िरी हुई बक़ौल कसे,जंगल में मंगल,इल्म व इ़रफ़ान की इस वादी को इस मक़ौला का स़ही मिस्दाक़ पाया। इस मुबारक मौक़ा से हिन्दुस्तान के जय्यद उ़लमाए किराम व मशाइख़े एज़ाम की ज़्यारत का भी शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ। ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला की दीनी व मिल्ली ख़िदमात ना क़ाबिले फ़रामौश हैं और सब से बढ़ कर ख़ुशी इस बात की है कि ह़ज़रत मौसूफ़ ने कुछ और राजस्थान में जो इस्लामी व रूह़ानी तहरीक शुरू की और जो इस वक़्त पूरे शबाब पर है तहरीक की बुनियाद मसलके अहले सुन्नत पर रखी है। यहाँ ह़ाज़िर होने के बाद ग़ैर मअ़मूली त़ौर पर क़ल्ब व जिगर को सुकून मिला। मा शाअल्लाह यहाँ के असातिज़ा किराम व त़लबा में अख़्लास़ व मोहब्बत व जज़्बा ख़िदमत उ़लमा कूट कूट कर भरा हुआ है। और इस में ह़ज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला की कामिल तरबियत व रूहानियत कार फ़रमा है। मैं दुआ़ गो हूँ कि मौला तआ़ला अपने हबीबे पाक स़ाहिबे लौलाक स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े में दारुलउ़लूम को दिन दूनी रात चोगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और पीर स़ाह़ब क़िब्ला की उ़मर में बरकतें अ़ता फ़रमाए। आमीन

**हज़रत मौलाना मुफ़्ती वली मुहम्मद रज़्वी बासनी हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद सईद अश्रफ़ी बासनी हज़रत मौलाना अबूबक्र साहब अश्रफ़ी बासनी हज़रत मौलाना हाफ़िज़ुल्लाह बख़्श अश्रफ़ी बासनी हज़रत मौलाना मुहम्मद हनीफ़ रिज़्वी शैरानी आबाद और हज़रत मौलाना प्यार मुहम्मद रिज़्वी शैरानी आबाद ज़िला नागौर राजस्थान।**

19 शअ़बान 1421 हिजरी 16 नवम्बर 2000 ई. की हाज़िरी के वक़्त लिखते हैं :

आज बरोज़ शुम्बा बतारीख़ 22 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1418 हिजरी मुताबिक़ 23 दिसम्बर हुज़ूर सय्यदी शाह अ़ल्लामा सय्यद मुहम्मद कलीम अश्रफ़ साहब जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली व हुज़ूर मुफ़्ती आ़ज़म साहिब क़िब्ला राजस्थान मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की क़ियादत में दारुलउ़लूम फ़ैज़े सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ हाज़िरी की सआ़दत हासिल की बेहम्देही तआ़ला दारुलउ़लूम हज़ा पैकरे अख़्लास व अख़्लाक़ जमीला के हामिल हज़रत क़िब्ला गिरामी पीर तरीक़त हज़रत सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब ज़ैद लुत्फ़ुहू की सर परस्ती व ऐहतेमाम से चल रहा है इदारा ऐसे मक़ाम पर क़ाइम है कि दूर दूर तक रेत के टीले हैं ज़रूरियात रोज़ीना बदुश्वारी यहाँ मयस्सर हैं,ऐसे हालात में दीनी क़िला चलाना मर्दे आहन ही का काम है। दरगाह शरीफ़ में उ़र्स के मरासिम,सालाना जलसा तलबा का प्रोग्राम,ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ व दस्तार फ़ज़ीलत मुनाज़िर देख कर तबीअ़त बाग़ बाग़ हो गई। मौला



तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इस चमने मुस्तफ़ा अ़लैहिस्सलात वस्सलाम को सदा बाग़ व बहार रखे,रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। आमीन बजाहे सय्यदिल मुरसलीन अ़लैहित्तहया वस्सना अ़वामे अहले सुन्नत से पुर ज़ोर अल्फ़ाज़ में अपील करता हूँ कि इदारा हज़ा का दामे,दरमे,क़दमे,सुख़्ने भरपूर तआ़वुन कर के सआ़दते दारैन हासिल करें वली मुहम्मद रिज़्वी,ख़ादिम सुन्नी तब्लीग़ी जमाअ़त बासनी नागौर,शैरे मुहम्मद ख़ाँ रिज़्वी मुहम्मद फ़ैय्याज़ अहमद रिज़्वी,अहकरुन्नास सगे दरगाह जीलानी मुहम्मद अबूबक्र अश्रफ़ी अलक़ादरी दूसरी हाज़री में यह हज़रात लिखते हैं :

दारुलउ़लूम फ़ैज़े सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा में शिरकत हुई,शहज़ादए ग़ौसुलवरा हज़रत मुजाहिदे सुन्नियत पीरे तरीक़त आ़ली मरतब पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की ज़ेरे सर परस्ती यह इदारा रोज़ व शब तरक़्क़ी की जानिब गामज़न है,तलबा में तअ़लीमी नज़्म व नस्क़ नीज़ अख़्लाक़ व आदाब देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया। इदारा हज़ा सर हद्दी इलाक़ा का एक इम्तियाज़ी हैसियत का इदारा है। इम्साल उ़लमा व क़ुर्रा और हुफ़्फ़ाज़ वाफ़िर तअ़दाद में फ़ारिग़ हो रहे हैं। नीज़ पूरे दो सौ तल्बा ज़ेरे तअ़लीम हैं जिन की किफ़ालत का पूरा ज़िम्मा अहले इदारा पर है,जिस नहर पे यह इदारा हज़रत पीर साहब मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की ज़ेरे सर परस्ती अपनी ख़िदमात अंजाम दे रहा है उम्मीद है कि मुस्तक़बिल क़रीब में इस इदारा को

मरकज़ी हैसियत हासिल होगी। अह़बाबे अहले सुन्नत से गुज़ारिश है कि अपने इदारा का तआवुन दिल खोल कर पेश करते रहें ताकि दीन व सुन्नत `का ताज महल रोज़ व शब तरक़्क़ी करता रहे।

18 शअ़बान 1422 हिजरी 5 नवम्बर 2001 ई. के मुआयना में ह़ज़रत मौलाना अबूबक्र लिखते हैं :

पीछले कई सालों से इस दीनी इदारा के सालाना इज्लास में शिरकत का शर्फ़ ह़ासिल हो रहा है अल्हम्दु लिल्लाह रब्बिलआलमीन यह इदारा रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी करता जा रहा है राजस्थान का रेगिस्तान अब इल्मे दीन मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम का नख़्लिस्तान बन चुका है। फ़ज़ीलत व तजवीद में फ़रागत हुई बच्चों का प्रोग्राम भी शान्दार रहा मअ़लूम होता है कि यहाँ से जफ़ाकश मुबल्लिग़ीन पैदा किए जा रहे हैं यह सब हुज़ूर सय्यद कुत्बे आलम शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा का फ़ैज़ है। दीगर मदारिस की बनिस्बतत यहाँ का तअ़लीमी ज़ौक़ व शौक़ और तरबियती निज़ाम बहुतत उ़म्दा पाया।

18 शअ़बान 1424 हिजरी,15 अक्तूबर 2003 ई के मुआयना में लिखा :

किताबों में आलियाए किराम की बेशुमार करामात के वाकिआत या तो आप ह़ज़रात ने देखे होंगे या फिर सुने होंगे। मगर एक फ़रज़न्द रसूल स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम आ़लिम बा अ़मल ह़ज़रत अल्लामा मौलाना सय्यदुश्शाह ग़ुलाम हुसैन स़ाहिब जीलानी नक़्श बन्दी ने ऐसी जगह इस्लाम का



एक शजर लगाया है जहाँ चारों त़रफ़ रेत के टीले हैं और दुश्वार गुज़ार माह़ौल है इस में उसे अपनी गिराँ क़द्र काविशों और भर पूर कोशिशों से आगे बढ़ाते रहे। ह़ज़रत सय्यद कुत्बे आलम शाह जीलानी उ़र्फ दादा मियाँ का कच्चा मज़ार और बरसों तक झोंपड़ों में चलने वाले मदरसा को ऐसा पुख़्ता बनाया है आज हर एक को दअ़वत नज़ारा दे रहा है यह शान्दार,आन्दार और फ़क़ीदुल मिसाल दर्सगाह यक़ीनन किसी का ख़ून जिगह रंग लाया है। लोगों के लिए नया हौस़ला और जौश भर देने वाला यह कारनामा आवाज़ दे रहा है कि :

कारे नीस्त कि आसाँ न शूद
मर्दे बायद कि हर असाँ न शूद
चमन में फूल जो गुलशन बनाए स़ेहरा को
ज़हे वह फूल जो गुलशन बनाए स़ेहरा को

इस इदारा को तआवुन पेश करना जिहाद अकबर है। फ़ैज़ सि़द्दीक़ी का परचम आज आस्मानों में लहरा रहा है और फ़रज़न्दे रसूल स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के लिए हर सुन्नी यह कहता हुआ नज़र आ रहा है।

फ़िदाइयत का ह़क़ आल नबी ने कर दिया पूरा
यह जज़्बा सब में होता है मगर इतना नहीं होता

17 शअ़बान 1426 हिजरी 22 सितम्बर 2005 ई. के मुआयना मुस़द्दक़ा मुफ़्ती आ़ज़म राजस्थान अ़ल्लामा मुफ़्ती अश्फ़ाक़ हुसैन स़ाहब नईमी अ़लैहिर्रहमा में लिखते हैं : जामिआ सि़द्दीक़िया सूजा शरीफ़ ह़ाज़िरी का शर्फ़ ह़ासि़ल हुआ,हुज़ूर मुफ़्तिए आ़ज़म राजस्थान की क़ियादत में बाद नमाब़

अ़स्र वफ़्द जब सूजा शरीफ़ पहुँचा तो देख कर महसूस हुआ गोया ई़द का मन्ज़र है। दिन भर दारुलउ़लूम के त़ल्बा का प्रोग्राम चला जो ख़ूब से ख़ूब तर रहा है। बाद नमाज़े मग़्रिब ज़िला कलकटर बाड़मेर व तह़सील दार स़ाहिबान व दीगर ज़िम्मेदारान भी तशरीफ़ लाए उन का  प्रोग्राम हुआ,राकि़म ने त़लबा की मज़ीद ज़रूरियात से उन्हें अपने बयान में आगाह किया,उन्होंने यह ऐ़लान किया कि सह सब काम हो जायेंगे,बादोहु उ़लमाए किराम के बयानात का सिलसिला रात के तीन बजे तक जारी रहा,उन रेत के धौरों में फै़ज़ान सय्यद कुत्बे आ़लम कि़ब्ला जीलानी का रवाँ दवाँ होना यक़ीनन ह़ज़रत शाह सि़द्दीकु़ल्लाह अ़लैहिर्रहमा की ज़िन्दा जावैद करामत है कि जामिआ़ सि़द्दीकि़या रौशनी का अ़ज़ीम मीनार बन कर जगमगा रहा है,हुज़ूर सय्यदी पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी स़ाह़ब सज्जादा के ख़ुलूस़ और मोहब्बत के साथ साथ जांफिशानी का नतीजा है कि यह इदारा इ़लाक़ा का बेमिसाल इदारा बन चुका है। बरादराने अहले सुन्नत से अपील है कि फ़रज़न्दे रिसालत  मा अब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जो चिराग़ जलाया है और ख़ून जिगर से सींचा है जो शमअ़ फ़िरोज़ा बन कर इलाक़ा को रौशन कर रहा है उस के लिए दिल व जान से तआ़वुन पेश फ़रमाऐं।

21 शअ़बान 1428 हिजरी की ह़ाज़िरी  में लिखा :

रहमत भरी मजलिसों में शिरकत की ग़र्ज़ से सुनी तब्लीग़ी जमाअ़त बासनी और शीरानी आबा दावर गोटन के वफ़ूद के हमराह सूजा शरीफ़ ह़ाज़िरी हुई अल्हम्दुलिल्लाहि



रब्बिलआ़लमीन यहाँ इल्म व अमल की एक अ़ज़ीमुश्शान और मिसाली तअ़्लीम व तरबियत दी जाती है जिस की मिसाल मिलना मुह़ाल है तअ़्लीम के साथ साथ तरबियत का यह आ़लम कि देख कर आँखें ठन्डी और दिल मसरूर होते हैं, 30 के क़रीब शाख़ें क़ाइम कर के यह इदारा छोटी छोटी बस्तियों में दन व सुन्नियत की ख़िदमत में मस़रूफ़ है। इस इदारा का जितना हो सके तआ़वुन ज़रूरी है कि वहाबियत के तूफ़ान से टकराने और सुन्नियत के परचम की बुलन्दी की ज़मानत यह इदारा है ह़ज़रत पीर सय्यद अश्शाह ग़ुलाम हुसैन जीलानी कि़ब्ला के होस़्लों को दाद देना चाहिए कि ऐसे बंजर इलाक़ा में अ़ज़ीमुल मरतबत दर्सगाह चला रहे हैं। 22 शअ़बान 1429 हिजरी की ह़ाज़िरी में लिखा ह़ाफ़िज़ुल्लाह बख़्श स़ाह़ब,अल्हाज अ़ब्दुर्रहमान,अलहाज मुहम्मद अस्लम अलहाज मुहम्मद सि़द्दीक़,अल्हाज मुहम्मद अकबर,अल्हाज मुहम्मद इस्माईल,,के हमराह ह़ाज़िरी हुई एक इंसानों का सैलाब था। जो आस्ताना पे अक़ीदत में मस्त था। यह चिराग़ था जवाब शमअ़ बनचुका है इस चम्निस्तान अ़ली के फूल ने स़ेहरा को गुलशन बना दिया है जंगल को चम्निस्तान मुहम्मदी जामिआ़ सि़द्दीकि़या से नख़्लिस्तान बना दिया है यह फै़ज़ सि़द्दीकि़या शम्अ़ा मुहम्मदी है। उसे रौशन करने के लिए अहले सुन्नत ख़ूबब तआ़वुन करें।

20 शअ़बान 1431 हिजरी की ह़ाज़िरी में लिखा :

सि़द्दीकी़ फै़ज़ान का रौशन व ताब्नाक मन्ज़र देखा, रेलीते पहाड़ों घरे सूजा शरीफ़ पे दरवैश सि़फ़त आ़शिके़ रसूल

स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रज़न्दे बतूल ने क़दम किया रखा कि इस रेगिस्तान को नख़्लिस्तान बना दिया। ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन ने फ़लक बोस इ़मारत और इस में क़ाबिले तक़लीद तअ़लीम व तरबियत जारी फ़माकर वह ह़ैरत अंगेज़ ख़िदमत अंजाम दी कि अल्फ़ाज़ से उसे बयान नहीं किया जा सकता सच स़ादिक़ आता है जो कहा गया है :

जहाँ पहुँचे ज़मी को आस्माँ से कर दिया ऊँचा
जहाँ गये दरोदीवार का नुक़्शा बदल आए

सुब्ह़नल्लाह बकरियाँ चराने वालों को आ़लिम फ़ाज़िल के साथ साथ बारहवीं तक अ़स्री तअ़लीम से आरास्ता कर रहे हैं। बीस साल से देख रहा हूँ जिनता तआ़वुन उस इदारा का किया जाए कम है। खुदावन्दे करीम इस चम्निस्ताने मुहम्मदी को नज़रे बद से बचाए। आमीन

19 शअ़बान 1432 हिजरी को लिखा : अ़माम क समन्दर मौजें मार रहा है। उ़लमा व मशाइख़ की मुक़तदिर हस्तियाँ मुल्क के कोने कोने से इस त़रह़ खींचे हुये तश्रीफ़ फ़रमा हुए गोया रूहानी त़ाक़त उन्हें यकजा कर रही है। जो एक मर्तबा आया बार बार आने की तमन्ना लेकर रवाना होता है वाक़ेई़ कुदरत ने अ़ज़ीम मक़ाम इस इदारा को अ़त़ा फ़रमाया है।

मौलाना प्यार मुहम्मद रिज़वी प्रन्सिपल मकातिब सुन्नी तब्लीग़ी जमाअ़त बासनी 16 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1428 हिजरी मुत़ाबिक़ 110 अप्रेल 2007 ई को जामिआ़ सिद्दीक़िया के



शोअ़बा तहरीक व तब्लीग़ की''फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़ कमेटी'' के मातिह़त चल रहे मकातिब के मुआ़यना व मुत़ालअ़ के बाद मुआ़यना रजिस्टर में तहरीक सिद्दीक़ी की कार कुर्दगियों के मुतअ़ल्लिक़ तहरीर करते हैं : ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद यअ़कूब स़ाहब रज़वी मुबल्लिग़े सुन्नी तब्लीग़ी जमाअ़त शीरानी आबाद व क़ारी मुहम्मद आफ़ताब स़ाहब ख़त़ीब जामेअ़ मस्जिद गोटन नागोर शरीफ़ की मुई़त में जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़ ज़ाहिरी का शर्फ़ ह़ासिल हुआ नमाज़ मग़्रिब से इशातक की मज्लिस ज़िक्र व फ़िक्र और यहाँ के असातिज़ा ज़विलऐहतराम व अ़ज़ीज़ त़लबा का ज़ौक़ बन्दगी क़ाबिले रश्क है। बा फ़ैज़ आस्ताना आ़लिया हुज़ूर सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़्वान का रूहानी फ़ैज़ अबरे रहमत बन कर बर्स रहा है। यह वह दोबारा आ़ली जाह है जिस से एक आ़लिमे फ़ैज़ पा रहा है। चम्निस्ताने ज़ोहरा के महकते हुए फूल ह़ज़रत बाबरकत अ़ल्लामा व मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली वन्नूरानी मोहतमिम इ़दारा हज़ा ने अपनी मसाई जमीला से इस इदारा को मकतब से जामिआ़ बना दिया है। आज रेत के उन पहाड़ों के दरमियान तीन सौ त़लबा का जम्मे ग़फ़ीर दूर व दराज़ और क़ुर्ब व जवार से हुस़ूल इ़ल्म व अदब के लिए यहाँ मौजूद है डेढ़ दरजन असातिज़ा की बा स़लाह़ियत टीम तअ़लीम के साथ तरबियत से अ़ज़ीज़ त़लबा को आरास्ता करने में मस़रूफ़ है। तरबियत यहाँ की अपनी मिसाल आप है सिद्दीक़ी रंग में रंगे हुए हैं।

पीर स़ाहब किब्ला के हुक्म की तअ़मील करते हुए मुसलसल चार रोज़ मौलाना मुहम्मद रहीम स़ाहब अकबरी मुदर्रिस जामिआ़ सि़द्दीकि़या की सर बराही में मज़ाफ़ात सूजा शरीफ़ और इलाक़ा खावड़ में चल रही शाख़ों और इदारा हज़ा का तअ़लीमी जाइज़ा लिया,इन की तअ़दाद तीस है। उन में से अक्सरियत उन मकातिब की है जिन का तअ़लीमी रिज़ल्ट बहुत ख़ूब है कुछ मकातिब वह हैं जो ह़ाल ही में शुरू हुए हैं,घास फूंस से बने हुए मकातिब में बेहतर से बेहतर तअ़लीम हो रही है। कि़ब्ला पीर स़ाहब को मुतहरिक व फ़ुआ़ल मुदर्रिसीन की नूरानी जमाअ़त मिली है। इस जमाअ़त के उ़लमा व मुदर्रिसीन इसी मरकज़ से तरबियत याफ़्ता हैं।

तहरीके सि़द्दीकी़ के मुतअ़द्दिद शोअ़बा जात हैं,शोअ़बा तब्लीग़ी भी उसी तहरीक का एक हि़स्सा है चार रोज़ा दौरा में कई देहात और ढानियाँ देखने को मिलें जिन तक ज़रीए़ गाड़ी भी पहुँचना आसान नहीं है। मगर तहरीक सि़द्दीकी़ के बुलन्द हिम्मत और जफ़ाकश मुबल्लिग़ीन कई कई किलोमीटर का सफ़र पैदल चल कर किया करते हैं और लोगों में ख़ुदावन्द कुद्दूस जल्ल जलालोहु व उस के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का पैग़ाम पहुँचाते हैं। इस तहरीक की बरकत से हफ़्ता की ईद नमाज़े जुमा बहुत सारे लोग पढ़ने लगे हैं। एक बुज़ुर्ग जो अपनी ज़िन्दगी की 85 बहारें देख चुके हैं उन्होंने बताया कि मैंने इसी तहरीक से मुतास्सिर होकर नमाज़े जुमा पढ़ना अपने लिए लाज़िम कर लिया है,मैं एक एकेला नहीं हज़ारों लोग ऐसे मिलेंगे जिन तक पैग़ाम दीन को इस



तहरीक ने पहुँचाया और जिहालत की तारीकी में भटके हुओं को रौशनी में खड़ा किया। इस शख़्स़ ने यह भी कहा कि मौला तआ़ला जल्ल शानोहु पीर स़ाहब किब्ला का और उ़लमा अहले सुन्नत का भला करे कि उन की काविशों से हमारे यहाँ मकतब क़ाइम हुए हैं,हमें लाइक़ व फ़ाइक़ मुदर्रिस मिले,जिन से हम और हमारे नोनहाल इस्लामी तअ़लीम व तरबियत से आरास्ता हो रहे हैं।

जिहालतत के साथ वहाबियत का भी इस इलाक़ा में ज़ोर है दौलत के बल बोलने पर लोगों का ईमान ख़रीदा जा रहा है। वहाबी मकतब फ़िक्र तक बच्चों को दाख़ला दिलाने के लिए वहाबी एजेन्ट बच्चों के वालिदैन को माल धन का लालच देकर ले जा रहे हैं। वहाबियत के सद्देबाद के लिए उन के बिलमुक़ाबिल मकतब क़ाइम कर के तहरीक सि़द्दीकी़ ने मुस्त़फ़ा जाने रहमत स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की भोली भाली उम्मत के ईमान व अक़ीदा की हि़फ़ाज़त का काम किया है। जो लाइक़े मुबारक बाद है,जामिआ़ सि़द्दीकि़या और उस से मुतअ़ल्लिक़ तहरीकों का कि़याम नेक फ़ाल है। हर वक़्त इस इदारा ने वहाबी तूफ़ान की ज़ि़द से बरादराने मिल्लत को बचा रखा है,आज भी साल भर में हर गाँव में 15–20 मज्लिसें तहरीके सि़द्दीकी़ की त़रफ़ से होती हैं जिन की बरकतों से लोगों के ईमान व अक़ीदा की हि़फ़ाज़त हो गई है।

जनाब मौलाना ह़ाफ़िज़ मुहम्मद सईद अशरफ़ी दारुलउ़लूम फ़ैज़ाने अश्रफ़,बासनी बारहा तशरीफ़ लाए क़द्रे दानी का जवाब नहीं,हरबार

अपने मुफ़ीद मश्वरों से नवाज़ा और ख़िदमत को बग़ैर बुख़्ल के सराहा,दीगर मुआ़यनों पर ताईदी दस्तख़त् भी सबत फ़रमाए।

## मौलाना मुहम्मद रज़ा रिज़वी

दारुलउ़लूम फ़ैज़ाने ख़्वाजा बयावर ज़िला अजमेर मुक़द्दस लिखते हैं :

22शअ़बान हिजरी को हाजी बकरत के साथ उ़र्स सरापा अक़दस हज़रत सय्यद कुत्बे आ़लम में हाज़िरी हुई तवक़्क़ो से पाया,इस बे आब व गयाह ज़मीन में जो इ़ल्म का बाग़ लगाया गया सिवाए उस के और किया कहा जा सकता है कि यह सब फ़ैज़ हज़रत स़ाहिबे मज़ारे का है, और इस ख़ानवादे के चश्म व चिराग़ हज़रत अल्लामा पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी की सई जमील और उन की अन्थक कोशिशों का नतीजा है कि तिश्निगाने उ़लूम नबविया अपनी प्यास बुझा रहा हैं। यही बात मौलाना अ़लीमुद्दीन मकानवी ने भी तहरीर फ़रमाई है जो मुतअ़द्दिद बार सूजा शरीफ़ तशरीफ़ लाए,बे हद उन्हें हज़रत पीर स़ाहब से मोहब्बत है। नीज़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इस्हाक़ स़ाहब मीवाती व दीगर मुदर्रिसीन दारुलउ़लूम इस्हाक़िया के भी यही जुमले हैं।



## हज़रत अल्लामा मुफ़्ती इन्फ़ासुलहसन चिश्ती

स़दरमुदर्रिसीन जामिआ़ स़मदिया फफूृन्द शरीफ़ यूपी लिखते हैं :

3 ज़िलक़अ़दा 1436 हिजरी को उ़र्से सि़द्दीक़ी में इस दारुलउ़लूम के सरबराहे आ़ला शैख़े त़रीक़त हज़रत अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन स़ाहिब मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की दअ़वत पर बमौक़ा इफ़्तेताहे बुख़ारी शरीफ़ हाज़िर हुआ और उन की ख़िदमात से मुतास्सिर हुआ कि हज़रत ने जंगल में दीन व सुन्नियत का एक क़िल्आ़ तअ़मीर फ़रमा दिया है,यहाँ के असातिज़ा और त़लबा के अख़्लाक़ ने भी मुतास्सिर किया अल्लाह तबारक व तआ़ला की बारगाह में इस फ़क़ीर की दुआ़ है कि बतुफ़ैल नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हज़रत पीर स़ाहब क़िब्ला मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली की उ़मर शरीफ़ में और मुरातिब व दरजात में बे शुमार बरकतें अ़ता फ़रमाए और यहाँ के असातिज़ा तलामिज़ा और हम सब को इल्मे नाफ़ेअ़ और दारैन की नेअ़मतों से सर फ़राज़ फ़रमाए। आमीन

**मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के उ़लमा वग़ैरहुम की आमद व इज़हार ख़्याल :**

मौलाना कमाल अख़्तर क़ादरी दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रा मुहम्मदपुर मुफ़क्किरे इस्लाम अ़ल्लामा ग़ुलाम अ़ब्दुलक़ादिर फ़ैज़ुर्रसूल बराऊँशरीफ़ के स़दरुलमुदर्रिसीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन स़ाहब ने दो मर्तबा क़दमे रंजा फ़रमाया। जिन के ला जवाब बयान की धमक आज भी अहले इ़लाक़ा

अपने दिलों में महसूस करते हैं। मौसूफ़ ने वफ़दे सिद्दीक़ी की बराऊँ शरीफ़ में ख़ूब ख़िदमत की और कद्र दानी में हद फ़रमा दी।

नीज़ मौलाना अ़ब्दुलहक़ साहब और हज़रत पीर तरीक़त सय्यद सलमान अशरफ़ जीलानी(जाइस शरीफ़) भी बारहा करम फ़रमा हुए।

मख़दूम गिरामी सय्यद बशीर हुसैन अकबरी बुख़ारी नवासा हज़रत मुफ़्ती आ़ज़म कुछ और साहबज़ादा हज़रत मुफ़्ती कच्छ क़िब्ला अ़ल्लामा सय्यद मुहम्मद अमीन शाह अक्बरी मान्डवी कच्छ और मौलाना सय्यद अ़ब्दुर्रसूल शाह साहब अकबरी चिरोपड़ी वाले वग़ैरहुम भी सालाना जल्सा में तश्रीफ़ लाए।

हज़रत सय्यद अ़ब्दुर्रब नूरी चान्द बापो सज्जादा नशीन आस्ताना आ़लिया समनानिया भेरी शरीफ़ पोरा बाज़ार फ़ैज़ आबाद 18 शअ़बान 1422 हिजरी में तश्रीफ़ लाए। हसन इन्तेज़ाम,मेअ़्यार तअ़्लीम,इस्लाम मुआ़शिरत को सराहा और मुआ़यना तहरीर फ़रमाया।

हज़रत अल्लामा मुख़्तार हसन साहब क़ादरी चिर्रा मुहम्मदपुर 18 शअ़बान 1427 हिजरी में दोबारा 22 शअ़बान 1435 हिजरी में तशरीफ़ लाए दोनों मर्तबा अपने क़ल्बी ऐहसासात को क़ल्म बन्द फ़रमाया कि असातिज़ा व त़लबा के अख़्लाक़ व तवाज़ेअ़ और उमूर की बास्दारी से नतीजा अख़्ज़ किया कि यह हज़रत अल्लामा पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी की तरबियत ही का असर है नीज़ इस ख़ित्ता अर्ज़ में



एक अ़ज़ीम इस्लामी इन्क़ेलाब पैदा कर देना,इन का बहुत बड़ा कारनामा है,इलाक़ा के लोग बज़ाहिर हर सीधे सादे मगर उन में दीनी व मिल्ली शऊ़र और बेदारी पैदा करने के लिए हर वक़्त हर वक़्त ज़रूरत को पूरा करते हैं,जामिआ़ क़ाइम फ़रमा कर बड़ा ऐहसान इस इलाकक़ पे कर दिया बिलाशुबह पीर साहब क़िब्ला अपने वालिद गिरामी और अपने इस्लाफ़ के सही जानशीन हैं और الولد سرلابیہ।का मिस्दाक़ भी जिन्होंने रेगिस्तान को इ़ल्म व अ़मल का लाला ज़ार बना दिया है।

इस त़रह से मेहराज गंज से शअ़बान 1429 हिजरी तश्रीफ़ लाए,हज़रत मौलाना क़मरुद्दीन साहब अशरफ़ी ने भी गिराक़द्र तास्सुरात सबत फ़रमाए।

बड़ोदा से हज़रत असग़र अ़ली साहब बावा बारहा तश्रीफ़ लाए,अपने साहबज़ादे को यहाँ से पढ़ा,आप ने तहरीक सिद्दीक़ी के मातिहत कई प्रोग्राम किए,अपना मुआ़यना तहरीर फ़रमाया।

फ़तहपुर शैख़ावटी से जनाब ज़ाकिर खौखर और मुहम्मद फ़ारूक़ कुरैशी तश्रीफ़ लाए और मुआ़यना में लिखा कि यह देख कर ऐसा लगा गोया प्यासे को ठन्डा पानी मिल गया। इस बयाबान में यह ताज महल तैयार करना दुनिया का मजमूआ़।

जनाब मौलाना अन्ज़ार साहब अकसर व बेश्तर हुज़ूर कलीम अशरफ़ साहब के साथ आते रहते हैं अपने ख़्यालात का इज़हार किया। मौलाना रजब अ़ली साहब। मौलाना ख़ालिद रज़ा साहिब़ वग़ैरह भी हुज़ूर मुफ़्तिए राजस्थान के साथ आए।

राजस्थान मदरसा बोर्ड के चियरमैन हज़रत मौलाना फ़ज़्ले हक़ साहब कोटवी ने 10 मुहर्रम 1433 हिजरी की जान्दार व शान्दार तक़रीर में फ़रमाया : पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा सय्यद ग़ुलाम हुसैन साहब जीलानी ने शब व रोज़ की जिद्दो जिहद से तीन मन्ज़िला 40 कमरों पर मुश्तमिल दर्सगाह तअ़मीर की नीज़ उम्दा तअ़लीमी नज़ारा क़ाइम किया,देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया,सर हदी इलाक़ा में यह इदारा क़ाइम कर के तारीख़ी कारनामा अंजाम दिया है, मौला तआ़ला नज़रे बद से बचाए।

फ़रज़न्दे सदरुश्शरीआ़ हज़रत अल्लामा फ़िदाउल मुस्तफ़ा साहब मुतअ़द्दिद सालों से रबीउ़न्नूर शरीफ़ की बाराह तारीख़ को तश्रीफ़ लाते हैं। मुआ़यना में मदह सराई फ़रमाई और हौसला बुलन्द किया कि दर्सगाहों की बनावट व कुशादगी और लाइब्रेरी में कुतुब का क़ीमती उसासा इस बात का ग़म्माज़ है कि यहाँ के मुदर्रिसीन व तलबा में इ़ल्मी ज़ौक़ ब दर्जए अतिम मौजूद है।

हज़रत सय्यद मसरूर राज़ी भागलपुरी ने भी बारहा शर्फ़ बख़्शा। साबिक़ शैख़ुलहदीस जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ हज़रत मौलाना अल्हाज शुएब अ़ली साहब और शैख़ुत्तजवीद हज़रत क़ारी मौलाना ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहब अकबरी,ख़तीबे ज़ीशान हज़रत अल्लामा मौलाना कातिब अहमद साहब अकबरी भी तश्रीफ़ लाए मुआ़यना तहरीर फ़रमाया।

मुरब्बी से सय्यद मुहम्मद सिद्दीक़ जीलानी मियाँ, बिसोकानो दर से जामिआ़ ग़रीब नवाज़ से तश्रीफ़ लाए



मौलाना मुहम्मद अस्लम साहब व मौलाना मुहम्मद हसीन अशरफ़ी ने भी ख़िदमात से मुतास्सिर होकर मुआ़यनों में अपने तास्सुरात तहरीर फ़रमाए।

हज़रत अल्लामा हफ़ीज़ुर्रहमान साहिब भेलवाड़ा वाले बारहा तश्रीफ़ लाए उन ख़िदमात को ख़ूब सराहा और उन के अ़लावा बहुत सारे उ़लमा किराम ने बेहतरीन कार कुर्दगी को बयान फ़रमाया है।

1435 हिजरी के सालाना जल्सा में अशरफ़िया,जाइस, मुम्बई,बासनी के उ़लमा,हॉस्टल,दरगाह,मस्जिद और मदरसा उम्मेहातुलमोमिनीन लिलबनात का संगे बुनियाद मुलाहिज़ा कर के हैरत से कहने लगे,इस क़द्र सहूलियत हिन्दुस्तान का कोई इदारा नहीं रखता और तअ़ज्जुब की बात यह है कि अल्लाहह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से बहुत जल्द काम हुआ है,जब कि दूसरों को ऐसे कामों में कई एक साल लग जाते हैं। हाफ़िज़ मुहम्मद सईद साहब अशरफ़ी बोले हम बैंक में जमा करते हैं फिर इज़ाफ़ी रक़म से काम करते हैं,आप भी ऐसा करें,हज़रत मुरशिद करीम ने फ़रमाया : हम इस बैंक से लेते हैं, जहाँ कमी नहीं होती,सालाना जलसा में सूजा शरीफ़ में यही बात अपने बयान में हाफ़िज़ मुहम्मद सईद साहब ने कही : लोगो! मदरसा की पेटी घर घर रखो और रुपया रुपया डालते रहो ताकि यह तअ़मीरी काम हो। मौलाना हफ़ीज़ुर्रहमान साहिब उठे और फ़रमाया एक एक रुपया से कभी तअ़मीरात हुऐं? क़स्म ख़ुदा की तुम लोग दो या न दो, यह काम होता ही रहेगा,तस्दीक़ करते हुए सब ने कहा वाक़ेई यह अल्लाह

उठती हुई आग को देख कर उन लोगों को लूनी शरीफ़ के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ग़ौस ज़मा,कुत्बुलअक़ताब हज़रत अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद अ़ली अकबर शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा की तरफ़ रजूअ़ किया,इल्मे शरीअ़त के लिए उस्ताज़ुलअसातिज़ा जामेउ़लउलूम वलइरफ़ान हज़रत अल्लामा मौलाना मियाँ हामिदुल्लाह बहा शरीफ़ वाले अ़लैहिर्रहमा की जानिब मुतवज्जोह किया,चुनाँचेह इस गाँव के बाशिन्दे ख़ान्क़ाह मलतान पाक के साथ साथ ख़ान्क़ाह लूनी शरीफ़ से और लूनी शरीफ़के सादात के मरकज़े अक़ीदत मुलाकातयार शरीफ़ से भी बहुत फ़ैज़याब हुए।

हाजी सालेह मुहम्मद,हाजी मुबीन,हाफ़िज़ मुहम्मद,वली मुहम्मद अव्वल उर्फ़ नाले चिंगाँ,मोमिन ख़ान,फ़क़ीर अहमद, फ़क़ीर अब्दुल्लाह,ख़लीफ़ा मुहम्मद फ़ैज़,हाजी सनीयाँ और मियांजी शैख़ मुहम्मद वग़ैरा यहाँ से फ़ैज़ याफ़्ता थे,इल्मे शरीअ़त के बग़ैर फ़क़ीरी ना पायेदार होती है,मख़्दूम मुहम्मद आ़रिफ़ शाह सहरवरदी अ़लैहिर्रहमा ने मियाँ साहब अ़लैहिर्रहमा की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जिस की वजह से मौलाना अ़ब्दुलहकीम,हाफ़िज़ बचल,हाफिज़ क़ाइम मियांजी इस्माईल साबू फ़क़ीर,अहमद फ़क़ीर,नाले चिंगाँ,कामिल, हाफ़िज़ हबीब,अ़ली मुहम्मद वग़ैरा बहा शरीफ़ वग़ैरा में पढ़े और अपने गाँव में मदरसा क़ाइम रखा,इक्नाफ़ व अतराफ़ के अकसर तलबा अपनी इल्मी तिश्निगी को बुझाने के लिए सूजा शरीफ़ का रुख़ किया करते थे,चुनाँचेह नय्यड़ और थर के बहुत से शागिर्दों ने हाफ़िज़ अब्दुलअ़लीम और हाफ़िज़ सूजाई से



तआ़ला का फ़ज़्ल है,वह जिस से चाहे अपने दीन का काम ले ले।

बारहवीं तक स्कूल और फ़ज़ीलत तक निसाब दोनों तअ़लीम का यकजा होना देहात के अन्दर शहर की सहूलियात फ़राहम होना,फिर सियासत से दौरा कर सब से अच्छा बरताओं करना,मुल्क व मिल्लत के लिए बहुत बड़ी अहमियत की हामिल चीज़ है। मौला तआ़ला मुल्क की साल्मियत के साथ तअ़लीम के ज़रीए तरक़्क़ी नसीब करे और हर नज़रे बद से महफ़ूज़ व मामून रखे और हज़रत पीर साहब क़िब्ला को सेहत कुल्ली से नवाज़े और अहले सुन्नत पे इन का साया ता देर क़ाइम रखे। आमीन।

## तआ़रुफ़ जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़

बनाए जामिआ़ सिद्दीक़िया

आज से एक सू छियालीस साल क़ब्ल बकरमी सन 1927 ई. में सूजा शरीफ़ आबाद हुआ,इस वक़्त दर्से बरादरी के लोगों ने मस्जिद व मदरसा की बिना रखी और हमेशा आबाद रखते आए,इन लोगों का रूहानी रिश्ता मलतान शरीफ़ की अ़ज़ीम ख़ान्क़ाह हज़रत ग़ौस बहाउद्दीन ज़करिया मलतानी अ़लैहिर्रहमा से था,जिस की बदौलत यह लोग इल्मे शरीअ़त व तरीक़त दोनों के जामेअ़ और तमाम सलासुल के बुज़ुर्गों से मोहब्बत रखने और उन से इक्तिसाब फ़ैज़ करने वाले रहे,सूजा शरीफ़ में बूद व बाश इख़्तियार की तो उन के शैख़े तरीक़त मख़्दूमुलमशाइख़ हज़रत मख़्दूम मुहम्मद आ़रिफ़ शाह कुरैशी असदी हाश्मी ने इस वक़्त ग़ैर मुक़ल्दियत की

तअ़लीम पाई,कुछ मुद्दत तक हाफ़िज़ बचल ने नोड़िया गाँव में पढ़ाया और हाफ़िज़ा क़ाइम ने हरपालिया में इ़ल्म का शजरा लगाया,सूजा शरीफ़ से ही बाम नूर गाँव के सादात ने तअ़लीम पाई,और आज तक यहाँ की दर्स क़ौम का अदब व तअ़ज़ीम करते हैं,सय्यद अली मुराद शाह भलीसरवाले हाफ़िज़ हबीब सूजाई को अपने यहाँ बच्चों को तअ़लीम देने की ग़र्ज़ से ले जाने के लिए तशरीफ़ लाए,मौलाना अ़ब्दुलहकीम अपने वक़्त के मुफ़्ती थे,यहाँ की मस्जिद व मदरसा को अपने ख़र्च से बनवाकर तअ़लीम से आबाद रखा और लोग उन से इ़ल्म मीरास के मसाइल में मुराजअ़त करते थे,मख़्दूम मुहम्मद आ़रिफ़ शाह की निगाह करम ने मौलाना अ़ब्दुलह़कीम को अपने रंग में रंग दिया था, कसरत से अहले इ़ल्म और अहले दिल पाए जाने की वजह से इस इलाक़े के अ़वाम व ख़्वास़,सादात व मशाइख़ की नज़र में यह गाँव इब्तेदा से मरजअ़त का ह़ामिल था,चुनाँचेह यहाँ के बाशिन्दे बयान करते हैं कि हमारी मस्जिद में उ़लमा व फ़ुक़रा और सादात व मशाइख़ के मैके लगे रहते थे,इसी बिना पर लूनी शरीफ़ के बुज़ुर्ग हर साल जब इस इलाक़ा में दौरा फ़रमाते तो यहाँ की मस्जिद में ज़रूर ह़ल्क़ा ज़िक्र कराते,यह सिलसिला ह़ल्क़ा ज़िक्र का ह़ज़रत पीर सय्यद हाजी अली अकबर शाह जीलानी लूनवी अ़लैहिर्रहमा से लेकर ह़ज़रत बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया अल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली तक मुसलसल जारी व सारी रहा और है सूजा शरीफ़ के बाशिन्दे यह इम्तियाज़ भी रखते हैं कि यह



लोग तमाम सलासुल के बुज़ुर्गों की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत और तअ़ज़ीम बजा लाते हैं,शायद इन ख़स़ाइल और मुहामिद की बिना पर कुत्बे थर ह़ज़रत सय्यदिना मुरशिदिना पीर सय्यद कुत्बे आ़लम शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा ने गाँव बोनहार में विस़ाल फ़रमाने के बा वजूद दाइमी इस्तेराह़त के लिए इस मुबारक बस्ती सूजा शरीफ़ को पसन्द फ़रमाया और वस़ियत मोजिब बोनहार से सूजा शरीफ़ लाकर मज़ारे पाक बनाया गया और यह वाक़िआ़ विस़ाल,इस गाँव के आबाद होने के 92 साल बाद 1963 ई में पेश आया और आज की इन ख़िदमात दीनिया का पेशे ख़ीमा बना और मख़्दूम मुहम्मद आ़रिफ़ शाह कुरैशी अ़लैहिर्रहमा की इस बशारत की तअ़बीर साबित हुआ जो गाँव के आबाद होने के चन्द साल बाद यहाँ के क़ब्रिस्तान की नयू रखते हुए मख़्दूम स़ाहब ने अहले क़रिया को अ़ज़ीम बशारत देते हुए फ़रमाया था कि यह सूजा शरीफ़ का क़ब्रिस्तान जन्नत का टुकड़ा है और यहाँ चहार यार की चौंकी है,यानी जो शख़्स़ इस जगह से तअ़ल्लुक़ मोहब्बत इस्तवार करेगा,उस के ईमान की ह़िफ़ाज़त चार चार के ज़िम्मा होगी,चुनाँचेह 1963 ई में ह़ज़रत दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा की यहाँ की दरगाह बनी उस के छः साल बाद 1969 ई से आप के फ़रज़न्द ह़ज़रत अल्लामा अल्हाज पीर ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी बानिए जामिआ़ सि़द्दीक़िया ने साल की उ़मर में इस इलाक़ा का दौरा शुरू किया और बानी जामिआ़ सि़द्दीक़िया ने अपने वालिद माजिद के उ़र्स शरीफ़ का ज़िम्मा,थर के दौरे की इब्तेदा में ही 1390 हिजरी में अपने सर ले लिया था,जब कि

इस से क़ब्ल अहले क़रिया उ़र्स किया करते थे 1390 हिजरी से 1406 हिजरी तक मुकम्मल 16 साल तक आप अपने वालिद माजिद ह़ज़रत पीर सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह जीलानी उ़र्फ़ दादा मियाँ अ़लैहिर्रहमा का सिर्फ़ उ़र्स ही करते रहे,जब जब लूनी शरीफ़ से राजस्थान की त़रफ़ दौरा के लिए आना मक़सूद होता तो इलाक़ा के मुअ़ज़्ज़ज़ ह़ज़रात के नाम उर्स जीलानी की दअ़्वत भेज देते,मुक़र्ररा तारीख़ पर अ़वाम व ख़्वास़ आप के वालिद माजिद ह़ज़रत पीर सय्यद क़ुत्बे आ़लम शाह के मज़ार पर सूजा शरीफ़ में जमा हो जाते, उर्स की नियाज़ पकती और रात भर सिंधी मौलूद शरीफ़ पढ़े जाते,फ़जिर के बाद चादर पोशी होती फिर घनटा भर आप का बयान होता,इस 16 साल की मुद्दत में आप जब जब उर्स करते तो दिल यहाँ मदरसा को दारुलउलूम की शकल देने का ख़्याल अंगड़ाइयाँ लेता,बल्कि अपने बुज़ुर्गों की इन तमन्नाओं और बशारतों की बिना पर जो उन्होंने पहले ज़ाहिर कर दी थीं,यक़ीने कामिल था कि एक दिन ज़रूर एक अ़ज़ीम गुलिस्तान मुहम्मदी सूजा शरीफ़ में लहलाएगा,बल्कि ह़ज़रत बानिए जामिअ़ा बाज़ औक़ात अ़क़ीदत मन्दों के सामने आइन्दा वजूद में आने वाली इस बहार का इज़्हार भी फ़रमाते,चुनाँचेह मरहूम मुहम्मद सहता मूरानी वाले ने बयान किया कि एक दिन उर्स शरीफ़ से फ़ारिग़ होकर दरगाह शरीफ़ के पास बैठे हुए आप ज़मीन पर फूल बनाने लगे और इरशाद फ़रमाया देखो!यह क्या है ? हम ने अ़र्ज़ किया यह फूल है,फ़रमाया : एक दिन आएगा कि यहाँ फूल खिलेंगे और यह ख़ित्ता रश्क



कश्मीर बनेगा,तुम सब आसूदा हो जाओगे,इस वक़्त दारुलउ़लूम का नाम व निशान न था बल्कि किसी के ख़्वाब व ख़्याल में भी न था कि यहाँ अ़ज़ीम इदारा क़ाइम होगा।

ह़जरत बानिए जामिअ़ा का मिज़ाज है कि जिस गाँव या शहर में पहुँचते हैं,वहाँ की ज़रूरत पर ही गुफ़्तगू करते और इस्लाह़ फ़रमाते हैं,जहाँ लोगों को बदकारियों,शराब नवेशियों में पाया,उन्हें इस से बाज़ रहने की वसि़यत की,जहाँ इ़ल्म की कमी देखी या जिहालत को आ़म देखा तो मदरसा की और इ़ल्म की अहमियत बयान फ़रमाई। चुनाँचेह आप ने जब देखा कि यहाँ के उ़लमा दूसरे इ़लाक़ों में ख़िदमत अंजाम दे रहे हैं,वजह यह है कि यहाँ मुदर्रिस व इमाम के लिए मअ़्कूल इन्तेज़ाम नहीं जिस की बिना पर वह दीगर इ़लाक़ों में ख़िदमत दे रहे हैं और उन्हें अपने इलाक़ा की कोई फ़िक्र नहीं है। अगर किसी को है तो वह अपने मैं हिम्मत नहीं पाता था कि ख़ुश्क इ़लाक़ा और लक़ व दक़ सेहरा में बैठ कर दीन का दर्स दे सके। जब कि उस के बरअ़क्स बद अक़ीदा लोग अपने काम में मुस्तइ़दी दिखा रहे थे। उन्हें दिखा कि तन्ख़्वाह की कोई फ़िक्र नहीं और रात दिन को एक कर के मदरसे क़ाइम करते जा रहे हैं। इधर अहले सुन्नत में जमूद इस क़द्र कि उन के उ़लमा में भी बाहर और अ़वामुन्नास भी गुजरात में मज़दूरी करते नज़र आ रहे थे,बाज़ भूले भाले यहाँ के मुसलमान,बद अ़क़ीदा लोगों से अपने बच्चे पढ़ाने लग गए और जो लोग गुजरात नहीं गए बल्कि इलाक़ा में रहे हुए थे उन्हें बद अक़ीदा लोग रुपये पैसे देते और उन के बच्चे ले जाकर

पढ़ाते,यूँ अहले सुन्नत का बहुत बड़ा नुक़्सान हो रहा था और दौरा कर सिर्फ़ बज़रिए दौरए तब्लीग़ के इस की तलाफ़ी ना मुम्किन थी और यहाँ के बच्चे लूनी शरीफ़ ले जाकर पढ़ाने से भी सदबाद करना तसल्ली बख़्श न था क्यों कि इस स़ूरत में सिर्फ़ वही बच्चे बच सकते थे जो आ़लिम बनें,उन के रिश्तेदारों को बचाना बड़ा मुश्किल था,क्यों कि जो आ़लम होता था वह बजाए अपने रिश्ता दारों की फ़िक्र करने के दूसरे इ़लाक़ों में सेट हो रहा था,यहाँ इ़लाक़े में सन्नाटा छाया हुआ था। चन्द एक मदरसे अहले सुन्नत के चल रहे थे मगर ख़ातिर ख़्वाब फ़ायदा के लिए ज़रूरत थी कि राजस्थान में एक ऐसा अ़ज़ीम इदारा क़ाइम किया जाए जिस के ज़रीए पूरे इलाक़ा में अहले सुन्नत का काम मुकम्मल और मुनज़्ज़म त़ौर से हो सके,बड़े पीर स़ाहब सय्यद महमूद शाह क़िब्ला की दिली तमन्ना थी कि सूजा शरीफ़ में एक मदरसा खोला जाए,और पीर व मुरशिद ह़ज़रत शाह मुहम्मद इस्हाक़ उ़र्फ बागारा बादशाह की भी आरज़ू यही थी,बल्कि उन्होंने किसी स़ाहब से फ़रमाया : मैं सूजा शरीफ़ में एक अ़ज़ीमुश्शान इदारा देख रहा हूँ यह अस्बाब व अ़लल थे,जिन्होंने ह़ज़रत बानिए जामिअ़ा मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली को इस बात पर आमादा किया कि वालिद स़ाहब के मज़ार शरीफ़ के पास एक दारुलउ़लूम क़ाइम किया जाए,चुनाँचेह आप ने यहाँ पर 11 जमादिलउख़रा 1406 हिजरी मुत़ाबिक़ 21 फ़रवरी 1986 ई को जुमा के दिन बनाम जामिअ़ा सिद्दीक़िया)दारुलउ़लूम क़ाइम किया जिस की ख़िदमात और उस में आई बहार का ज़िक्र आप उ़लमाए अ़स्र की ज़बानी



सुन चुके।

तौफ़ीक़ ख़ुदावन्दी से हुज़ूर बानिए जामिअ़ा ने जब दारुलउ़लूम का अ़ज़्म मुसम्मम फ़रमाया तो वालिद स़ाहिब के उ़र्स पाक के बाद 1406 हिजरी में सूजा शरीफ़ वालों को जमा कर के मदरसा का कमरा बनाने का हुक्म फ़रमाया और नोहड़ियों कातिला दअ़वत पे तशरीफ़ ले गए,वहाँ से बाज़ अहले सूजा को यह फ़रमाया कि वापस भेजा कि सूजा शरीफ़ जाकर ईंटे निकालो!उन्होंने फ़ौरन वापस आ कर इस काम को सर अंजाम दिया और मदरसा की कच्ची दीवारें क़ाइम कर दें। आप दोबारा तश्रीफ़ लाए,और उन दीवारों को मुलाहिज़ा फ़रमा कर अ़म्मे मोहतरम ह़ज़रत पीर सय्यद हसन शाह जीलानी आडीसर वालों से मदरसा के लिए दुअ़ा कराई और चले गए फिर गुजरात से नलिए लाकर चढ़ा दिए गए। जब आप को मअ़लूम हुआ कि मदरसा बन चुका है,तो मुदर्रिस की फ़िक्र हुई,ताईदे ख़ुदावन्दी अगर शामिल हाल हो तो ग़ैब से मदद हुआ करती है,चुनाँचेह बाड़मेर में आप को मौलाना मुहम्मद क़ाज़ी स़ाहब अकबरी मिल गए,बहैसियत मुदर्रिस,मुक़र्रर कर के अपने साथ सूजा शरीफ़ लाए और मीटिंग फ़रमाई। जिस की तफ़स़ील और रिपोर्ट दर्ज ज़ेल है :

**पहली और ता सीसी मीटिंग :**

**निशात सानिया :**

बरोज़ जुमा 11 जमादिलउख़रा 1406 हिजरी 21 फ़रवरी 1986 ई.(माद्दाए तारीख़,अरमग़ान मदह नबी स़ल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम)

**बानी व मोहतमिम :**

हज़रत पीर रौशन ज़मीर क़िब्ला अल्लामा अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी(दामत बरकातोहुमुलक़ुद्सिया)

**मदरसा का नाम व तपा :**

जामिआ सिद्दीक़िया सुन्निया हन्फ़िया मक़ाम(सूजा शरीफ़) दरगाह पाक हज़रत पीर सय्यद क़ुत्बे आलम शाह जीलानी उर्फ़ दादा मियाँ जीलानी अ़लैहिर्रहमा पोस्ट नवातलाा(बाखासर)तहसील चोहटन(हालिया तहसील सेड़वा)ज़िला बाड़मेर राजस्थानुल हिन्द।

मदरसा हज़ा की कमेटी के मोहतमिम स़ाहिब (ह़ज़रत पीर रौशन ज़मीर क़िब्ला अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल क़ुदसिया)ने इलान किया जिस पर कमेटी तश्कील पाई दरगाह शरीफ़ के मैदान में तमाम जमाअ़त की राए से ह़ज़रत बानिए जामिआ़ ने हाजी अ़ब्दुर्रहमान सूजा शरीफ़ को नाज़िमे आ़ला बनाया।

**मीटिंग की रिपोर्ट :**

मुख़्सूस़ हज़रात की मुन्तज़मा कमेटी बनाए जाने के बाद हर गाँव से मज्लिस आ़म्मा के लिए मिम्बर चुने गए जिन की तअ़दाद एक सौ पाँच है,इस जन्रल कमेटी का मोहतमिम मदरसा(ह़ज़रत पीर रौशन ज़मीर क़िब्ला अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल क़ुद्सिया)ने अपने दस्ते मुबारक से बड़ी जमाअ़त के सामने तमाम लोगों की राए से इन्तिख़ाब फ़रमाया और उसी दस्ते



मुबारक से बड़ी जमाअ़त के सामने तमाम लोगों की राए से इन्तिख़ाब फ़रमाया और उसी(जन्रल कमेटी)के ज़िम्मे बस्तियों से चन्दा जमा करना रखा और सरकारी कारवाई,क़ौमी इत्तेह़ाद,हमदर्दी और जलसों में ख़ुसूस़न सालाना जलसा में ख़िदमत उन ह़ज़रात के ज़िम्मे रखी।

दस्तख़त स़दर व मोहतमिम व बानी :

ह़ज़रत पीर स़ाहब किब्ला दस्तख़त नाज़िम आ़ला : अब्दुर्रहमान सूजाई उ़र्फ़ अदलन ख़ाँ

दस्तख़त स़दर मुदर्रिस व इन्चार्ज :

एम,एम,क़ाज़ी अकबरी देरासर आरीसर

11 जमादिल उ़ख़रा 1406 हिजरी फ़रवरी 1986 ई जमा

इसी तारीख़ को एक दूसरी मुस्लिम जीलानी इन्तेज़ामिया कमेटी(बनाम ग़ुलामाने मुस्तफ़ा कमेटी) मदरसा हज़ा के इन्तेज़ाम व इन्स़ेराम के लिए तश्कील दी गई जिस के अरकान यह हैं :

मोहतमिम व बानी : हुज़ूर पीर सय्यद अल्लामा अल्हाज ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली

स़दरः मुहम्मद इस्हाक़ बिन मुहम्मद सिद्दीक़ सूजा शरीफ़

नाइब स़दर : वली मुहम्मद बिन जान मुहम्मद

ख़ज़ांची : मुहम्मद इब्राहीम बिन हाजी अ़ब्दुर्रहमान

**मिम्बरान :**

इनायतुल्ला,बिछू,ग़ुलाम हैदर,तय्यब,अ़ब्दुर्रसूल, मुहम्मद अ़ली,मुहम्मद मलूक,शौकत अ़ली मुहम्मद,सख़ी, मुहम्मद,दाऊद यह कमेटी मोहतमिम मदरसा(ह़ज़रत पीर रौशन ज़मीर क़िब्ला

अलहाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुलकुदि्सया)ने अपने दस्ते मुबारक से मुन्तख़ाब की इस कमेटी का ज़िमेटी का ज़िम्मे ख़ास़ कामों जलसा वग़ैरह में काम संभालना है और तमाम इन्तेज़ाम करना उन के ज़िम्मा है।

इलाक़ा थर की ख़ुश नस़ीबी :

यह मदरसा एक बड़ी कमेटी की ज़िम्मे दारी में चल रहा है जिस में एक सौ पाँच इफ़राद शामिल हैं,अब इन ह़ज़रात को सोचना चाहिए कि इस इदारा का हम पर वज़न है तो ह़क़ अदा कर रहे हैं वरना वक़अ़त नहीं रखते मुझे उम्मीद है तमाम ह़ज़रत एक जीलानी,वक़्त के वली ह़ज़रत अल्लामा क़िब्ला अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल कुदि्सया की क़ियादत में काम करेंगे इन तमाम ख़ुश नस़ीबों को मुबारकबादी देता हूँ और यह ख़ुश ख़बरी सुनाता हूँ कि ख़ुश नस़ीब हो तुम सब कि हम को ग़ौसे आ़ज़म अ़लैहिर्रहमा के स़ाह़बज़ादे पीर स़ाह़ब ने अपनी क़ियादत में क़बूल किया उस से बढ़ कर और किया अ़ज़ीम नेअ़मत होगी,और लिखते हैं : तमाम अहले सुन्नत व जमाअ़त व ह़ज़रत पीर सय्यद कुत्बे आ़लम शाह जीलानी उ़र्फ़ दादामियाँ अ़लैहिर्रहमा के चाहने वालों और इस मदरसे से अक़ीदत रखने वालों को इलान किया जाता है कि हर वक़्त व हर मौक़े पर उस अपने अ़ज़ीज़ व प्यारे इरादा को याद रखें और कभी न भूलें और इम्दाद व ख़ैरात,ज़कात,नज़र व नयाज़ वग़ैरा दें और क़िब्ला अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन



शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल कुदि्सया की हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाऐं क्योंकि उन्होंने ने इस बयाबान,रेतीले इ़लाक़ा में यह एक दीन पाक मुस़्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का पौदा लगाया है लेकिन पानी इस पोदे को पिलाना सब अहले सुन्नत व जमाअ़त के ज़िम्मे है हम को उम्मीद है कि तमाम अहले सुन्नत इस इ़लान को समाअ़त फ़रमा कर लबैक कहेंगे।

मुदर्रिस की तक़र्रुरी के बाद तन्ख़्वाह के लिए गाँव में चन्दा किया और बेरूनी बच्चों के ख़ुर्द व नोश का ज़िम्मा गाँव वालों पे रखा फिर जब बानीए जामिआ़ सि़द्दीक़िया अपने मुरशिद करीम की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो पूरी सर गुज़श्त सुना कर अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर शाह आ़ज़म के नाम पर जामिआ़ सि़द्दीक़िया नामी इदारा वालिद स़ाहब के मज़ार शरीफ़ के पास शुरू किया है अब दुआ़ए आप की काम देंगी,मुरशिदे करीम यह मज़दा जांफज़ा सुन कर ख़ुश हुए और फ़रमाया कि पीर स़ाहब!इस इदारा की जड़ें तहतुस्सरा तक गहरी हैं कोई बादे मुख़ालिफ़ उसे जुम्बिश नहीं दे सकेगी। इन्शाअल्लाह तआ़ला।

एम,एम क़ाज़ी अकबरी देरासर अरीसर

11/जमादिलउख़रा 1406 हिजरी /21 फ़रवरी 1986 ई जुमा

**इब्तेदाई मुश्किलात :**

“لکل شئی آفتو للعلم آفات”के बमुजिब इब्तेदा में इदारा को बड़ी दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़रना पड़ा,दरगाह शरीफ़ में एक झोंपड़ा था,जिसे ज़रूरत की अश्या रखने और सालाना उ़र्स का सामान रखने और किताबों रखने के काम लिया जाता था,रिहाइश के लिए गाँव की मस्जिद थी जिस में रात गुज़ार कर सुबह दरगाह शरीफ़ पर पढ़ाई के लिए आना पड़ता,गाँव के कुँवे से पानी ख़ुद त़लबा अपने हाथ से निकालते और कंधों पर उठाकर मस्जिद की टंकी और दरगाह शरीफ़ की टंकी भरते जिसे पीने और वज़ू में इस्तेमाल किया जाता था, खाने के लिए हर घर से सुबह व शाम एक एक रोटी, सालन और छाछ गाँवों में घूम कर त़लबा ख़ुद ह़ासि़ल करते लेकिन त़लबा कसीर हो जाने पर वह भी नाकाफ़ी हुए,तो साठ घर की बस्ती ने साठ त़लबा को एक एक कर के तक़्सीम कर लिया यह तक्सीम कर्दा बच्चे तीनों टाइम इन घरों में खाते बक़िया के लिए वही फ़ुक्र काम आता,गरमी की मौसम में अहले क़रिया के गुजरात चले जाने से फ़ुक्र में कमी आने पर दो दो चार चार महीने का सूखा हुआ फ़ुक्र वसूल किया जाता,एक लालटीन या गेस पर 80 त़लबा और असातिज़ा को मुत़ाला करना पड़ता,एक मअ़मूली चीज़ मसलन गेस के मन्टल के लिए दूर पैदल चल कर क़स्बा चोहटन वग़ैरा जाना पड़ता। त़लबा के इ़लाज व मुआ़लिजा के लिए असातिज़ा को ज़रूरत की



गोलिया रखनी पड़तें या 15–20 किलोमीटर दूर से मंगवानी पड़तें,दरगाह शरीफ़ पर त़लबा के माँ बाप देख भाल के लिए अगर आ जाते तो खाना व चाय गाँव के किसी घर से मंगवानी पड़ती होटल तो कुजा मअ़मूली सामान के लिए बस्ती में दुकान तक न थी असातिज़ा व त़लबा को स़न्दूक़ और बिस्तर उठाए 20 किलोमीटर की आमद व रफ़्त करनी पड़ती,किताबों की इस क़द्र कमी कि एक एक किताब को दस दस त़लबा पर मुश्तमिल कई जमाअ़तें पढ़तें शरहें न होने से असातिज़ा को मुत़ालअ़ में बड़ी दिक़्क़ते पेश आतीं मगर स़ाहिबे मज़ार की बरकत से अ़क़्दे ह़ल होते रहे,गरमियों में तो दरख़्तों तले बग़ैर बिस्तर सोकर वक़्त निकाल देते मगर सर्दियों औा बारिश के मौसम में बड़ी मुशकिलात पेश आतीं। किताबें और बिस्तर के भीग जाते,यह वह दुश्वारियाँ थीं जो लोगों को बच्चे छोड़ने से भी मानेअ़ बिन जातीं,मगर ख़ान्क़ाह आ़लिया के फ़ैज़ की बदौलत हर मुश्किल दफ़ा होती रही,अल्हाज अल्हम्दु लिल्लाह रब तआ़ला का फ़ज़्ल है कि यह आफ़ताब हिदायत पूरी आब व ताब के साथ ज़ूफेशाँ है,माज़ी की भयानक तारीख़ और हाल की चमक दमक को देख कर हर कोई पुकार उठता है कि यह किसी मर्दे कामिल की निगाह का स़दक़ा है चनाँचेह बहरुलउ़लूम मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान आ़ज़मी अ़लैहिर्रहमा ने जभी फ़रमाया कि यह इस बुज़ुर्ग का फ़ैज़ान नज़र है और कुछ मह़ल वक़ूअ़ का भी असर है और बेशक बजा फ़रमाया क्योंकि आज से बहुत पहले किसी मलतानी बुज़ुर्ग ने इस क़ब्रिस्तान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था कि यह जन्नत का एक

टुकड़ा है और यह चारयार का पहरा है। यही वजह कि इस मैदान में आकर रोना बिलकना हंसने लगता है मग़मूम मसरूर नज़र आता है और शरारत व ख़बासत की नियत से आने वाला हामी व मदद गार बन जाता है।

**हर कुजा चश्मा बू शीरीं मरदुम व मुर्ग़ व मौर गर्दआयन्द**

**जामिआ़ के अग़राज़ व मक़ासिद :**

कुरआनी तअ़लीमात की ऐसी तरवीज व इशाअ़त जो दुनियाए  इस्लाम में अ़ज़ीम फ़िक्री और अ़मली इन्क़ेलाब की बुनियाद साबित हो।

किताब व सुन्नत के ह़वाले  से इस्लाम की ऐसी तब्लीग़ जिस से इंसानियत को दर पेश मुश्किलात का यक़ीनी और क़ाबिल अ़मल ह़ल मयस्सर आए।

नबी आख़िरुज़्ज़मा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मोहब्बत व इत़ाअ़त की ऐसी तअ़लीम जो उम्मत मुस्लिमा में ह़क़ीक़ी वहदत की उसास फ़राहम कर दे।

नो जवानों की अ़मली व फ़िक्री और अख़्लाक़ी व रूहानी तरबियत का ऐसा ऐहतमाम जिस से वह मुल्क व मिल्लत की मुख़्लिस़ाना और माहिराना ख़िदमत के क़ाबिल हो सकें।

**ख़ुर्द व नोश :**

**1406** हिजरी से **1413** हिजरी तक यानी मुसलसल आठ साल तमाम त़लबा व असातिज़ा के ख़ुर्द व नोश का बार अहले सूजा शरीफ़ पर था उन्होंने बहुस्न व ख़ूबी अंजाम दिया,अल्लाह जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए,सुबह व शाम रोटी,



चावल सालन और छाछ भतीजे रहे जिसे फ़ुक़्र कहा जाता है और यह सिलसिला बर किताबन हुनूज़ जारी व सारी है, जामिआ़ में मत़बख़ 1414 हिजरी में जारी हुआ और सुबह व शाम लंगर में दोपहर को रोटी और सालन और रात को चावल व सालन हुआ करते थे,नीज़ सर्दियों में दोपहर को बाजरा की रोटी और गर्मियों में गेहूँ की रोटी और सालन पकता था अब चन्द साल से शाम को खिचड़ी और कड़ी (राईता)हुआ करता है और दोपहर में मुख़्तलिफ़ सब्ज़ियाँ हुआ करती हैं और हफ़्ता में एक दो मर्तबा गोश्त हुआ करता है सुबह का नाश्ता और चाय का इन्तेज़ाम भी एक साल से हो गया है।

**तअ़लीम व तरबियत :**

क़रीब में इदारा खिलने से इलाक़ा के त़लबा जौक़ दर जौक़ आने लगे,रफ़्ता रफ़्ता स्टाफ़ बढ़ाने की ज़रूरत पेश आई,क़द्र ज़रूरत असातिज़ा में इज़ाफ़ा होता रहा,हत्ता कि आज दारुलउ़लूम में 20 उलमा 8 मास्टर कुल 28 का स्टाफ़ है,जब कि मुलाज़िमीन उन के सिवा हैं,त़लबा की तअ़दाद बढ़ती रही यहाँ तक कि आज इदारा में कुल 390 त़लबा हैं, सालाना ख़र्च तक़रीबन 75 लाख है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से जिस साल जितने ख़र्चे की ज़रूरत होती है किसी न किसी त़रीक़े भेज देता है,फिलवक़्त इदारा में 7 ज़बानें और पच्चीस फुनून,सात शोअ़बाजात में पढ़ाए जाते हैं एक अ़ज़ीम लाइब्रेरी है,17साल से दारुलमुत़ालअ़ क़ायम है, जिस के तहत मुख़्तिलफ़ मौज़ूआ़त पर मज़मून निगारी सिखाई

जाती है,ख़ुश नवैस,ख़िताबत,मुनाज़िरा,मुकालमा और नअ़्त ख़्वानी से त़लबा को आरस्ता किया जाता है,तस़व्वुफ़ दाख़िल दर्स है,पाबन्द नमाज़ बनाने के लिए पंजोवक़्त में ह़ाज़िर ली जाती है। इस्लामी वज़अ़् क़त़अ़् का पाबन्द करने के लिए कुर्ता शलवार और अ़मामा को लाज़मी क़रार दिया गया है,फ़जिर से अ़स्र तक पढ़ाई,जिस में खाना व क़ैलूला और नमाज़े ज़ोहर शामिल हैं और बाद अ़स्र ता मग़्रिब वरज़िश व तफ़रीह़ बाद मग़्रिब 11बजे तक मुतालअ़् जिस में इशा और रात का खाना शामिल हैं।

## तअ़्मीरात क़दीमा व जदीदा :

### शरीफ़ :

पहले अहले क़रिया ने ख़ाम चहार दीवारी बिना कर ऊपर छप्पर डाल दिया थ,1995 ई में बानी जामिअ़ा सि़द्दीक़िया ने 17 मीनार,एक गुम्बद,8 खिड़कियों,3 दर वाज़ों पर मुश्तमिल अ़ाली शान दरगाह पाक 30 पैलरों पर क़ाइम फ़रमाई। फिर 2013 ई में वसीअ़ और बुलन्द व बाला दरगाह शरीफ़ अज़ सरे नो दोबारा तअ़्मीर फ़रमाई।

### सि़द्दीक़ी मस्जिद :

क़दीम मदरसा व मस्जिद उसी जगह थे जहाँ अब सि़द्दीक़ी मस्जिद की नई तअ़्मीर हुई है,इसी जगह हुज़ूर स़ाहिबे मज़ार की नमाज़ जनाज़ा अदा की गई थी,यहाँ तीन दरख़्तों का झन्डा था जिसे सिंधी ज़बान में सलीदा कहते हैं, जिस पर छप्पर डाल कर मदरसा सालों तक उसके नीचे चलता रहा,फिर कोहान नुमा छप्पर बनाया गया,उस के बाद



लौहे के चदरे डाल कर पुख़्ता किया,फिर उसे शहीद कर के सि़द्दीक़ी शाही मस्जिद तअ़्मीर की गई जिस में स्टाफ़ की क़ियाम गाह और आफ़ीस वग़ैरह को शामिल कर लिया गया बल्कि कुछ हवैली शरीफ़ का ह़िस़्स़ा भी मस्जिद में मिला लया गया है,वह झोंपड़ा भी शामिल है जो क़ियाम इदारा से पहले दरगाह पाकक का सामान रखने में इस्तिअ़्माल किया जाता था।

### गिराउंड :

इस वक़्त दर्सगाह,हॉस्टल और मस्जिद व दरगाह पाक के मा बैन वसीअ़् मैदान नज़र आता है उस के वस्त़ में पहले त़लबा की क़दीम क़ियाम गाह थी कच्ची दीवारों पर मलिए चढ़ा कर जिस से इब्तेदा की गई थी उस के इर्द गिर्द त़लबा की चुंकियाँ नबी हुई थीं जिन में वह रहते थे फिर इस जगह छः कमरों,दोहालों,और एक ग़रीब नवाज़हाल लाइब्रेरी पर मुश्तमल क़ियाम गाह बनी इस क़ियाम गाह पर नलिए और चदरे और पत्थर की सीलें चढ़ी हुई थीं।

### हॉस्टलः

तीन मन्ज़िला 36 कमरों पर मुश्तमिल जदीद हॉस्टल जिस के हर कमरे में नहाने धोने की मुकम्मल सहूलियतें रखी गई हैं। हर एक कमरे में 12 अलमारियाँ बनी हैं जो त़लबा को तक़्सीम कर दी जाती हैं इस हॉस्टल के बनने से क़ब्ल यहाँ क़दीम मत़बख़ और स्टॉफ़ के लिए घर बने हुए थे।

### दर्सगाहः

तीन मन्ज़िला 40 कमरों पर मुश्तमिल अ़ज़ीमुशान

दर्सगाह के तीनों त़बक़ों में दोनों जानिब वज़ू व इस्तिन्जा का इन्तेज़ाम किया गया है अ़ज़ीम लाइब्रेरी और कम्पयूटर रोम भी इस में शामिल हैं,इस का गिराउंड फलोर,बारहवीं तक स्कूल के लिए और दरमियानी त़ब्क़ा अ़रबी दरजात के लिए है और ऊपर का त़बक़ा नाज़िरा व हिफ़्ज़ के लिए तै है,इस दर्सगाह के बनने से क़ब्ल यहाँ दरजनों नीम के दरख़्त और एक वसीअ़ चबूतरा था जिस को गरमियों में मदरसा के लिए इस्तिअ़्माल किया जाता था इस चबूतरा को इस दौर में स़फ़ा नाम दिया गया था।

**मुलाकातयारी हाल व मत़बख़ वग़ैराः**

यह हाल,गोदाम की जगह इस्तिअ़्माल होता जिस की मश्रिक़ी जानिब दस्तगीर हाल और क़दीम कुतुब ख़ाना है बनाम मुह़द्दिसे आ़ज़म हाल,हॉस्टल बनने से क़ब्ल इस दस्तगीर हाल में बड़े त़लबा रबा करते थे,जदीद लाइब्रेरी बनने से पहले किताबें इस मुह़द्दिसे आ़ज़म हाल में थीं, मुलाकातयारी हाल से मुत्तसि़ल जानिब ग़ुर्बे इमाम रब्बानी हाल और दो चार दूसरे कमरे हैं जो मेहमान ख़ाना के त़ौर पर इस्तिअ़्माल होते हैं यहीं पर मदरसे का कुँवा है इस से आगे जानिब ग़ुर्ब ह़वैली शरीफ़ है और उस से कुछ फ़ास़ला पर जदीद डाइनिंग हाल और मत़बख़ है।

**तअ़्दाद त़लबा में इज़ाफ़ाः**

यह वही  इदारा है जिस में कहनी तकिया थी और रेत बिस्तर,बाजरा की ख़ुश्क रोटी पानी से भिगो कर खाना और इसी सौ त़लबा को मअ़् असातिज़ा एक लेम्प यह रात को



12 बजे तक पढ़ना पड़ता था,घास फूंस के बने झोंपड़े रहने के लिए थे जिन्हें बच्चे और असातिज़ा ख़ुद अपने हाथ से बनाया करते थे,इस दौर में हुज़ूर बानिए जामिअ़ा तसल्ली के कलमात इरशाद फ़रमाते कि बचो! देखना यहाँ वह काम होगा कि दुनिया देख कर दंग रह जायेगी,लोग देखने आयेंगे, आज दुनिया माथे की आँखों से देख रही है कि दर्सगाह व हॉस्टल और मस्जिद व ख़ान्क़ाह का काम ईमान ताज़ा कर रहा है,पूरे हिन्दुस्तान को इस काम ने हैरत में डाल दिया है,देहात के लोग व साइल की कमी से बचे छोड़ने को तैयार न थे वहाँ आज शहरों के पढ़े लिखे गिरेजूवेट लोग ह़ज़रात,अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं जो सहूलियात अच्छे ख़ासे़ मालदारों के बच्चों को घर पे मयस्सर न हों वह यहाँ त़ालिबान उ़लूम नबविया को फ़राहम हैं। फ़ल्हम्दु लिल्लाह अ़ला ज़ालिक।

**तहरीके सि़द्दीक़ीः**

त़लबा की इ़ल्मी फ़िक्री और अदबी स़लाहि़यतों की नशू व नुमा के लिए सर परस्त आ़ला व शैख़ुलजामिअ़ा की मा तहती में एक बा क़ायदा तन्ज़ीम तहरीक सि़द्दीक़ी के नाम से क़ाइम की गई है जिस के मुन्दर्जा ज़ैल शोअ़्बा जात हैं :

1.सि़द्दीक़ी क़ुर्रा फ़ौरम : तलबा में कुरआन मजीद की तिलावत का शौक़ और फ़न तजवीद करअत में महारत पैदा करने के लिए इस फ़ोरम का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिस के तह़त मुस्तनद क़ुर्रा ह़ज़रत मुख़्तलिफ़ औक़ात में त़लबा को मश्क़ कराते और तजवीद व क़रअत की तअ़्लीम देते हैं,इस फ़ोरम के तेहत हुस्ने क़रअत के मुक़ाबिला कराने

की गुंजाइश भी रखी गई है।

2.सिद्दीक़ी नअ्त कोंसिल : तलबा में इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शमआ़ फ़िरोज़ा करने के लिए यह कोंसिल सर गरम अ़मल है इस की ज़रे निगरानी तलबा को बा क़ायदा नअ्त तरबियत दी जाती है यही तरबियत याफ़्ता तलबा मुख़्तलिफ़ मुहाफ़िल में सामेईन को अपने मुन्फ़रिद और दिल कश अन्दाज़ में सरकार मदीना सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की अ़ज़मत व रिफ़अ़त के नग़मे अलाप कर ईमान की ताज़गी और रूह की बालीदगी का सामान फ़राहम करते हैं,तलबा की हौसला अफ़ज़ाई के लिए मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर नअ्तिया मुक़ाबिले भी कराए जाते हैं।

3.सिद्दीक़ी स्पीकर ज़फ़ूरम : तलबा को दअ्वत व तब्लीग़ के लिए तैयार करने और उन के जोहर ख़िताबत को निखार ने के लिए यह फ़ौरम सर गरम अ़मल है फ़न्ने ख़िताबत की बा क़ायदा तअ्लीम व तरबियत के लिए क्लासेज़ का इजरा किया गया है और तहरीके सिद्दीक़ी की तरफ़ से जामिआ़ में और बेरूनी सतह पर तलबा को ख़िताब के लिए मवाक़ेअ़ फ़राहम किए जाते हैं।

4.सिद्दीक़ी तरवीज अदब सोसाइटी : तस्नीफ़ व तालीफ़ और शेअ्र व अदब का शौक़ पैदा करने के लिए इस सोसाइटी का क़ियाम अ़मल में ला गया है उस के तिहत मज़मून नवैसी के मुक़ाबिले मुशाइरे और बैत बाज़ी के प्रोग्राम तश्कील दिए जाते हैं।

5.सिद्दीक़ी कोइज़ फ़ोरम : तलबा में मुतालअ़ का शौक़



व ज़ौक़ पैदा करने और उन की ज़हनी व फ़िक्री सलाहितयों को उजागर करने के लिए सिद्दीक़ी कोइज़ फ़ोरम का क़ियाम अ़मल में ला गया है जो वक़्तन फ़ोक़्तन मुख़्तलिफ़ कोइज़ प्रोग्राम मुन्अ़क़िद कर के तलबा को जदीद मअ़्लूमात फ़राहम के इलावा बीमार और ग़रीब तलबा को इम्दाद देना है।

**तलबा की अख़्लाक़ी और रूहानी तरबियत :**

जामिआ़ में तअ्लीम के साथ अख़्लाक़ी और रूहानी तरबियत का ऐहतेमाम भी किया गया है जिस में हस्बे ज़ैल सूरतें रू बअ़मल हैं।

सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और अहकामे शरीअ़त की हत्तल मक़दूर पाबन्दी।

तसव्वुफ़ को निसाब में बा क़ायदा शामिल किया गया है।

नमाज़ पंजगाना के इलावा जुमेरात को हलक़ए ज़िक्र और सलासुले अरबअ़ के ख़त्म शरीफ़ और रात के आख़िरी पहर में नमाज़ तहज्जुद में उठाया जाता है।

हमा वक़्त बा वज़ू रहने का अ़मल और औक़ात और जुमला उमूर की अंजाम दही में पाबन्दी।

पंजगाना और अस्बाक़,रात के वक़्त मुतालअ़ में हाज़िरी की पाबन्दी और निगरानी का एहेतमाम होता है।

जिस्म,कपड़े बिस्तर,दारुलइक़ामा,दर्सगाह वग़ैरा की सफ़ाई और कम खाने और कम सोने का आ़दी बनाया जाता है।

**जामिआ़ का निसाबे तअ्लीम और उस के फ़वाइद:**

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जल्ल मजदोहु का करोड़हा ऐहसान जिस ने जामिआ़ को बानी ऐसा अ़ता फ़रमाया जिस की दूर अन्देश,हमा गीर और गहरी नज़र की दूर दूर तक मिसाल नहीं मिलती,अ़रबी इदारों के निसा़बे तअ़्लीम में जुज़वी तरमीम व तब्दीली हर जगह पाई जाती है और ज़माने का तक़ाज़ा मलहूज़ रखना ज़रूरी होता है,हुज़ूर बानी जामिआ़ मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली ने जामिआ़ की इब्तेदा से जिन उमूर पर तवज्जोह मरकूज़ फ़रमाई और निसा़ब में तब्दीली को ज़रूरी समझा वह तब्दीलियाँ कई सालों के बाद बड़े बड़े दानिश्वर उ़लमा ने अपने इदारों में लाज़मी क़रार दें,माह नामा अशरफ़िया जून 2008 ई में मज़मून तन्ज़ीमुलमदारिस और निसा़बे तअ़्लीम के तिहत ह़ज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली ने जिन तरमीमात का ज़िक्र हुज़ूर बानी जामिआ़ 1427 हिजरी में ही यह तब्दीली जामिआ़ सि़द्दीक़िया के निसा़ब में कर चुके थे,आगे तन्ज़ीमुल मदारिस की चन्द दफ़आ़त पेश कर रहे हैं फिर जामिआ़ सि़द्दीक़िया का निसा़बे तअ़्लीम दिया जाएगा जिस से दोनों की यगांगनत बख़ूबी ज़ाहिर व बाहिर हो जाएगी,अव्वलन तन्ज़ीमुलमदारिस की उन दफ़आ़त को देखें जो ख़ैरुलअज़्कार अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही ने ज़िक्र फ़रमाई है,मौसूफ़ गिरामी इस तन्ज़ीम के तैयार कर्दा निसा़ब की ख़ुसूसि़यत को नम्बर वाइज़यों तहरीर फ़रमाते हैं :

1.कुरआन तमाम उ़लूम का सर चश्मा और जुमला अक़ाइद व आ़माल का माख़्ज़ व मस्दर है,मगर साबिक़ा निसाब



की दस साला मुद्दत में उसकी तअ़्लीम दस बारह पारे से ज़्यादा न होती थी,इस निसा़ब में कोशिश की गई है कि तर्जमा या तफ़्सीर के ज़रीआ़ पूरे कुरआन करीम का इजमाली या क़द्रे तफ़्सी़ली दर्स व मुता़लअ़् हो जाए।

2.साबिक़ा निसा़ब में सि़हा सित्ता से सिर्फ़ तीन किताबें स़ही बुख़ारी,स़ही मुस्लिम और जामेअ़् तिर्मिज़ी ज़ेरे दर्स थीं,इस निसा़ब में बक़िया तीन कुतुब सुनने अबूदाऊद सुनने निसाई और सुनन इब्ने माजा के अबवाब भी शामिल किए गए हैं ताकि ता़लिबे इ़ल्म कम अज़ कम सि़हाह सित्ता से एक ह़द तक बिला वास्ता रोशनास हो जाए।

3.इलावा अज़ी मिश्कातुलमसा़बीह, सिहाह़ सित्ता और उन के इ़लावा मुतअ़द्दिद व कुतुब ह़दीस के जामेअ़् और नफ़ीस इन्तेख़ाब पर मुश्तमिल है मगर दर्स में सौ सवासौ सफ़हात से ज़्यादा न आते,इस निसा़ब में उसे डेढ़ साल ज़ेरे दर्स रख कर ज़्यादा से ज़्यादा अहादीस करीमा मुता़लअ़् में लाने की कोशिश की गई है,इसलिए कि ह़दीसे रसूल इस्लामियात का माख़्ज़ दोम और शारह़ कुरआन हकीम है।

4.तसव्वुफ़ की कोई किताब बा ज़ाब्ता दाख़िल दर्स न थी जिस से बड़ी कमी का ऐहसास होता था,इस निसा़ब में :

(अलिफ़)हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली(505 हिजरी–450) की मुख़्तस़र और जामेअ़् किताब मिन्हाजुल आ़बेदीन शामिल की गई है।

(ब)मिश्कात शरीफ़ मुकम्मल करना लाज़मी जिस के किताबुर्रक़्क़ाक़ के मज़ामीन तस़्स़व्वुफ़ और अहले तस़्स़व्वुफ़ का

ख़ास़ माख़्ज़ हैं और अख़्लाक़ व ऐहसान का ह़ामिल बनाने में अहादीसे करीमा का अपना अहम किरदार है,दिल व दिमाग़ में कलिमाते रसूल अ़लैहिस्सलात वस्सलाम की असर आफ़रीनी का एक ख़ास़ इम्तियाज़ और बुलन्द मक़ाम है।

5.फ़िक़्ह के दर्स में उ़मूमन किताबुत्तहारत, किताबुस़्स़लात़ किताबुल बुयूअ़,किताबुन्निकाह,किताबुत्तलाक़ के चन्द अबवाब होते थे तमाम फ़िक़्ही अबवाब यह त़ौर मतन भी नज़र से न गुज़रते,इस नुक़्स़ को दूर करने के लिए नूरुलईज़ाह़ से त़हारत व इबादात और कुदूरी से बक़िया फ़िक़्ही अबवाब को शामिल किया गया है,उस़ूल फ़िक़्ह की कोई किताब मुकम्मल न होती थी अब पूरी उस़ूलुश्शाशी दाख़िल दर्स है।

6.आज यह सितम भी हो रहा है कि बहुत से मदारिस में कुछ ऐसे मुदर्रिसीन नज़र आते हैं जो छः माह में मीज़ान व मुन्शइब और नोह़मीर और साल भर में इ़ल्मुस्सिग़ा व हिदायतुन्नोह़ भी मुकम्मल नहीं करते बल्कि उन में से हर किताब के चन्द औराक़ पढ़ा कर यह समझते हैं कि हम ने त़लबा और इदारे पर बड़ा एहसान कर दिया,जब कि यह खुला हुआ नज़्म है,फिर इन्तेज़ामिया की जानिब से कोई गिरफ़्त भी नहीं होती और त़लबा को हर साल अगले दर्जे के लिए तरक़्क़ी मिलती जाती है और वह एक खोखले दरख़्त या पोस्त बे मग़्ज़ की स़ूरत में इदारों से फ़ारिग़ हो जाते हैं,ज़िम्मे दारी का ऐहसास और ख़ुदा का ख़ौफ़ कम व बेश हर जगह से रुख़स़त होता जा रहा है। इस निस़ाब में स़र्फ़, नोह़,अदब



मन्तिक़,बलाग़त,फ़िक़्ह उस़ूले फ़िक़्ह उस़ूले ह़दीस वग़ैरा फुनून की बुनियादी किताबें मुकम्मल त़ौर पर शामिल की गई हैं क्योंकि उन के बग़ैर ज़ी इस्तिअ़दाद मौलवी या आ़लिम बनाने का तसव्वुर एक दिल चस्प ख़्वाब से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता,इन्तेज़ामिया और असातिज़ा दोनों की ज़िम्मेदारी है कि निस़ाबे की तक्मील से ग़फ़लत रवाना रखें।

7.फ़ारसी ज़ुबान भी दाख़िले निस़ाब रखी गई है जिस की दो वज्हें हैं एक यह कि उर्दू में फ़ारसी के बहुत से अल्फ़ाज़ और तराकीब दाख़िल हैं जिन्हें अच्छी त़रह़ समझने, बोलने और लिखने के लिए फ़ारसी से आश्नाई ज़रूरी है दूसरी वजह यह है कि बहुत सारा दीनी व इ़ल्मी ख़ज़ीरा फ़ारसी ज़बान में भी है,इस से इस्तिफ़ादे और उस की अ़क़्दा कुशाई के लिए फ़ारसी में मुहारत ज़रूरी है 12।

अब ज़रा जामिआ़ सि़द्दीक़िया के ह़ालिया निस़ाब को देखें जो 1427 हिजरी से राइज है जिस में मज़कूरा बाला अकसर उमूर आप ज़रूर पायेंगे।

**तअ़्लीमी त़रीक़ा कार :**

इलाक़े और माह़ौल से मुतास्सिर त़लबा,मेह़नत के बावजूद,अ़रबी स़लाहि़यत पैदा नहीं कर सकते उन्हें इमामत और नाज़रा की तअ़्लीम के लिए तैयार करने की कोशिश भी जारी रहती है,मस्लन एक वक़्ते मुक़र्रर कर के उस में उन्हें इम्ला,ख़ुश ख़त़ और क़रअत व तजवीद की मश्क नीज़ जुमा व ईदैन वग़ैरा के ख़ुत़बे हि़फ़्ज़ कराने की जिद्दो जिहद जारी रहती है। नोह़ और सि़र्फ़ के क़वानीन पर मसाबिक़े और

मकालमे रखवाए जाते हैं नीज़ सर्फ़ में महारत हासिल करने के लिए चन्द सफ़े याकापी पर लख कर सेग़े दिए जाते हैं जिन का बहस,सेग़ा,तर्जमा,मादा बताना और सेह अक़्साम व शश व हफ़्त अक़्साम वाज़ेह करना रहता है और हर जुमरात को आमूख़्ता सुना जाता है और मुख़्तर टेस्ट भी लिया जाता है जिस से तालिब इल्म में सवाल समझने,जवाब सोचने और लिखने या बताने की सलाहियत पैदा करना मक़सूद होता है।

(1438 हिजरी 2017 ई में ख़िदमत अंजाम देने वाले)

**मुदर्रिसीन व मुलाज़िमीन :**

क़ाइदे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा अलहाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली व सरबराहे आ़ला जामिआ़ सिद्दीकिया,निज़ामत व ऐहतमाम की ज़िम्मेदारियों के अ़लावा बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा कुतुब हदीस की तदरीस की ख़िदमत भी अंजाम देते हैं :

अस्माए मुदर्रिसीन,सुकूनत लियाक़लत आग़ाज़े ख़िदमत मनसब।

1.मौलाना अल्हाज नूर मुहम्मद रहोमा पांधी का पार क़ारी,आ़लम,फ़ाज़िल 11,12,1990 सद्र मुदर्रिस।

2.अल्हाज मौलाना मुहम्मद उल्फ़ अकबरी आरीसर बाम नूर अरी,आ़लम,फ़ाज़िल 01,04,1993,नाइब सद्र।

3.अल्हाज मौलाना मुहम्मद रहीम अकबरी आरीसर देरासर क़ारी,आ़लिम,फ़ाज़िल 01,10,1993 अ़रबी मुदर्रिस

4.मौलाना हाजी मुहम्मद इस्हाक़ सिद्दीक़ी बलोच सीहानिया क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल1,5,1997 अरबी मुदर्रिस



5.मौलाना अ़ब्दुर्रहमान सिद्दीक़ी रहोमाहिर पालिया क़ारी,आ़लिम,फ़ाज़िल 11.1.1998 ख़ादिम व नगराँ

6.क़ारी मुहम्मद आदम अकबरी समा,रत्तेकातिला क़ारी 17.1.2000 नाज़िरा मुदर्रिस

7.मौलाना मुहम्मद इस्लाम सिद्दीक़ी रहोमा पांधी कापार क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल12,1,2004 अ़रबी मुदर्रिस

8.मौलाना मुहम्मद हाशिम नक्शबन्दी समीजा ईटावा क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 1,5,2004 अ़रबी मुदर्रिस

9.मौलाना मुहम्मद रहीम सिद्दीक़ी सम्मा नवातिला क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 17,6,2006 नाज़िरा मुदर्रिस

10.मौलाना फ़त्ह मुहम्मद सिद्दीक़ी ख़्याला गजो जैसलमीर क़ारी,आ़लिम,हाफ़िज़ 16,10,2008 अरबी मुदर्रिस

11.मौलाना मुहम्मद क़बूल सिद्दीक़ी नोहड़ी भो नगरिया क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 16.10,2008 अ़रबी मुदर्रिस

12.मौलाना फ़ैज़ मुहम्मद सिद्दीक़ी बलोच शीसन क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 26,9,2010 अ़रबी मुदर्रिस

13.मौलाना ग़ुलाम हैदर सिद्दीक़ी आरीसर बामनौर क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 14,9,2011 अ़रबी मुदर्रिस

14.मौलाना रौशन दीन सिद्दीक़ी समीजा पांधी कापार क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 3,9,2012 अ़रबी मुदर्रिस

15.मौलाना मुहम्मद हनीफ़ सिद्दीक़ी जोनेजा कोटड़ा क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 10,8,2015 नाज़िरा मुदर्रिस

16.मौलाना मुहम्मद शरीफ़ सिद्दीक़ी मंगलिया,जोड़, क़ारी,आ़लिम,फ़ाज़िल,10,8,2015 नाज़िरा मुदर्रिस

17.मौलाना अरबाब अ़ली सि़द्दीक़ी बलोच,शीसन,क़ारी, आ़लिम,फ़ाज़िल 1,8,2015 नाज़िरा मुदर्रिस

18.मौलाना ख़लीलुल्लाह फैज़ी यूपी क़ारी,आ़लिम फ़ाज़िल 22,8,2016 अ़रबी मुदर्रिस।

**मास्टरान व ख़ादिमीन हज़रातः**

मास्टर अ़ब्दुर्रशीद लोहार बाड़मेर 21,3,1993 बाड़मेर आफ़िस सिक्रेटरी मास्टर मुहम्मद इस्माईल बलोच सालारिया 31,10,1998 हेडमास्टर मास्टर मुहम्मद सलीम,हंगोर जा उ़मर कोट 1,4,2004 मास्टर मास्टर ग़ुलाम अ़ली गजूबोनहार 1,8,2008 मास्टर मास्टर ज़हूर अहमद मोईला आसाड़ा 13,2,2008 मास्टर स़द्दाम हुसैन रहोमा हर पालिया 5,4,2012 कमप्यूटर मास्टर मास्टर कबूल समीजा झड़पा 15,8,2013 मास्टर मास्टर बरकत अ़ली सहतिया,मुरीदकापार 8.2.2015 मास्टर मुहम्मद यूनुस,सम्मा वर निहार 16,10,2004 लाइट निगराँ मुहम्मद हसन समीजा मठारानी 1,3,1995 बावरची मुहम्मद हाशिम सम्मा,वर निहार 25,9,2010 बावरची मुहम्मद इब्राहीम फलोदी 4.8.2015 बावरची अरबाब अ़ली ख़ास़ ख़ीली धनाओ 9.2.2016 बावरची अ़ब्दुस्सतार वाघेर लूनी शरीफ़ 22,7,2016 बावरची मंठार अली समीजा सरोप कातला 10,11,2013 स्टोर इंचार्ज अ़लाउद्दीन समीजा सरोप कातला 23,8,2014 हास्टल नगराँ मुहम्मद सौमार दिल,फोगड़वा 1,5,1985 मीहार खथोर ख़ान सम्मा सरोप कातला मीहार मुहम्मद तय्यब सम्मा नवातिला 1,11,1997 डराइवर अ़ब्दुलग़नी जोनीजा मारवाड़ी राह 14,8,2014 डराइवर अ़ब्दुलग़नी सम्मा



नवातिला 1,1,2001 चरवाह मुहम्मद नस़रुल्लाह सम्मा नवातिला 1,2,2002 चोकीदार मुहम्मद मन्ज़ूर नोहड़ी सीनहार डराइवर फ़ीरोज़ भाई जोधीपुरी डराइवर क़ारी महकमुद्दीन उ़र्फ़ माखन ख़ान संगरासी बोइठ।

**क़वानीने इदाराः**

इस मदरसा में हमेशा नाज़िम आ़ला और स़दर और ख़ज़ानची के इन्तेख़ाब का हक़ बानी जामिअ़ा और उन की औलाद को होगा और उन ओ़हदों पर फ़ाइज़ हमेशा अहले सुन्नत व जमाअ़त(बरेली)होंगे दूसरे फ़िर्क़ा की क़त़ई गुंजाइश नहीं है,कभी सवाल उठे तो मौजूदा हुकूमत को इस(दफ़अ़ा अव्वल)के मुत़ाबिक़ फ़ैस़ला देना होगा। सिंधी,और सर परस्ती और ऐहतमाम की ज़ुमाम भी हमेशा क़िब्ला अल्हाज मौलाना पीर सय्यद ग़ुलाम हसीन शाह जीलानी दामत बरकातोहुमुल क़ुद्सिया और उन की औलाद अम्जाद के हाथ में रहेगी किसी मिम्बर की शमूलियत व बर त़रफ़ी में मश्वरा के बाद हमेशा उन का हुक्म ह़र्फ़ आख़िर रहेगा।

2.जो शख़्स़ बच्चा दाख़िल कराने आएगा वह बच्चा की कम से पाँच साल रहने की गारनटी देगा और बीच में नहीं उठाएगा।

3.अगर पाँच साल से क़ब्ल उठाएगा तो जुरमाना जमा करेगा।

4.ख़ुदाना ख़्वास्ता बच्चे को कोई जानी या माली नुक़स़ान हो गया तो इस पर वालिदैन और रिश्ता दार नाह़क़ क़ानूनी चारा जूई नहीं कर सकते। फ़क़त

इंचार्ज एम,एम क़ाज़ी अकबरी देरासर आरीसर 11/जमादिल उख़रा 1406 हिजरी 21 फ़रवरी 1986 ई जुमा

**त़लबा के लिए क़वानीन :**

जामिआ़ में तअ़्लीम व तरबियत पर ख़ास़ तवज्जोह दी जाती है इस ज़िम्न में नज़्म व नस्क़ बर क़रार रखने की ग़र्ज़ से त़लबा के लिए लाज़िम है कि वह मुन्दर्जा ज़ैल उमूर का ख़्याल करें।

1.दर्सगाह,हॉस्टल,दरगाह और मस्जिद में मुकम्मल त़ौर पर नज़्म व नस्क़ बर क़रार रखें और उन की स़फ़ाई का पूरा ख़्याल करें।

2.कुतुब और जामिआ़ की इम्लाक को संभाल कर रखें नीज़ उस को नुक़्स़ान न पहुँचायें।

3.निज़ामुलऔक़ात के मुत़ाबिक़ सुबह व शाम अपने वक़्त पर पहुँचें और घन्टी में ताख़ीर न करें।

4.जामिआ़ में तअ़्लीमी माह़ौल का तक़द्दुस बर क़रार रखने के लिए संजीदगी और मुतानत इख़्तियार करें।

5.जामिआ़ के अन्दर बाहर मुहज़्ज़ब रविया इख़्तियार करें और ज़ुबान में शाइस्तगी बरतें

6.जामिआ़ के वाजिबात बर वक़्त अदा करें।

7.असातिज़ा और दीगर अराकीन और जामिआ़ के मुआ़वेनीन का ऐहतराम करें।

8.क्लास में मजूज़ा लिबास की पाबन्दी करें और हमा वक़्त बा वुज़ू रहें।

9.सरकारी या जामिआ़ का शनाख़्ती कार्ड हमा वक़्त



अपने पास रखें।

**दाख़िला के क़वाइदः**

जामिआ़ में दाख़िला के लिए तअ़्लीमी मेअ़्यार कम अज़ कम नाज़िरा मुकम्मल हो।

जामिआ़ में दाख़िला के लिए दरख़्वास्त मजूज़ा दाख़िला फ़ारम ही पर क़बूल की जाएगी।

दाख़िला की तारीख़ों की इत्तेलअ़् सालाना छुट्टी पर और अख़्बारात के ज़रीए दी जाएगी।

दाख़िला मिल जाने के बाद मजूज़ा मुद्दत के अन्दर जामिआ़ के वाजिबात जमा न कराने की सूरत में दाख़िला मन्सूख़ तसव्वुर होगा।

दरख़्वास्त दाख़िला के साथ दस्तावीज़ात ज़ैल मुन्सलिक करना ज़रूरी हैं।

1.नाज़िरा की रिज़ल्ट लिस्ट की तस्दीक़ शुदा नक़ल।

ब.साबिक़ा तअ़्लीमी इदारा के सरबराहे आ़ला से(चाल चलन और इदारा छोड़ने की वजह पर मुश्तमिल)सर्टिफ़िकट लाना होगा।

जीम. उम्मीद वार त़ालिबे इल्म की,आई डी(शनाख़्त कार्ड)राशन कार्ड,आधार कार्ड वग़ैरा पुरूफ़ की नक़्लें जमा करानी होंगी। टेस्ट के बाद नम्बरों की बुनियाद पर दाख़िला होगा।

दाख़िला के लिए टेस्ट तहरीरी और तक़रीरी दोनों होंगे।

दाख़िला के वक़्त उ़मर पन्द्रह से बीस साल की ही

क़ाबिले क़बूल है,ख़ुसूसी हालात के पेशे नज़र इस्तिस्ना किया जा सकता है।

दर्से निज़ामी में दाख़िला के ख़्वाहिशमन्दों की कसरत पर इम्तेहान में अव्वल नम्बर से पास होने वाले त़लबा को तरजीह दी जाएगी।

दौराने साल बिलउ़मूम दाख़िला बन्द रहता है।

बेरूनी त़लबा का दाख़िला हॉस्टल की गुन्जाइश के मुत़ाबिक़ होगा।

नये त़लबा के दाख़िला के वक़्त बिस्तर और स़फ़ाई ख़र्च के 2500 रुपये और क़दीम त़लबा को हर साल हॉस्टल सफ़ाई फीस के 2000 रुपये जमा कराने होंगे।

दर्से निज़ामी को तमाम औक़ात में सफ़ेद लिबास शलवार क़मीस़ और सफ़ेद अ़मामा पहनना लाज़मी है, दीनियात के त़लबा पर भी पढ़ाई के वक़्त सफ़ेद लिबास लाज़मी है।

**ख़ार्जा की अस्बाबः**

हर वह त़ालिब इल्म मुजिबे अख़्राज होगा जो 1.बिला इजाज़त व इत्तेलाअ़ मुसलसल एक हफ़्ता किसी मअ़कूल उ़ज़्र के बग़ैर ग़ैर हाज़िर रहेगा। 2.जामिआ़ के उस़ूल की ख़िलाफ़ वरज़ी और इदारा की उ़मूमी मिज़ाज अग़राज़ व मक़ासि़द और पालीसी के मनाफ़ी सर गर्मियों में हिस़्सा लेगा। 3.हुसूल तअ़लीम में दिलचस्पी नहीं लेगा। 4.जामिआ़ के तरबियती पहलू पर तवज्जोह और निज़ामुलऔक़ात की पाबन्दी नहीं करेगा। 5. असातिज़ा या मज्लिसे मुन्तज़िमा की तौक़ीर न



करने पर या किसी उस्ताज़ से बदसुलूकी करने पर इस का ख़ार्जा किया जाएगा।

इम्तेह़ानात :

1.सेह माही टेस्ट के साथ साल में दो इम्तेहान शश्माही और सालाना होते हैं।

2.सालाना इम्तेहान में नाकाम होने से इदारा में सहूलियात से हमरूम किया जा सकता है नीज़ उस को उसी जमाअ़त में बैठना होगा जिस में वह फ़ेल हुआ।

3.इम्तेहानात तहरीरी और तक़रीरी हुआ करेंगे।

4.काम्याब होने के लिए हर किताब में कम से कम 33 फ़ी स़द नम्बर हा़सि़ल करने होंगे।

5.सालाना इम्तेहान से क़ब्ल हर त़ालिबे इ़ल्म अपनी हॉस्टल(स़फ़ाई ख़र्च) जमा कर के उस की रसीद ले कर ही इम्तेहान में बैठने का मजाज़ होगा।

**दारुलमुतालअ़ :**

1:नमाज़े ज़ोहर के बाद या अ़स्र के बाद संजीदगी से मुतालअ़ करें।

बः नायाब और पुरानी कुतब मुतालअ़ के लिए लाइब्रेरी से बाहर न ले जाऐं।

ज.दीगर कुतुब भी मुतअ़य्यना मीआ़द तक दी जाऐंगी जिन को वक़्त पर जमा करना होगा। दाल. लाइब्रेरी के निगराँ या ज़िम्मेदार के इ़लावा कोई अपनी मर्ज़ी से लाइब्रेरी खोलने या किसी किताब को लेने का मजाज़ नहीं जो मज़मून या किताब मुरत्तब हो वह इदारा के ज़िम्मे दारान से ज़रूर चेक

कराना होगा।

तअ़्तीलात :

(अलिफ़)जामिआ़ में हफ़्ता वार छुट्टी जुमा के दिन होती है:

ब.ईदुअज़्हा,ईद मीलादुन्नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम,आ़शूरा,योम आज़ादी,योमे जमहूरिया और ग्यारवीं शरीफ़ ह़ज़रत पीराने पीर ग़ौसे आ़ज़म अ़लैहिर्रमा को तअ़्तील होती है। जीम.सालाना छुट्टी शअ़्बान में सालाना जलसा के बाद से 15 शव्वाल तक और शश्माही छुट्टी दस दिन की माह रबीउ़लअव्वल में हुआ करती है।

**ज़वाबित़ बराए मुदर्रिसीन :**

मुदर्रिसीन के लिए बवक़्त तदरीस मुन्दर्जा ज़ेल कुछ फ़राइज़ फ़राइज़ और अख़लाक़ी पाबन्दियाँ हैं जिन पर हर मुदर्रिस को पाबन्दी करना ज़रूरी और अख़्लाक़ी फ़र्ज़ है।

1.बवक़्ते तदरीस हर मुदर्रिस को सफ़ेद लिबास और अ़मामा मअ़् टोपी(जुब्बा,शलवार और सदरी या शेरवानी) पहनना ज़रूरी है।

2.बवक़्ते तदरीस तफ़सीर व ह़दीस के मुदर्रिस को ख़ुश्बू इस्तिअ़्माल करना और बा वज़ू होना ज़रूरी है।

3.हत्तलमक़दूर बा अदब होकर दर्स दें। और बग़ैर मुतालअ़् के कोई सबक़ न पढ़ाऐं,ख़ुसूस़न मन्क़ूलात को।

5.मुतालअ़् ह़त्तलमक़दूर इतना गहराई और पाबन्दी से करें कि जिस से त़लबा को मुतमइन कर सकें।

6.बवक़्त तदरीस उर्दू ज़बान आ़म फ़हम इस्तिअ़्माल



करें और ठहर ठहर कर गुफ़्तगू करें जिस से त़लबा आसानी से समझ सकें।

7.त़लबा के बारबार पूछने पर संजीदगी से हर बार प्यार व मोहब्बत से कमा ह़क़्क़ोहु समझाऐं।

8.दौराने तदरीस ख़ारजी उमूर(मुबाइल,अख़्बार और बातों वग़ैरा)से परहेज़ करें।

9.घन्टियों में पाबन्दी से त़लबा की ह़ाज़िरी लें।

10.मुक़र्ररा तअ़्लीमी वक़्त में ग़ैर दर्सी कुतुब के मुतालअ़् से दूर रहें पूरी घन्टी त़लबा पर स़र्फ़ करें।

11.त़लबा की मौजूदगी में उन उमूर से गुरेज़ करें जो अख़्लाक़ और वक़ार में कमी के बाइस हों।

12.हर मुदर्रिस अपनी डियूटी को अपना फ़र्ज़ मनस़बी समझ करका बन्द रहे।

13.हर मुदर्रिस ख़ुसूस़न फजिर व ज़ोहर में त़लबा को नमाज़ के लिए पहुँचाए,नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ने का त़लबा को पाबन्द बनाए,बग़ैर ज़रूरत दुआ़ए सानी से पहले मस्जिद से न निकले।

14.बादे फ़जिर कोई मुदर्रिस,मास्टर और त़ालिबे इ़ल्म न सुए,अ़रबी और नाज़िरा के मुदर्रिस,लाज़िमन फ़जिर बाद सबक़ पढ़ाऐं।

15. बादे सलाम व बाद ज़ोहर फ़ौरन स्टाफ़ ह़ाज़िरी रजिस्टर में दस्तख़त़ कर लें और बिला ताख़ीर क्लास में बैठें,तअ़्लीम व मुत़ालअ़् के वक़्त त़लबा हों न हों क्लास में नज़र आयें,बिला वजह दो मुदर्रिस एक क्लास में जमा न हों

या दूसरे किसी से फालतू बातें न करें।

16.किसी मुदर्रिस,मास्टर और त़ालिबे इ़ल्म को लुंगी पहनने की सिवाए सोने और ग़ुस्ल के वक़्त के इजाज़त नहीं।

17.मुन्शियात की और रंगीन कपड़े और पेन्ट शर्ट पहनने की इह़ाता में इजाज़त नहीं,सब पर इस्लामी वज़अ़ क़तअ़ ज़रूरी है।

18.मुत़ालअ़ और तदरीस के वक़्त अख़्बार व मुबाइल हर गिज़ अपने पास न रखें और कोई अपना मुबाइल किसी त़ालिबे इ़ल्म को न दे।

19.रजिस्टर हर माह पर कर के चेक कराया जाए, त़लबा की हर क़िस्म की कापियाँ और कुतुब और क्लास की स़फ़ाई वग़ैरा पर ध्यान दिया जाए।

20.तफ़रीह़ की हफ़्ता में स़िर्फ़ जुमा को सुबह दस बजे तक और बाद नमाज़े अ़स्र इजाज़त है,हमा वक़्त घूमते नज़र न आऐं।

21.माहाना जाँच में अच्छा रिकार्ड लाने की कोशिश करें,और जाइज़ा से तंग दिल न हों बल्कि वसीअ़ ज़रफ़ी का मुज़ाहिरा करें।

22.कोई मुदर्रिस व मास्टर किसी बच्चा से कपड़े न धुलाए बल्कि अपना ज़ाती काम ख़ुद करें।

23.असातिज़ा और मास्टर ह़ज़रात हरगिज़ बच्चों के साथ वरज़िश वग़ैरा न करें।

**बवक़्ते दाख़िला असातिज़ा के लिए त़रीक़ा कारः**

मौलाना हाजी मुहम्मद इस्लाम सिद्दीक़ी और मौलाना



फ़ैज़ मुहम्मद सि़द्दीक़ी :

1.नये पुराने त़लबा की अलग अलग लिस्ट तैयार करना,सामान चेक कर के मुबाइल और रंगीन कपड़े ज़ब्त़ कर के इस पर लेबील लगाना।

2.नये त़लबा से 2500 रुपये(बिस्तर व स़फ़ाई के) और पुराने त़लबा से 2000 दो हज़ार रुपये हॉस्टल स़फ़ाई के वस़ूल करना रसीद दे कर।

3.जिन के पास सफेद लिबास न हो तो उन को लिस्ट में और हास्टल में इन्दराज व दाख़िला मम्नूअ़

4.सामान चेक करना और फीस जमा करने के बाद ही जन्रल लिस्ट में नाम दर्ज करना और रसीद देना।

**मौलाना मुहम्मद हाशिम,मौलाना मुहम्मद हनीफ़ सि़द्दीक़ीः**

5.रसीद देख कर हॉस्टल में त़लबा के लिए कमरे तजवीज़ करना।

6.कमरों में तिजोरियों की चाबियाँ और बिस्तर देना।

**मौलाना अल्हाज मुहम्मद उल्फ़ अकबरी,मौलाना मुहम्मद क़बूल सि़द्दीक़ीः**

7.इसी रसीद के आधार पर अ़रबी दरजात और नाज़िरा का जाइज़ा लेकर दर्जा मुतअ़य्यन करें। मास्टर मुहम्मद सलीम व मास्टर ज़ोहूर :

8.इसी रसीद के आधार पर स्कूल में दाख़िला की कारवाई शुरू करें।

**मौलाना मुहम्मद रहीम सि़द्दीक़ी और मौलाना फ़तह मुहम्मद सि़द्दीक़ीः**

9.इसी रसीद के मुत़ाबिक़ कुतुब ख़ाना से किताबें दें।

**मौलाना गुलाम हैदर सि़द्दीक़ी,मौलाना अरबाब अ़ली सि़द्दीक़ी और मौलाना**

**मुहम्मद शरीफ़ सिद्दीक़ी। मौलाना रौशन दीन सिद्दीक़ी**

10.मज़कूरा बाला कारिवाइयों के बाद अ़रबिया तहतानिया मौलाना रौशन दीन,फ़ौक़ानिया मौलाना ग़ुलाम हैदर सिद्दीक़ी और नाज़िरा अलिफ़,बा वालों को मौलाना अरबाब अ़ली और मौलाना शरीफ़ रसीद जमा कर के अपनी अपनी क्लासों में बठाऐं नीज़ यह मुदर्रिसीन फ़िलहाल जन्रल हाज़िरी,खाना,नाश्ता और पंजगाना अपनी ज़ेरे निगरानी रखें, जब तक कि बा क़ायदा अस्बाक़ तक़सीम न हो जाए।

मअ़मूलात यौमिया वास्बूआ :

1.पाबन्दे शरअ़ बनाने और सुलूक व तस़व्वुफ़ से क़रीब करने के लिए बड़े त़लबा पर तहज्जुद दुरूद शरीफ, दलाइलुलख़ैरात और अज़ाने फ़जिर से जमाअ़त होने तक निस़्फ़ घन्टा तिलावते कलाम पाक लाज़िमी है,नमाज़े फ़जिर के बाद फ़ौरन हदीस,तफ़सीर,फ़िक़्ह,और तर्जमतुलकुरआन के दर्स की एक घन्टी पढ़ाना ज़रूरी क़रार दिया गया है।

2.नमाज़े फजिर और नमाज़े जुमा के बाद मुस़ाफ़ा और उस में क़स़ीदा बुर्दा पढ़ना और रोज़ाना अ़स्र की नमाज़ के बाद मज़ार शरीफ़ पर स़लात व सलाम पेश करना मअ़मूलात में दाख़िल है,इतवार और जुमेरात को अ़स्र की नमाज़ के बाद निस्फ़ घन्टा तक दुरूद शरीफ़ और दलाइलुल ख़ैरात के चन्द ख़त्म भी शामिल हैं।

3.मदरसा का इफ़्तेताह़ स़लात व सलाम से होता है जिस का वक़्त नाश्ता के बाद तक़रीबन आठ बजे हुआ करता



है,बे राह रवी बद अख़्लाक़ी से बचाने और वक़्त का पाबन्द बनाने के लिए सुबह से रात के ग्यारह बजे तक त़लबा को मुख़्तलिफ़ मअ़मूलात का पाबन्द कर दिया गया है, मसलन नमाज़े तहज्जुद,तिलावत,नमाज़े फ़जिर और एक अहम सबक़ के बाद नाश्ता रखा गया है और ज़रूरियात से फ़राग़त फिर स़लात व सलाम के बाद से साढ़े बारह बजे तक आठ घन्टियाँ हैं जिन में नाज़िरा के त़लबा बाज़ स्कूल में और कुछ मदरसा में पढ़ते हैं और सुबह के वक़्त अ़रबी दरजात वाले मदरसा के अस्बाक़ से फ़ारिग़ हो जाते हैं।

4.दोपहर के खाने,क़ैलूला,और नमाज़े ज़ोहर के बाद ढाई बजे से पाँच बजे तक दर्से निज़ामी वाले त़लबा स्कूल में तअ़लीम पाते हैं,नमाज़ अ़स्र के बाद तफ़रीह,नमाज़ मग़्रिब के बाद दो ढाई घन्टे मुत़ालअ़ के लिए नो बजे खाना और नमाज़े इशा से फ़ारिग़ होकर अ़रबी वाले रात के ग्यारह बजे तक मुत़ालअ़ करते और नाज़िरा के बच्चे सुला दिए जाते हैं।

5.जुमारात का दिन गुज़ार कर रात को मग़्रिब के बाद ह़ल्क़ा ज़िक्र और चारों सुलासुल के नम्बर वाइर ख़त्म शरीफ़ पढ़ाए जाते हैं और दुआए ख़ैर के बाद एक घन्टा तक़रीर की मुमारस्त व तम्रीन के लिए बज़्म फिर खाना और नमाज़े इशा के बाद मह़फ़िले नअ़त शरीफ़।

6.जुमा के दिन नमाज़े फ़जिर के बाद तिलावत कुरआन मजीद,उस के बाद पूरे गिराउंड दोनों बिल्डिंगों और ख़ान्क़ाह शरीफ़ व मस्जिद की सफ़ाई फिर सलात़ व सलाम होता है उस के बाद बाज़ त़लबा अत़राफ़ में जुमा पढ़ाने जाते हैं दूसरे

कपड़े धोने ग़ुस्ल वग़ैरा में मशग़ूल होते हैं,जुमा की नमाज़ से अज़ान अ़स्र तक कैलूला करते हैं।

**बीस साला तअ़लीमी कान्फ़्रेंस :**

**मुन्अ़क़िदा शअ़बान(1426 हिजरी) में सुनाई गई एक अहम रिपोर्ट :**

**आह इस्लाम तेरे चाहने वाले नहर है**
**तो था जिन का चान्द वह हाले न रहे**
**ख़ाक हो जाऐं अ़दू जल कर मगर हम**
**तो रज़ा**
**दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का**
**सुनाते जायेंगे**

आप लोग जामिअ़ा सिद्दीक़िया और दूसरे इदारों को देख लें क़ौमे मुस्लिम ने बसूरत चन्दा जो कुरबानी इदारों को पेश की है यह इदारे उ़लमा, कुर्रा और हुफ़्फ़ाज़ की सूरत में वह कुरबानी क़ौम को वापस करते हैं,इन में आ़लिम,क़ारी और हाफ़िज़ों की दस्तार बन्दी आप हर साल मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं,यह सब कुछ आप लोगों के चन्दा का कमाल नतीजा और समरा है।

मुसलमानो!शादियों,ग़मियों में बे तहाशा खो रुपये हम लोग बहाते हैं,अगर ऐसे इदारों में हमारी दौलत ख़र्च होना शुरू हो जाए तो यह इदारे सैकड़ों उ़लमा पैदा कर सकते हैं,आप कहोगे उ़लमा से मुल्क भरा पड़ा है कसीर इदारे होने पर क़ौम इतनों को चन्दा कैसे दे पाएगी जवाब मे अ़र्ज़ है दोस्तो बुज़ुर्गो! यह तो सोचो आज इदारों को हम मौसम बारिश में अनाज पेश करते हैं इस से हमारी ज़मीन की



ज़कात(उश्र)अदा होती है,आज रमज़ानुलमुबारक में इलाक़ा के अहले सरवत ह़ज़रात ने ज़कात देना शुरू कर दिया है,यूँ फ़रीज़ा ज़कात अदा हो रहा है,बहुत से गाँवों में शादियाँ इस्लामी त़र्ज पर होना शुरू हो गई हैं,ख़ुराफ़ात,ढोल,बाजे और औ़रतों के गीत वग़ैरा बन्द कर के शादियों को महफ़िल मीलादुन्नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से सजाया जाने लगा है,कई एक वीरान पड़ी मसाजिद,जिन में जुमा तक नहीं होता था आज वह जुमा में नमाज़ियों से खचा खच भरी हुई नज़र आती हैं,जिन क़रियाजात में साल भर में एक जलसा नहीं होता था,वहाँ दस दस मुहाफ़िल होने लगी हैं,मदरसे खिलने लगे,मौलाना और इमामों की तन्ख़्वाह देना लोगों ने शुरू कर दिया,और कमेटियाँ क़ाइम करना हमारे लिए ख़्वाब के मिस्ल था,आज वहाँ कमेटियाँ बन गई और हम में से हर एक दारुलउ़लूम बनाने और चलाने का जज़्बा रखता है,यह सब कुछ स़दक़ा उ़लमाए किराम का है अगर इलाक़ा में उ़लमा पैदा न होते तो यह सब ख़्वाब शमिन्दा तअ़बीर न होते,उ़लमा कसरत से होंगे तो इ़ल्मी नूर और ज़्यादा फैलेगा,अल्लाह के प्यारे हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद पाक है :طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة हर मुसलमान मर्द और औ़रत पर इ़ल्म का सीखना फ़र्ज़ है,अगर इस ह़दीस पाक पर अ़मल कर लें तो हर घर इ़ल्म के नूर से जगमगाने लगेगा,बग़ैर इ़ल्म के मुसलमानी मुर्दा जिस्म की त़रह है,आज एक घर इलाक़ा में ऐसा बता दो जिस का हर फ़र्द इ़ल्मे दीन रखता हो?कुरआन मजीद और उर्दू की किताबें पढ़ा

हुआ हो?एक घर भी आप नहीं बता सकते,फिर कैसे कहते हैं कि इ़ल्म बहुत हो गया, हमारे बुज़ुर्गाने दीन ने यहाँ तक फ़रमाया है कि मह़ल्ला महल्ला में मदरसा हो,गली गली में मकतब नज़र आए ताकि इ़ल्म आ़म हो जाए आप कहते हैं एक एक गाँव में बहुत से आ़लम हो गए मगर ह़क़ीक़त यह है कि हमारे बाड़मेर,जालोर और जैसलमीर गाँव बल्कि कई तह़सीलें आ़लिमों से ख़ाली हैं,इदारों और मसाजिद से मुदर्रिसीन व इमामों के मुत़ालबे हो रहे हैं,अगर किसी गाँव में सौ आ़लिम बन जाऐं तब भी जगहें ख़ाली ही मिलेंगी,इस लिए दोस्तो!इ़ल्म की जगत जगाने की अश्द ज़रूरत है,यह मौला तआ़ला का करम हुआ कि बुज़ुर्गों ने हमारे इ़लाक़ा की क़ियादत संभाल ली है,जिन की ज़ेरे क़ियादत यह इदारे और जलसे व जुलूस कामयाब हो रहे हैं,यह सि़द्दीक़ी स्टेज हर साल देखो आप को उ़लमा व मशाइख़ से भरा हुआ मिलता है,यह कमाल बुज़ुगाने दीन का है,ह़ज़रत पीर सय्यद दादा मियाँ जीलानी जैसे बुज़ुर्गों की नज़रे करम,उ़लमा व मशाइख़ को खींच कर लाती है, बहरुलउ़लूम अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान स़ाहब क़िब्ला बार हा यहाँ तशरीफ़ लाए,किसी ने पूछा हुज़ूर आप के लिए अ़रब व अ़जम चश्म बराहे हैं,आप वहाँ नहीं पहुँच पाते सूजा शरीफ़ जैसी दुश्वार गुज़ार जगह पर ख़ुरामाँ व शादाँ चले आते हैं,फ़रमाया : मुझे भी मअ़लूम नहीं कि कौनसी मक़ना तीस्यत है जो खींचे लिए जा रही है।

दोस्तो! यह इस इलाक़ा को नूर व फ़ैज़ बख़्शे वाले सलासुल अरबअ़ के बुज़ुर्ग़ हैं जिन की दुआ़ऐं ऐसे मशाइख़ व



मुक़तदिर उ़लमा को यहाँ लाकर हमें नवाज़ रही हैं किसी दौर में इस इलाक़ा में आह सहर गाही वाले मुत्तक़ी व परहेज़गार और मुस्तजाबुद्दअ़वात भी होकर गुज़रे हैं,जोनीजा क़ौम के मियाँ मुहम्मद आ़लम मठड़या वाले,इस क़द्र मुस्तजाबुद्दअ़वात थ कि किसी के लिए दुआ़ शुरू करते तो हातिफ़ ग़ैब से आवाज़ आती कि बन्दे अब मैंने सुन ली अब दुआ़ ख़त्म कर दे तब वह दुआ़ को ख़त्म करते,ऐसे सैकड़ों स़ाफ़ दिल आ़लिम दुआ़ऐं मांग कर गए हैं,मलतान शरीफ़ के बुज़ुर्ग़ ह़ज़रत क़िब्ला मख़्दूम मुहम्मद शाह कुरैशी अ़लैहिर्रहमा ने उस सूजा शरीफ़ गाँव के क़ब्रिस्तान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था कि यह जितनी टुकड़ा है,यहा चारयार की चुंकी है,सायें क़िब्ला हाजियुलहरमैन ह़ज़रत पीर सय्यद अली अकबर शाह जीलानी अ़लैहिर्रहमा ने इसी इलाक़ा के मुतअ़ल्लिक़ अपने वक़्त में फ़रमाया था कि मुझे थर के हर गाँव बल्कि हर घर में एक वली नज़र आता है वह वली किस ने पैदा किए थे,चारों सिलसिलों के बुज़ुर्गों ने अपनी निगाहों से पैदा फ़रमाए थे,उन बुज़ुर्गों की दुआ़ऐं, बरकतें उन उलमा व मशाइख़ को लाती हैं, सख़ी सरवर नूह अ़लैहिर्रहमा के मुरीद उस इलाक़ा में कसरत से पाए जाते हैं,इस बुज़ुर्ग के दौर की बात है,मुरीद रात भर ऐ़बादत कर के सुबह ह़ाज़िर ख़िदमत हुए,जुतियाँ शबनम से तर थी, फ़रमाया बरसात में आए हो क्या?बोल शबनम की तरी है, फ़रमाया नहीं तुम्हारे जैसे इशाक़ के फ़िराक़ में रात रोई है,यह शबनम नहीं रात के आंसू हैं,कि दो बारा कब वापस आऊँ और उन के नूर भरे चेहरों को देखूँ,ऐसे बुज़ुर्ग जिस त़रफ़ भी निकल जाते

इश्क़ व मोहब्बत के खेत बो देते। पीर या गारा के मुरीदीन जैसलमीर और बाड़मीर में कसरत से हैं,ह़ज़रत पीर सय्यद हाजी अली अकबर शाह जीलानी लूनी शरीफ़ वाले ने फ़रमाया था कि पीर स़ाह़ब पागारा की जमाअ़त अपने मुरशिद की दीवानी है इस फ़क़ीर को अगर ऐसी आ़शिक़ जमाअ़त मिल जाए तो पता चले कि फ़ैज़ किया होता है,मामारा शरीफ़ और बकीरा शरीफ़ के बुज़ुर्गों के मुरीद कसरत से पाए जाते हैं,और भर चोंडी शरीफ़ जो पीर स़ाहब पागारा की ही ख़ान्क़ाह की एक शाख़ है,उन के मुरीदीन भी इलाक़ा फलोदी वग़ैरा में रहते हैं बड़े नेक सुन्नतों के आ़मिल आज भी नमाज़ और ज़िक्र के दिलदादा हैं।

दोस्तो!यह दीनी इदारो के स्टेजों पर उ़लमा व मशाइख़ का ठाठें मारता हुआ समनदर कौन इस सर ज़मीन पर लाता है,इन बुज़ुर्गों की निगाह लाती है,क़ाइदे अहले सुन्नत ह़ज़रत अल्लामा पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मुद्दज़िल्लुहुल आ़ली को मौला तआ़ला सदा बाग़ व बहार रखे और इलाक़ा पर उन के साया करम को सदा क़ाइम व दाइम रखे,आप ने तमाम बुज़ुर्गों की जमाअ़तों को एक नज़र से देखा,सफ़र के महीने में ग़ौसुलआ़लमीन ह़ज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया मलतानी अ़लैहिर्रहमा की छठी शरीफ़ की मुह़ाफ़िल को क़ाइम रखे हुऐ हैं,ग्यारहवी शरीफ़ में ग्यारहवीं वाले पीर दस्तगीर अ़लैहिर्रहमा की मुह़ाफ़िल शुरू करवाऐं,और पीर स़ाहब पागारा के मुरीदीन को रजब शरीफ़ में जलसे करने की तरग़ीब दिलाई,इसी त़रह़ आप हर सिलसिला वालों को अपने मुरशिद



की याद मनाने में कोशाँ रहते हें जिस की बदौलत क़ौमे मुस्लिम में जा गिरती आई है,आज यह सूजा शरीफ़ के सालाना जलसा को देख लें यह इलाक़ा जलसों के लिए तरस्ता था,अब्दुस्समद फ़क़ीर ने आज से कई साल पहले अपने मुरशिद की बारगाह में एक अ़रीज़ा पेश किया था कि करे जीलानी जलसवाची थर खे सुधार यू : यानी मुरशिद करीम पीर सय्यद हाजी अली अकबर शाह जीलानी आप हमारे इलाक़े में आकर जलसों के ज़रीए उसे तरक़्क़ी पर लाऐं। आज जलसों पोस्टरों का कोई अन्दाज़ा नहीं कर सकता है,यह करम है मौलाए करीम जल्ल शानोहु का मगर दोस्तो!फजिर में न आना ख़्वाब ख़र गोश बुरी चीज़ है,ख़ुश फहमी भी अच्छी चीज़ नहीं है,हम दिल में सोचते हैं कि अब सुन्नियत को मेअ़राज मिल चुकी है मदारिस की बुहतान,मुह़ाफ़िल की कसरत से सुन्नियत ज़िन्दा हो चुकी है,बदअक़ीदगी मुर्दा हो गई है,नहीं नहीं हर गिज़ नहीं बद अक़ीदगा कमज़ोर नहीं हुए हैं,बल्कि वह लोग चुपके से,और बड़ी चाबुकदस्ती से काम कर रहे हैं,अगर हम हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहे तो नतीजा बहुत ख़त़रनाक है,हमें सिर्फ़ बुज़ुर्गों की निगाह बचा रहीहै,लिहाज़ा आप ह़ज़रत अपना ईमान बचाने के लिए और इ़ल्मी नूर को तरक़्क़ी देने के लिएए तहरीर सि़द्दीक़ी की यह दअ़्वत अपने दामन भर कर संभाल कर जाऐं,बदअ़क़ीदा लोगों की शरारत से बचें,अहले सुन्नत के उ़लमा का साथ दें,अपने इलाक़ा के मुदरसों,महफ़िलों को मज़बूत़ बनाऐं,जलसे जुलूस भी आ़म करें और सुन्नी मदारिस का जाल बिछाऐं,बातों से काम

नहीं बनेगा,यह सुन्नी इदारे आप की हर पुकार पर लब्बैक कहने को तैयार हैं,अल्लाह तआ़ला हम सब को सुन्नियत का काम करने की नेक तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और अहले सुन्नत के तमाम इदारों ख़ुसूसन जामिआ़ को दिन दूनी रात चोगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

**अलआ़जिज़ अ़ब्दुलर्रहीम अकबरी ख़ादिम जामिआ़ सिद्दीक़िया सूजा शरीफ़**

**जामिआ़ की ख़िदमत :**

1406 हिजरी से 1437 हिजरी तक की 31 साला मुद्दत में इदारे ने क़ौमे मुस्लिम को 250 उ़लमा व क़ुर्रा व हुफ़्फ़ाज़ की जमाअ़त अ़ता की जो मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मस़रूफ़ ख़िदमत है,इलावा अज़ीं पचासों मसाजिद की तौसीअ़ व मुरम्मत के सिवा उन को आबाद किया गया है। नीज़ सैकड़ों मदरसे क़ाइम किए गयें हैं जिन में से बाज़ दारुलउ़लूम की शकल इख़्तियार कर चुके हैं। जैसे फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा बालोतरा,फ़ैज़ जीलानी खारिया,हसनैन करीमैन बड़ानवा,फ़ैज़ान ग़ौसुलवरा जालोर,गुलशने मुस्तफ़ा कलर्रा शरीफ़,वग़ैरह उस के अ़लावा चोहटन तहसील के तक़रीबन 40 क़रिया जात में मजालिस मुहर्रम व रबीउ़लअव्वल व रबीउ़लआख़िर वग़ैरा का जाल बिछा दिया गया है और इलाक़ा रेगिस्तान के लिए तन्ज़ीम फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़ और फलोदी के लिए फ़ैज़ जीलानी हाफ़िज़ मिल्लत वैलफियर ट्रेस्ट तश्कील दी गई। जिन के तिहत तहसील रामसर व तहसील शिव व तहसील बाड़मेर व चोहटन नय्यड़ व मालाना मारावाड़ और फिलोदी वग़ैरा के दीनी उमूर यानी मदारिस व मसाजिद की आबाद



कारी व जलसे जुलूस क़ाइम हैं। बालोतरा में सुन्नी ऐजूकेश्नल सोसाइटी नामी ज़िलई तन्ज़ीमुलमदारिस क़ाइम है,जिन के तेहत आज तक 100 से ज़ाइद मदारिस व मकातिब खुल चुके हैं,शहर बाड़मेर में मुख़्तलफ़ कमेटियाँ,गोनागोव दीनी ख़िदमात अंजाम दे रही हैं और कुछ,बनास वागेड़(गुजरात)के इलावा और राजस्थान के कई इज़लाअ़ में भी हज़रत के मोअ़तक़िदीन, मुरीदीन तहरीक सिद्दीक़ी के मा तिहत यही काम बड़ी तन्द ही से कर रहे हैं। इदारा में एक मरकज़ी,तहरीक सिद्दीक़ी है जो उन इमाम तन्ज़ीमात की निगरानी और सर बराही करती है,नीज़ 50 के क़रीब ग़ैर आबाद मसाजिद जुमा के रोज़ तलबा को भेज कर आबाद करवाई जा चुकी हैं। शादी प्याह,तीजे चालीवीं जो ख़ुराफ़ात से भरे हुए थे,आज इदारा की बरकत से उन में मजालिस का नूर बर्स रहा है,मौलाए करीम का लाख लाख शुक्र है कि उस ने अपने हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े तूफ़ानों की ज़िद में जलाए गए,इस चिराग़ को सलामत व रौशन व ताबां रखा,जिस की ज़ियापाशियाँ आज एक आ़लिम को हैरत में डाले हुए हैं,मौला तआ़ला उसे सदा बाग़ व बहार रखे और ता क़ियामत यह गुलशन मुहम्मदी महकता रहे और उम्मते मुस्लिमा इस से मुस्तनीर व मुस्तफ़ीज़ होती रहे आमीन

**एरासे बुज़ुर्गाने दीन :**

जामिआ़ सिद्दीक़िया में चारों सुलासिल से मुन्सलिक त़लबा के लिए सलासिल अरबा के ख़त्म शरीफ़,शबे जुमा को हल्क़ए ज़िक्र के बाद पढ़े जाते हैं नीज़ मशहूर व मअ़रूफ़

मशाइख़ ख़्वाह किसी भी सिलसिला के हों उन की तारीख़ों में जामिआ़ के अन्दर उन के ऐ़रास मनाए जाते हैं,जिन में त़लबा व असातिज़ा नयाज़ जमा कर के बड़े ऐहतमाम से अपना ख़िराज अक़ीदत पेश करते हैं,उन ऐ़रास में हुज़ूर बानिए जामिआ़ की त़रफ़ से नयाज़ भी हुआ करती है,इन बुज़ुर्गों के नाम दर्ज ज़ैल हैं :

1.तीन ज़ी क़ादा को ह़ज़रत शाह सि़द्दीकुल्लाह मुलाकातयार अ़लैहिर्रहमा का उ़र्स होता है जिस में इफ़्तेताह़ बुख़ारी शरीफ़ का अ़ज़ीम जलसा रखा जाता है,जिस में दौरए ह़दीस के त़लबा की त़रफ़ की से नियाज़ हुआ करती है और पूरे इलाक़ा को दअ़वत पेश की जाती है।

2.10 मुहर्रमुलह़राम को सय्यदुश्शोहदा इमाम आली मक़ाम इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की याद में अ़ज़ीम जलसा होता है जिस में तीन चार इज़लाअ़ के लोग जमा होते हैं। हुज़ूर बानिए जामिआ़ की जानिब से नियाज़ होती है।

3.12रबीउन्नूर शरीफ़ को जश्ने ईद मीलादुन्नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और जुलूसे मुहम्मदी और ज़ियारत बाल मुबारक वग़ैरा तक़रीबात के इलावा रात भर सिंधी में कुछ ही ह़ज़रात मौलूद पढ़ते हैं,अ़लस्सुबह़ जुलूस मुहम्मद सूजा शरीफ़ के सिंधी मौलूद ख़्वाह ह़ज़रात होते हैं और इस तक़रीब में रात वाला लंगर सूजा शरीफ़ वालों की त़रफ़ से होता है और दिन को हुज़ूर बानिए जामिआ़ की त़रफ़ से नियाज़ होती है जिस में अ़क़ीदत भी अपनी ख़ुशी से



शामिल होते हैं।

4.11रबीउलग़ौस को अ़ज़ीम पैमाने पर ग्यारहवीं शरीफ़ मनाई जाती है जिस में पूरा इलाक़ा शरीक मज्लिस होता है,इस में भी रात की नियाज़ गाँव सूजा शरीफ़ वालों की त़रफ़ से और सुबह हुज़ूर बानिए जामिआ़ की त़रफ़ से नियाज़ हुआ करती है।

5.शअ़बान की15 और 21 की माबैन सालाना दस्तारबन्दी का जलसा और ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ और उ़र्से जीलानी वग़ैरा बड़े पैमाने पर होते हैं जिस में मुल्क व मिल्लत के मशाइख़ व उ़लमा के इलावा हज़ारों मोअ़तक़ेदीन जमा होते हैं यह जलसा इदारा शरीफ़ का सब से बड़ा जलसा होता है।

6.उन के इलावा चारों सलासुल के इन तमाम बुज़ुर्गों के उ़र्स जामिआ़ में मनाए जाते हैं जिन से इस इलाक़ा वालों की वाबस्तगी है,मसलन माह स़फ़रा में मलतान शरीफ़ के बुज़ुर्ग ह़ज़रत ग़ौसे बहाउद्दीन ज़करिया मलतानी और इमाम अहले सुन्नत सय्यदिना आ़ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी और इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी सय्यदिना शैख़ अहमद फ़ारूक़ी अ़लैहिमुर्रहमा के ऐ़रास और सिलसिला आ़लिया नक़्शबन्दिया के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रत शाह अ़ब्दुर्रहीम उ़र्फ़ कुब्बे धनी बादशाह मुलाकातयार अ़लैहिर्रहमा का उ़र्स मनाया जाता है,नीज़ इस माह में पीर पागारा का उ़र्स भी होता है,और मख़दूम सरवर नूह़ हालाई का उ़र्स मनाया जाता है यूँहीं यौम अबूबक्र सि़द्दीक़,ख़्वाजा हिन्दुलवली की छुट्टी,शबे मेअ़राज,शबे बरअत और अ़रफ़ात की रात वग़ैरा तक़रीबात में नाग़ा नहीं

होता,रबीउस्सानी की 27 तारीख़ को सिलसिला नक़्शबन्दिया की अ़ज़ीम हस्ती ह़ज़रत शाह मुहम्मद इस्हाक़ उ़र्फ़ पागारा बादशाह मुलाकातयारी अ़लैहिर्रहमा का उ़र्स होता और नियाज़ पकाई जाती है।

7.22 मुहर्रमुलह़राम को बानिए जामिआ़ लूनी शरीफ़, हुज़ूर महमूदुलऔलिया की याद में मह़फ़िल सजाई जाती है।

8.24 रजब शरीफ़ को मुह़द्दिसे राजस्थान उस्ताज़ुल असातिज़ा ह़ज़रत अल्लामा मौलाना अ़ब्दुलह़क़ स़ाहब डेम्बाई फ़ाज़िल मज़हरे इस्लाम,शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ अकबरिया लूनी शरीफ़ का उ़र्स होता है। सूजा शरीफ़ के बड़े हीराज फ़क़ीर के उ़र्स की तक़रीब मक़ामी लोग रखते हैं जिस में अहले इदारा शामिल रहते हैं।

**अस्माए क़दीम व मुदर्रिसीन व मुलाज़िमीन :**

1.मौलाना अल्हाज मुहम्मद क़ाज़ी अकबरी देरासर क़ारी,आ़लिम,फ़ाज़िल 1986,2,21, ता 1999,11,24 दसर मुदर्रिस।

2.मीयांजी अहमद सालारिया,सेड़वा,1,1,1989ता 31,1,1992 नाज़िरा मुदर्रिस।

3.मौलाना मुहिब अली अकबरी नवातिला,आ़लिम फ़ाज़िल 1,6,1990 ता 30,6,1990 नाज़िरा मुदर्रिस।

4.मियांजी उमीद अली वैसासर,सेड़वा 1,7,1990 ता 31,7,1990 नाज़िरा मुदर्रिस।

5.स़ाहिबा ख़ातून (सूजा शरीफ़)1,1,1991 ता 31,3, 2006 मुअ़ल्लिमा लेमदरसातुलबनात।

6.क़ारी अ़ब्दुलह़क़ अकबरी नवातिला,बाखासर 1,5,1991



ता 31,3,1991 नाज़िरा मुदर्रिस।

7.मौलाना अ़ब्दुल लत़ीफ़ कदनपुराता 26,10,1992 ता ता 31,1,1993 अ़रबी मुदर्रिस।

8.मौलाना मुज़फ़्फ़र अ़ली यूपी,आ़लिम फ़ाज़िल 1,5,,1994 ता 18,9,1994 अ़रबी मुदर्रिस।

9.मौलाना मुहम्मद सि़द्दीक़ अकबरी घिनाओ कच्छ 1,7,1994 ता 12,2,2002 19 अ़रबी मुदर्रिस।

10.क़ारी नूर मुहम्मद ज़ियाई रिज़वी घर या जैसलमीर 23,10,1995,ता18,11,1995 मुदर्रिस।

11.मौलाना मुहम्मद इस्माईल अकबरी खोखा10,2, 1996 ता 15,6,1996 अरबी मुदर्रिस।

12.हाफ़िज़ व क़ारी अ़ली मुहम्मद ज़ियाई गोहड़कातला 20,3,1996 ता 30,11,1998 मुदर्रिस ह़िफ़्ज़।

13.मौलाना मुहम्मद आ़रिफ़ सि़द्दीक़ी सूजा शरीफ़ 28,2,1997 ता 24,11,1999 नाज़िरा मुदर्रिस।

14.मौलाना नूरुद्दीन ज़ियाई सरोप कातला 28,2,1997 ता 1,5,1997 अ़रबी मुदर्रिस।

15.मौलाना मुहम्मद अय्यूब पांधी का पारा 28,2,1999 ता 15,9,2001 अरबी मुदर्रिस।

16.ह़ाफ़िज़ मुहम्मद हयात सि़द्दीक़ी पांधी कापार,28,2,1999 ता 15,9,2006 मुदर्रिस ह़िफ्ज़।

17.मौलाना नवाज़ अ़ली सि़द्दीक़ी सूजा शरीफ़ 17,1,2000 ता 13,11,2000 नाज़िरा मुदर्रिस।

18.मौलाना आ़बिद अ़ली सि़द्दीक़ी सीहानिया 28,1,2000

ता 28,12,2000 अ़रीब मुदर्रिस।

19.मौलाना मुहम्मद अय्यूब सिद़्दीक़ी सीहानिया 28,1,2000 ता 30,9,2005 अ़रबी मुदर्रिसस।

20.मौलाना मुहम्मद हाशिम मिस्बाही ———ता ———अ़रबी मुदर्रिस

21.मौलाना मुबारक हुसैन सिद़्दीक़ी सीनापुर कच्छ 20,1,2001 ता 6,10,2004 नाज़िरा मुदर्रिस।

22.मौलाना अ़ब्दुल्लाह सिद़्दीक़ी हरोडा कच्छ 1,2,2001 ता 6,10,2004 अरबी मुदर्रिस।

23.मौलाला लअ़ल मुहम्मद सिद़्दीक़ी देरासर 23,6,2001 ता 15,9,2006 अरबी मुदर्रिस।

24.मौलाना निज़ामुद्दीन सिद़्दीक़ी,देरासर13,3,2004 ता 14,6,2004 नाज़िरा मुदर्रिसस।

25.मौलाना नज़र अ़ली सिद़्दीक़ी सूजा शरीफ़ 18,5,2005ता 30,9,2005 नाज़िरा मुदर्रिस

26.हाफ़िज़ उवैस सिद़्दीक़ी खोखा 221,11,2005 ता 30,4,2007 ताज़िरा मुदर्रिस।

27.हाफ़िज़ ख़ुरशीद कुम्हारी,नागोर 13,6,2006 ता 26,8,2006 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

28.हाफिज़ अ़लीमुद्दीन सिद़्दीक़ी,ख़लीफ़ा की बावड़ी 9,11,2006 ता 22,8,2014 नाज़िरा मुदर्रिस

29.हाफ़िज़ मुईनुद्दीन सरोप कातला 14,11,2006 ता 31,12,2006 नाज़िरा मुदर्रिस।

30.हाफ़िज़ क़मरुद्दीन सिद़्दीक़ी गो पड़ी 19,11,2006 ता



30,9,2009 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

31.मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद सिद़्दीक़ी पांधी कापार 1,11,2007 ता 19,12,2007 नाज़िरा मुदर्रिस।

32.मौलाना इरफ़ान अश्फ़ाक़ी,टाईस मेवात 1,12,2007 ता 31,7,2009 अरबी मुदर्रिस।

33.क़ारी मुहम्मद स़ाहिब दोधोड़ा1,11,2008 ता 30,4,2009 नाज़िरा मुदर्रिस।

34.मौलाना शरीफ़ुल हक़ अम्जदी शीरानी आबाद 6,10,2009 ता 5,11,2010 अरबी मुदर्रिस।

35.हाफ़िज़ ग़ुलाम मुहम्मद समो की धार्नी 6,10,2009 ता 5,11,2010 मुदर्रिस हिफ्ज़।

36.क़ारी अजमल नूरी 12,13,2010 ता 11,11,2010 क़ारी दर्जा करअत।

37.मौलाना ख़ान मुहम्मद सिद़्दीक़ी बामनूर 6,9,2010 ता 12,7,2012 अ़रबी मुदर्रिस

38.हाफ़िज़ सईद फ़ैज़ानी,किशन गढ़ 27,12,2010 ता 25,7,2011 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

39.हाफ़िज़ मुनाज़िर हुसैन फैज़ानी अलवर 11,9,2011 ता 21,11,2011 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

40.मौलाना ग़ुलाम हैदर सिद़्दीक़ी आलोकातला 14,92011 ता 12,7,2012 नाज़िरा मुदर्रिस।

41.मौलाना अहमद अ़ली सिद़्दीक़ी सूजा शरीफ़ 3,9, 2012ता 11,8,2014 नाज़िरा मुदर्रिस।

42.हाफ़िज़ बिलाल अहमद नक्शबन्दी चारनाई 9,9,2012

ता 10,6,2015 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

43.मौलाना मुहम्मद क़ासिम सिद्दीक़ी हर पालिया 23,8,2013 ता 22,1,2014 नाज़िरा मुदर्रिस

44.मौलाना निज़ामुद्दीन सिद्दीक़ी देरासर 12,8,2014 ता 31,5,2016 नाज़िरा मुदर्रिस

45.मौलाना मुहम्मद उर्स़ सिद्दीक़ी दबड़ी 7,8,2014 ता 10,6,2015 नाज़िरा मुदर्रिस।

46.मौलाना कबीर सिद्दीक़ी कोलियाना 17,8,2014 ता 10,6,2015 नाज़िरा मुदर्रिस।

47.हाफ़िज़ जलालुद्दीन नक्शबन्दी चारनाई 17,8,2014 ता 20,8,2015 मुदर्रिस क़रअत व हिफ़्ज़

48.मौलाना नायाब अहमद घोसी 1,9,2014 ता 1,10,2014 अरबी मुदर्रिस।

49.मौलाना अब्दुर्रसूल सिद्दीक़ी रायपुरा 26,8,2015 ता 30,11,2015 नाज़िरा मुदर्रिस

50.हाफ़िज़ ग़ुलाम फ़ारूक़ सिद्दीक़,मोखाब 18,9,2015 ता 31,5,2016 मुदर्रिस हिफ़्ज़

51.क़ारी ग़यासुद्दीन झाड़खन्ड 15,2,2016 ता 27,3,2016 मुदर्रिस हिफ़्ज़ व क़रअत

52.हाफ़िज़ इरफ़ान अ़त्तारी जोधपुर 4,10,2016 ता 12,2,2017 मुदर्रिस हिफ़्ज़।

**मास्टर स्टाफ़ व दीगर मुलाज़िमीन :**

53.मास्टर ख़ैर मुहम्मद गंगाला 1,4,1992 ता 20,3,1993 आफ़िस सिक्रेट्री।



54.मास्टर अ़ब्दुर्रहीम नोहरी,पांधी कानवाँ मास्टर।

55.मास्टर मुहम्मद हसन हरपालिया 23,10,11995 ता31,1,1996 मास्टर

56.मास्टर मिस्री नोहड़ी ख़ानियानी23,10,11995 ता31,1,1996 मास्टर

57.मास्टर अली मुहम्मद मठ्ठे कातला 22,7,2001 ता8,9,2001मास्टर

58.मास्टर मुहम्मद त़ाहिर सहता मुरीद कापार1,2, 2002 ता 25,2,2008 मास्टर

59.मास्टर अब्दुलजब्बार गढाली,1,9,2002 ता 30,10,2002 मास्टर।

60.मास्टर शमसुद्दीन ख़लीफ़ा की बावड़ी1,11,2002 ता 30,6,2004 मास्टर

61.मास्टर शाकिर समीजा सीनहार1,8,2007 ता31,1,2008 मास्टर

62.मास्टर दिलबर हुसैन कोंडा11,11,2008 ता 30,4,2009 मास्टर

63.नरीश कुमार चौधरी 22,11,2008 ता 28,1,2010 मास्टर

64.मास्टर इलहाना ख़ाँ देरासर 3,5,2010 ता 22,11,2011 मास्टर

65.मास्टर यासीन ख़ाँ बिलोच पांडरवाली 10,6,2010 ता 30.11.2010 मास्टर

66.मास्टर शफ़ीअ़ मुहम्मद भीनयाड़ 15,6,2010 ता

30,7,2010 मास्टर

67.मास्टर मुहम्मद शकील रसूडा(सीकर)12,12,2010 ता 13,3,2012मास्टर

68.मास्टर सरफ़राज़(सीकर)19.9.2011 ता 12.7.2012 मास्टर

69.मास्टर रफ़ीक़ कोलियाना 1,1,2012 ता 12,7,2012 मास्टर

70.मास्टर हुशामुद्दीन गंगला22,9,2012 ता 31,12,2012 मास्टर

71.रुख़साना ख़ातून सूजा शरीफ़ 1,11,2012ता1,5,2015 मेडम

72.मास्टर शैख़ मुहम्मद धनाओ 1,12,2014 ता 1,7,2015 मास्टर

73.मास्टर जमाल ख़ान मवैलासाता 1,9,2015 ता 1,11,2016 मास्टर

74.मास्टर अ़ब्दुश्शुकूर समीजाडोंगरी ,312,2015 ता 28,4,2016 मास्टर

75.मास्टर अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ जौनीजा,राह 1,5,2011 ता 30,6,2013 कम्पयूटर मास्टर

76.सावन ख़ान समा नवातिला 1,1,2015 ता 11,6,2015 कम्पयूटर मास्टर

77.मास्टर महबूब अ़ली,बालोतरा 1,8,2016 ता 1,12,2016 कम्पयूटर मास्टर

78.मास्टर तय्यब ख़ान तेली,धोरीमना 1,8,2016 ता 31,10,2016 कम्पयूटर मास्टर



79.मिस्तरी मुहम्मद अली वनीझासर11,1,2001 ता 21,2,2002 लाइट नगराँ

80.मुहम्मद उस्मान मोहाड़ी कच्छ गुजरात 1,2,2002 ता 9,4,2007 मिस्तरी

81.मौलवी अल्लाह बेचाया सीहानिया 11,10,2002 ता 31,5,2003 मिस्तरी

82.अ़ब्दुलहलीम नवातिला 13,2,2006 ता 7,3,2007 चपरासी

83.ग़ुलाम नबी समा रत्ते कातला 1,4,1999 ता 31,10,1999 चौकीदार

84.उम्मीद अली समा नवातिला 1,9,2002 ता 30,10,2002 चौकीदार

85.क़ारी जमशेद आ़लम समा फ़क़ीरों कातला 1,7,2012 ता31,5,2014 चौकीदार

86.क़ारी ग़ुलाम जीलानी,पांधी कापार 2,3,1999 ता 31,10,2008 टेलर मास्टर

87.शब्बीर ख़ान समीजा अ़ब्दुर्रहीम कातला 1,2,1998 ता 31,9,1999 चराहा।

87.मुहम्मद सुलैमान सालारिया 1,7,2001 ता 4,11,2001 चरवाहा।

88.लुक़मान अ़ली,रहोमा पांधी कापार 16,10,2004 ता 15,1,2005 खेती नगराँ

89.मुहम्मद यूसुफ़ बोनहार 1,1,2002 ता 13,5,2005 चरवाहा

90.उभाया ख़ाँ समा नवातिला 10,8,2002 ता 6,2,2003

खेत नगराँ।

बावरची स्टाफ़ :

91.मरहूम मुहम्मद क़ाज़ी ख़ान बलोच वीनीझासर 11,3,1993 ता वफ़ात:20,11,2009 बावरची

92.समानी ख़ातून तेली 15,7,1999 ता 14,6,2001 बावरची

93.ज़ुलैख़ा ख़ातून वीनझासर 10,1,2002 ता 100,9,2003 बावरची

94.परिया ख़ान समा सरोपकातला 6,8,2002 ता1,3, 2003बावरची

95.नवाब अ़ली समा नवातिला 5,12,2005 ता 30, 6, 2006बावरची।

96.ग़ुलाम क़ादिर समा नवातिला 28,3,2006 ता30,6, 2006 बावरची

97.मुहम्मद हसन आरीसर देरासर 1,7,2006ता 22,6,20088 बावरची

98.कबूल दर्स सूजा शरीफ़ 1,11,2008 ता 31,8,2013 बावरची

99.मिस्री दिल,बोनहार 1,11,2008 ता19,10,2009 बावरची

100.तुराब अली सालारिया 13,6,2009 ता 1,10,2014 बावरची

101.मुरीद ख़ान समा नवातिला 11,10,2009 ता 30,



6,2010 बावरची

102.खबड़ ख़ाँन राजड़ देरासर 16,10,2209 ता 5,3,2010 बावरची

103.मांधल राजड़,तिसंगड़ी 6,10,2009 ता 25,11,2009 बावरची

104.सौमार ख़ान दिल बोनहार 16,10,2009ता 30, 10,2010 बावरची

105.सोहराब ख़ान नोहड़ी,बांधी कानवाँ 12,12,2009 ता 6,1,2010 बावरची

106.अ़ब्दुलबाक़ी समा सरायूँ कातला 29,3,2010 ता 1,6,2015 बावरची

107.रमज़ान मुन्द्रा कच्छ 25,9,2010 ता 21,2,2011 बावरची

108.शेर मुहम्मद नोहड़ी सीनहार 26,1,2011 ता 31,5,2012 बावरची

109.अ़ब्दुर्रहमान समा वरनिहार 1,4,2011 ता25,7, 2011 बावरची

110.अब्दुलग़फ़ूर विंडी कच्छ 15,9,2011 ता 2,2,2012 बावरची

111.अब्दुर्रसूल समीजा हरपालिया 14,9,2012 ता 8,10,2012 बावरची

112.ग़ुलाम अली सालारिया 1,9,2013 ता 14,6,2014 बावरचची

113.भूरा ख़ान सालारिया 1,9,2013 ता 10,10,2013

बावरची

114.मुहम्मद शरीफ़ बड़नवा 1,8,2015 ता 7,1,2016 बावरची

115.ऐहसान झड़पा 1,1,2016ता1,10,2016 चपरासी

116.मुहम्मद रफ़ीक़ बड़नवा 21,11,2016ता4,2,2017 चपरासी।

117.मुहम्मद अ़ली सालारिया20,9,2011 ता 31,5,2011 स्टोर रूम निगराँ

118.मुश्ताक़ नहड़ी सीनहार 1,1,2012 ता 10,4,2013 स्टोल रूम निगराँ

119.हबीबुल्लाह ख़ैरालू 15,7,20122 ता 3,10,2012 चपरासी

**ड्राइवर स्टाफ़ :**

120.मुहम्मद सौमार जोनीजा छाजाला 1,2,2000 ता 28,2,2010 ड्राईवर

121.शौकत अली बेकानीर 2,8,2000 ता 15,10,2000 ड्राईवर

122.अब्दुलश्शुकूर नोहड़ी आलमसर 1,10,2000 ता 15,5,2001 ड्राईवर।

123.इज़्ज़त ख़ाँ बलोच,सिगरवा 1,7,2001 ता 20,5, 2002 ड्राईवर

124.जीवन ख़ान गलाल,भलगाम11,6,,2002 ता 9.6, 2003 ड्राईवर

125.मुहम्मद रफ़ीक़ हिजाम डीम्बा 19,4,2003ता6,7,



2003 ड्राईवर

126.मुहम्मद सुलत़ान नवातिला बाखासर 2,1,2004 ता 17,6,2005 ड्राईवर

127.मुहम्मद इलयास,रहोमा,रमज़ान की कफ़न 18,6, 2005 ता 17,6,2006 ड्राईवर

128.अब्दुर्रहीम नाजया सौरा चन्द 12,2,2006 ता 7,3, 2007 ड्राईवर

129.लैला राम भील सूजा शरीफ़ 23,11,2009 ता30,4, 2010 ड्राईवर

130.कामिल ख़ान हुजाम डीम्बा 8,2,2010 ता 8,1, 2011ड्राईवर

131.तुराब अली दर्स सूजा शरीफ़ 1,5,2010 ता 31,8, 2013 ड्राईवर

132.मुहम्मद रमज़ान दिल,बोनहार 1,,4,2012 ता 30,6,2013 ड्राईवर

133.हिन्दाल ख़ान समा नवातिला 1,11,2012 ता 14, 1,2015 ड्राईवर

134.मुनीर ख़ान,साउंड खचरखिड़ी 1,9,2013 ता 31,11, 2013 ड्राईवर

135.अब्दुर्रऊफ़ साउंड खचर खिड़ी 1,9,2001 ता 31,10,2013 ड्राईवर

136.कुरबान अली दर्स सूजा शरीफ़ 18,12,2013 ता 16,2,2016 ड्राईवर

**मुस्तक़्बिल के अज़ाइम :**

★ जामिआ़ उम्मेहातुलमोमिनीन

★ फेम्ली कवार्टर की तअ़मीर

★ मेहमान ख़ाना की तअ़मीर

★ मुदरसतुस्सिबयान की तअ़मीर

★ दारुत्तस़्नीफ़ व लाइब्रेरी की मुस्तकि़ल तअ़मीर

**जामिआ़ का तआ़वुन कैसे करें :**

★किसी एक मुदर्रिस की तन्ख़्वाह का ज़िम्मा ले लें।

★एक या चन्द बच्चों के ख़ुर्द नोश का इन्तेज़ाम करा दें।

★ सिद्दीक़ी लाइब्रेरी को फ़तावा,अहादीस,या तफ़ासीर के कुतुब दिल दें।

★ इदारा का अपने ह़ल्क़ा असर में तआ़रुफ़ करायें और उन को ला कर दिखाऐं।

★ अपने कार आमद व मुफ़ीद मश्वरों से नवाज़ें।

★ इदारा की तरक़्क़ी व ह़िफ़ाज़त के लिए बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ करते रहें।

★ इदारा से शाय होने वाली किताबों को अपने मरहूमीन के नाम ईस़ाले सवाब की नियत से ख़र्चा से छप्वा कर मुफ़्त तक़्सीम करें।

★ तअ़मीरात का सिलसिला भी जारी है अपनी त़रफ़ से हिस़्स़ा लें।



★ साल में एक दो मर्तबा पूरे इदारा की दअ़वत करें।

★ इदारा से छपने वाली किताबों के ख़ुद ख़रीदार बनें और दूसरों को बनाऐं

★ अपने बच्चों को तअ़लीम के लिए इदारा में दाख़ला दिलाऐं।

★ उस के सालाना जलसा में अपनी शिरकत लाज़मी समझें।

**जामिआ़ के तहत चल रहीं तन्ज़ीमात :**

**तहरीक़े सिद्दीक़ी** : जिस के ज़िम्मे मज़कूरा ज़ैल तन्ज़ीमात की निगरानी है।

**तन्ज़ीम फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़** : यह इलाक़ा थर,खावड़ और नय्यड़ में बेरूनी ख़िदमात के लिए है।

सुन्नी ऐजूकेश्नल सोसाईटी बालोतरा : यह जोधपुरा डोवीज़न में मदारिस खोलने के लिए तन्ज़ीम है।

फ़ैज़ जीलानी तन्ज़ीम व ह़ाफ़िज़ मिल्लत व वेलफ़र ट्रेस्ट : यइ इलाक़ा फ़लोदी के लिए है।

शहर बाड़मेर और जोधपुर और कच्छ में मुख़्तलिफ़ कमेटियाँ दीनी ख़िदमात के लिए क़ाइम हैं।

**फ़ैज़ सिद्दीक़िया सीनयर सिकन्डरी स्कूल का मुख़्तसर तआ़रुफ़ :**

मग़्रिबी राजस्थान जिसे थर या थार कहा जाता है इस इलाक़ा में दीनी व दुनियावी दोनों तअ़लीम के लिए त़लबा को बड़ी मुशकिलात का सामना था,सूजा शरीफ़ में जा मअ़ सिद्दीक़िया की हुज़ूर बानिए जामिआ़ के हाथों 1406 में निशात सानिया होने के बाद दीनी बहार आई जैसे ही उस इदारा ने

अपना सर उभारा और लोगों की नज़रें इधर उधर हुऐं एक माहौल बना और दीगर मदारिस भी अपने पाँव पर खड़े हो गए और दीनी तअ़लीम की ज़रूरत पूरी होने लगी मगर दुनियावी तअ़लीम में बच्चों के लिए कई मुशकिलात शुद राह बनी हुई थी,अगर कहीं बारहवीं तक स्कूल थी तो हास्टल का इन्तेज़ाम न था या प्राइवेट स्कूल थी तो फीस भारी होने की वजह से ख़ातिर ख़्वाह फ़ायदा उठाना मुश्किल था। उन वजूह को सामने रखते हुए हुज़ूर बानिए जामिअ़ा क़ाइदे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा अल्हाज पीर सय्यद ग़ुलाम हुसैन शाह जीलानी मद्दज़िल्लुहुल आ़ली ने नई नसल की अ़स्री तअ़लीम का भी अपने करम से बेड़ा उठाया और जामिअ़ा ही में आप ने पाँचवीं तक मन्ज़ूरी ली फिर वह अठवीं बादोहु दस्वीं हुई अब चन्द सालों से जामिअ़ा में चल रही स्कूल बारहवीं तक है जिस में गवर्मेन्ट का मरूजा कोर्स मुकम्मल पढ़ाया जाता है और हॉस्टल का बेहतरीन इन्तेज़ाम फ़रमाया कि शायद ही पूरे हिन्दुस्तान के किसी इदारे या स्कूल में हो,इस पर मुस्तज़ाद यह कि कोई फीस नहीं सिर्फ़ हास्टल की सफ़ाई और बिस्तर के कोई दोहज़ार बच्चीस सौ रुपये साल भर के लिए जाते हैं जिसे उसकी स़फ़ाई पर ख़र्च किया जाता है ता कि त़लबा में फोहड़ पन न आए, आज बेहम्देही तआ़ला एक बच्चा दीनी तअ़लीम में फ़ज़ीलत को मुकम्मल करता है तो साथ ही साथ वह बारहवीं भी पास कर लेता है,वह भी बिला ख़र्च व फीस के,इस लिए तमाम ह़ज़रात से इल्तिमास है कि ग़रीब व नादिर त़लबा के लिए किए गए उन इन्तेज़ामात में



बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लें और ख़ूब माली तआ़वुन भी फ़रमाऐं और लोगों को अपने हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के स़दक़े दारैन की सआ़दतों के साथ अ़क़ीदा अहले सुन्नत पर गामज़न रखे और आप के जान व माल और ईमान में नीज़ कारोबार व इज़्ज़त में ख़ूब बरकतें अ़त़ा फ़रमाए आमीन बजाहे सय्यदुल मुरसलीन अ़लैहित्तहया वत्तस्लीम।

**एक अहम पैग़ाम बरादराने मिल्लत के नाम :**

बरादराने अहले सुन्नत ! आप क महबूब दीनी इदारा जामिअ़ा सि़द्दीकि़या सूजा शरीफ़ आप की दीनी व दुनियावी स़लाह़ व फ़लाह़ के अ़ज़ाइम पर मुश्तमिल है उसी वजह से उस का दाइरा कार रोज़ बरोज़ वसीअ़ तर होता जा रहा है, लिहाज़ा तमाम मुख़ीरान क़ौम व मिल्लत से मुअद्दबना इल्तिमास है कि हर वक़्त बिलख़ुसूस़ रमज़ानुल मुबारक में अपने स़दक़ात व ख़ैरात और दीगर अ़त़यात से नवाज़ें।

इदारा